वर्ष : ५९ अंक : ७ अप्रेल, २०१४ मूल्य : चालीस रुपये

अणुव्रत

अहिंसक-नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

चुनाव-शुद्धि अंक

- वर्ण व्यवस्था कर्म से हो
- लोकतंत्र और राष्ट्रीय एकता
- अपने अहं के विजेता महावीर
- जनतंत्र की स्वस्थता का आधार चुनाव-शुद्धि
- चुनाव से पहले और बाद में भी कुछ चुनें

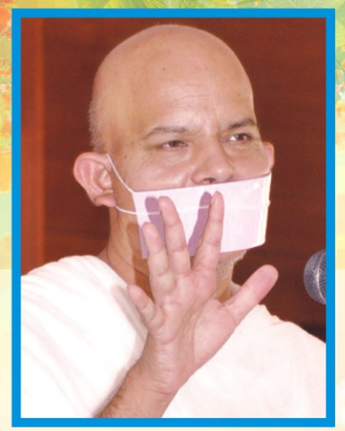

लोकसभा चुनाव-2014

प्रत्याशियों और मतदाताओं से
अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की

अपील

चुनाव लोकतंत्र की रीढ़ है। जिस प्रकार शरीर की स्वस्थता के लिए रीढ़ का स्वस्थ होना आवश्यक है, इसी प्रकार लोकतंत्र की स्वस्थता के लिए चुनाव-प्रणाली का भी स्वस्थ होना आवश्यक है। लोकसभा लोकतंत्र का मंदिर होता है। उसमें पहुंचने वाले सांसद कुशल एवं चरित्रसम्पन्न हों, यह अपेक्षा है। भारत की लोकसभा का चुनाव हमारे सामने है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का सम्प्रवर्तन किया। उसमें प्रत्याशी और मतदाता के लिए भी अणुव्रत की आचार संहिता है -

प्रत्याशी अणुव्रत

1. मैं प्रलोभन और भय से मत प्राप्त नहीं करूंगा।
2. मैं प्रतिपक्षी प्रत्याशी का चरित्र हनन नहीं करूंगा।
3. मैं मतदान और मतगणना के समय अवैध तरीकों को काम में नहीं लूंगा।

मतदाता अणुव्रत

1. मैं प्रलोभन और भय से मतदान नहीं करूंगा।
2. मैं जाली नाम से मतदान नहीं करूंगा।

देश के प्रत्याशियों और मतदाताओं से हमारा अनुरोध है कि वे लोकसभा के चुनाव में अणुव्रत की आचार संहिता को अपने व्यवहार में प्रयुक्त करने का प्रयास करें।

श्रीगंगानगर (राजस्थान)
16, मार्च, 2014

आचार्य महाश्रमण

क्या आप
आचार्य तुलसी
को याद करते हैं...
क्यों?

उनकी कौनसी वो बात थी जो उन्होंने आपसे कही।

- **जो दिल को छू गयी।**
- **जिससे आपको शक्ति मिल रही है।**

बतायें हमें वो बात।
हम लाखों तक पहुंचायेंगे।

आपके संस्मरण को आचार्य तुलसी की जन्मशती के अवसर पर प्रकाशित किये जा रहे

तुलसी
स्मृति ग्रंथ

में स्थान मिल सकता है।

इतिहास का संकलन करने में हमें अपना सहयोग दें।
आप अपना संस्मरण अधिकतम 700-800 शब्दों में लिखकर हमें भेज सकते हैं,
वीडियो/ऑडियो में रिकार्ड करके भेज सकते हैं या tulsismritigranth@gmail.com पर ई-मेल भी कर सकते हैं।

आपके लेख के प्रकाशन/अप्रकाशन और भाषा शुद्धि व लेखन शैली में सुधार/परिवर्तन का सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकीय समिति के पास निहित होगा।

तुलसी
आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह 2013 - 2014

प्रधान सम्पादक
तुलसी स्मृति ग्रंथ कार्यालय
2, मैसूर हाउस, जैकब रोड, सिविल लाइन्स, जयपुर 302 006
फोन:0141-5111111, 5102502 ई-मेल : tulsismritigranth@gmail.com

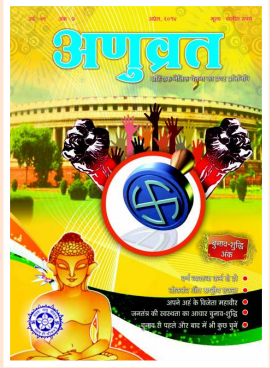

अणुव्रत मासिक

अहिंसक-नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

o"k% 59 n vad% 7 n vi\y] 2014

सम्पादक
महेन्द्र जैन

सह-सम्पादक
डॉ. उषा गोयल

प्रबन्ध सम्पादक
प्रदीप संचेती

सम्पर्क सूत्र

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली–110002
दूरभाष : (011) 23233345, फैक्स : 23239963
e-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratmahasamiti.org

सम्पादक-सम्पर्क

'अर्हम्', 118 कैलाशपुरी
टोंक रोड, जयपुर-302018
मो.: 09828158454
e-mail : mahendrajain283@gmail.com

सदस्यता शुल्क :

		भारत में	विदेश में
वार्षिक	:	रु. 400	US $ 30
त्रैवार्षिक	:	रु. 1000	US $ 75
दस वार्षिक	:	रु. 3500	
पत्रिका-योगक्षेम	:	रु. 5100	

राशि कैनरा बैंक की स्थानीय शाखा में खाता संख्या : 0158101010750 में सीधे जमा करा सकते हैं। हमारा RTGS Code No. CNRB0000158 है।

bl vd es--

शाश्वत-स्वर

4 - भगवान महावीर ने कहा...

तुलसी उवाच

5 - चुनाव-शुद्धि

दिशा-बोध

– वर्ण व्यवस्था कर्म से हो
आचार्य महाश्रमण 6

जीवन-दर्शन

– लोकतंत्र और राष्ट्रीय एकता
आचार्य महाप्रज्ञ 9

पर्व-चिन्तन

– The Basis of Democracy
Mahavira's Philosophy *
Acharya Tulsi 12

– लोककल्याणकारी राज्य और महावीर की जीवन-दृष्टि
डॉ. महेन्द्रसागर प्रचण्डिया 14

– तीर्थंकर महावीर आज के परिप्रेक्ष्य में
डॉ. कुसुम लूनिया 16

–अपने अहं के विजेता महावीर
डॉ. एस. राधाकृष्णन 17

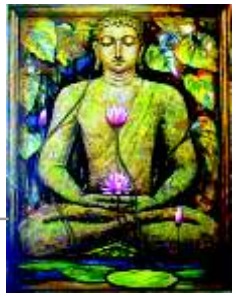

–अहिंसक क्रांति के पुरोधा भगवान महावीर
प्रो. सुमेरचन्द जैन 20

–भारतीय वर्ष का नया दिन
द्वारकेश भारद्वाज 47

तुलसी-गाथा

–अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी एवं शैक्षिक क्रांति
प्रो. चांदमल कर्णावट 22

–प्रेरणा का अमर पाथेय गुरुदेव तुलसी का सृजन-शतक
डॉ. अलका सांखला 25

चुनाव मंथन

– जनतंत्र की स्वस्थता का आधार चुनाव-शुद्धि
अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी 27

–लोकतंत्र, चुनाव और अणुव्रत
अणुव्रत प्राध्यापक मुनि सुखलाल 29

–अच्छे जनप्रतिनिधि से ही अच्छी व्यवस्था
आचार्य दयानन्द भार्गव 31

–चुनाव-शुद्धि कष्टसाध्य है, असंभव नहीं
आलोक भट्टाचाय 33

–चुनाव से पहले और बाद में भी कुछ चुन
प्रो. प्रेम मोहन लखोटिया 35

–आचरण-शुद्धि ही हो चुनाव का आधार
जस्टिस पानाचन्द जैन 37

– देशहित या सिर्फ स्वार्थ?
प्रो. पुष्पेश पन्त 39

– वोट-बैंक की राजनीति भ्रष्टाचार का आधार
डॉ. हीरालाल छाजेड़ (जैन) 40

– निर्वाचन-व्यवस्था : समस्या और समाधान
प्रो. योगेश चन्द्र शमा 42

स्वास्थ्य

– आहार संयम आरोग्य का प्रबल आधार
साध्वी जयमाला 48

सृजन

– ''अणुव्रत का दीवटः नैतिकता की बाती'' एक अनुशीलन
जतनलाल रामपुरिया 51

व्यंग्य

– अपनी बारी का इन्तजार करें
जसविंदर शमा 53

–मेरा मोबाइलकुमार
पूरन सरमा 54

अणुव्रत का गीत

अब तो अपनी जन-नायकों! रफ्तार मोड़ दो,
बुरा व्यवहार छोड़ दो, भ्रष्टाचार छोड़ दो।।

कितने देकर आश्वासन, पाते हो तुम यह शासन,
शासक बन शोषक के संस्कार छोड़ दो।।

सेवा का वज्र-कठिन व्रत, लेकर धन भरने में रत,
गुप-चुप रिश्वत का कारोबार छोड़ दो।।

सुख-सुविधा के अभ्यासी, बंगलों में बने विलासी,
शाही इस शान से अब प्यार छोड़ दो।।

वह अपना अुमक पराया, ममता की है यह माया,
अब इस दलबंदी की दीवार तोड़ दो।।

बातों में सत्य-अहिंसा, वर्तमान में कोरी हिंसा,
आपस की बेमतलब तकरार छोड़ दो।।

जीवन है कितना बोझिल, जनहित आंखों से ओझिल,
केवल अपना बेकार प्रचार छोड़ दो।।

भारत के कर्णधारों! खुद का आचार सुधारो,
'तुलसी' अणुव्रत से अपना तार जोड़ दो।।

कथा

– पर्तो का शून्य *भगवान अटलानी* 56

बाल-वाटिका

–चुनावी चुस्कियां *डॉ. जगदीश चन्द्र शर्मा* 41

–यज्ञ सद्बुद्धि का प्रयत्न चुनाव शुद्धि का
इकराम राजस्थानी 46

काव्य

–मतदान कीजिए
अब्दुल जब्बार 11

–अणुव्रत नियमों का गीत
रमेश धोका 48

–अणुव्रत और लोकतंत्र
रजनीकांत शुक्ल 55

निरंतर

– अणुव्रत गीत 2
– संपादकीय 3
– झांकी हिन्दुस्तान की 24
– राष्ट्र-चिंतन 45
– गति-प्रगति 61-67
– अध्यक्ष की कलम से 68

आवरण पृष्ठ :
: : संदीप : :

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से सम्पादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

चुनाव-शुद्धि ही लोककल्याण का राजपथ...

लोकतंत्र सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था है। अच्छे-बुरे लोगों की पहचान की उत्तम पद्धति है। एक साधना है, जिसको राष्ट्र के नागरिक पूरी तन्मयता से सिद्ध करते हैं, चुनाव के यज्ञ में, अपनी भावनाओं की आहुति देकर। चुनाव लोकतंत्र के प्राण हैं, आधार हैं, साधन हैं। साधन शुद्ध होंगे तभी साध्य कल्याणकारी होगा। मनीषी बार-बार यही कहते हैं–जैसा साधन वैसा साध्य।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्रात्मक गणराज्य है। विश्व के 15 प्रतिशत लोग देश के शासन की बागडोर थामने के लिए अपने प्रतिनिधि चुनते हैं। यह देशवासियों के लिए अत्यन्त गौरव की बात है; किन्तु इस विश्वास और कठोर साधना के फलस्वरूप जो लोकतंत्र हमारे सामने उपस्थित है, उसको पाकर हताशा में बार-बार हमारा सिर झुक जाता है। हमारे नेता राजाओं की तरह काम कर रहे हैं। गरीबी मिटती नहीं, जातिवाद का जहर बढ़ता जा रहा है। कार्यपालिका और न्यायपालिका निस्तेज हैं, विधायिका में वंशवाद पनप रहा है। रोजी-रोटी सामान्यजन से दूर भाग रही है। चारों ओर लूट मची है, भ्रष्टाचार और घोटालों के अम्बार लगे हैं। अत्याचार, अनाचार की बाढ़ है। कारण सब जानते हैं–हमारे प्रतिनिधि योग्य नहीं हैं। उनको देश की नहीं बस अपनी कुर्सी और अपनी सन्तति की चिन्ता अधिक है।

संविधान में साफ-सुथरे चुनाव हेतु के पर्याप्त प्रावधान हैं, पर उन्हें लागू नहीं किया जा सका है। सत्तारूढ़ दल के साथ-साथ अन्य राजनैतिक दल भी चुनावों में शुद्धता नहीं लाना चाहते, उनकी नीयत ही खोटी है, क्योंकि जिन अपराधी तत्त्वों के समर्थन पर वे सत्ता में बैठे हैं, उनके विरुद्ध कानून कैसे पास करें? वैसे भी जब 30 प्रतिशत अपराधी और दागी जन-प्रतिनिधि विधायिका में बैठे हों तो वे अपने हितों को कुचलने वाले कानून क्यों बनने देंगे? सरकार की इच्छा-शक्ति तो उनके इशारों पर चलती है।

सोलहवीं लोकसभा के चुनाव शुरू हो रहे हैं, आम लोग अपना जनादेश सुना देंगे, पर गणित का खेल तो देशभर में फैले उन क्षत्रपी के अनुसार खेला जायेगा जो आश्वस्त हैं कि किसी एक दल को बहुमत तो मिलेगा नहीं, और जोड़-तोड़, मोल-भाव, लेन-देन आदि उनके बाएं हाथ का खेल है। लोकतंत्र का श्वसन-तंत्र तो उनकी ही मुट्ठी में है, अतः लोभ-लालच, जाति-सम्प्रदाय, धनबल-भुजबल, धमकियां-आश्वासन, साम-दाम-दण्ड-भेद आदि सभी उपायों को काम में लेते हुए वे अधिक से अधिक सीटें अवश्य हथिया लेंगे।

देश का चिन्तक वर्ग चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा है–बहकावे में मत आओ, ऐसे लोगों को चुनो, जिनके मन में सच्चा लोकतंत्र बनाने का संकल्प हो। जो ईमानदार हों, स्वार्थी और धोखेबाज न हों। जनता के हित की सोचते हों, देश के प्रति समर्पित हों। सेवाभावी हों, सज्जन और चरित्रवान हों। नशेबाज-अपराधी-बेईमान-दलबदलू और समाज में फूट डालने वाले नहीं हों। लगभग अधिकांश लोगों के मन में यही संकल्प है कि वे गलत व्यक्ति के पक्ष में अपने मत का प्रयोग नहीं करेंगे।

और, यह भी सही है कि चुनाव-सुधार की दिशा में न्यायपालिका और चुनाव आयोग ने जो सार्थक उपाय इन वर्षों में किये हैं उनके शुभ परिणाम तभी आ सकते हैं जब लोग जागरूक हो। वे यह समझें कि चुनाव का यह वर्ष मोदी, राहुल, अरविंद या अन्य किसी महारथी के लिए नहीं, बल्कि हमारे अपने लिए ही जाना जायेगा। सभी मिलकर अच्छा देश बनायेंगे। बहुत हो चुका, अब धांधली नहीं चलेगी...

यह शुभ संयोग है कि यह वर्ष (2014) गुरुदेव श्री तुलसी का जन्म-शताब्दी वर्ष है, और इसी वर्ष में देशव्यापी चुनावों के बाद नयी लोकसभा का गठन होगा, नयी सरकार बनेगी। यदि हम अच्छे लोगों का चुनाव कर उनके हाथ में देश की बागडोर सौंपते हैं तो देश की सर्वांगीण उन्नति निश्चित है। गुरुदेव का दृढ़-विश्वास था कि चुनाव-शुद्धि ही लोक-कल्याण का राजपथ है। उन्होंने उम्मीदवारों और मतदाताओं के लिए एक आचार-संहिता निश्चित की। उसी आधार पर आज अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के नेतृत्व में आज अणुव्रत का 'चुनाव-शुद्धि अभियान' पूरे देश में चल रहा है।

महावीर जयन्ती का पावन पर्व भी इसी (अप्रेल) माह में ही है। महावीर ने हमें जहां अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त की दिशाएं दीं; वहीं लोक- कल्याणकारी राज्य शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व, समाजवादी अर्थव्यवस्था, श्रमभाव की प्रतिष्ठा, मानवीय एकता व समानता, व्यक्ति-स्वातन्त्र्य, जातिवाद, वर्णवाद, लिंगवाद और रंगवाद की ग्रन्थियों से मुक्ति आदि मार्ग बताए, जो लोकतंत्र के आधारभूत तत्त्व हैं। 'चुनाव-शुद्धि' अंक में पाठकगण इन सभी बिन्दुओं पर सारभूत विचारों का आस्वाद लेंगे, विश्वास है,

महेन्द्र कुमार

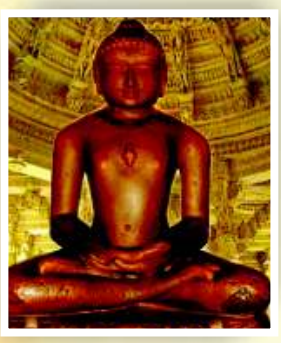

शाश्वत-स्वर

भगवान महावीर ने कहा...

- जाणिज्जइ चिन्तिज्जइ, जन्मजरामरणसंभवं दुक्खं। न य विसएसु विरज्जई, अहो सुबद्धो कवडगंठी। ।51।।
  जीव जन्म, जरा और मरण से होने वाले दुःख को जानता है, उसका विचार भी करता है, किन्तु विषयों से विरक्त नहीं हो पाता। अहो! माया (दम्भ) की गांठ कितनी सुदृढ़ होती है!
- जम्म दुक्खं जरा दुक्खं, रोगा य मरणाणि य। अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसन्ति जंतवो। ।55।।
  जन्म दुःख है, बुढ़ापा दुःख है, रोग दुःख है और मृत्यु दुःख है। अहो! संसार दुःख ही है, जिसमें जीव क्लेश पा रहे हैं।
- जं जं समयं जीवो आविसइ जेण जेण भावेण। सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं। ।57।।
  जिस समय जीव जैसे भाव करता है, वह उस समय वैसे ही शुभ-अशुभ कर्मों का बन्ध करता है।
- जो अवमाणकरणं, दोसं परिहरइ णिच्चमाउत्तो। सो णाम होदि माणी, ण दु गुणचत्तेण माणेण। ।89।।
  जो दूसरे को अपमानित करने के दोष का सदा सावधानीपूर्वक परिहार करता है, वही यथार्थ में मानी है। गुणशून्य अभिमान करने से कोई मानी नहीं होता।
- जा जा वज्जई रयणी, न सा पडिनियत्तई। अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जन्ति राइओ। ।118।।
  जो-जो रात बीत रही है वह लौटकर नहीं आती। अधर्म करने वाले की रात्रियां निष्फल चली जाती हैं।
- अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली। अप्पा कामदुहा धेणु, अप्पा में नंदणं वणं। ।122।।
  (मेरी) आत्मा ही वैतरणी नदी है। आत्मा की कूटशाल्मली वृक्ष है। आत्मा ही कामदुहा धेनु है और आत्मा ही नन्दन-वन है।
- अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य। अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुप्पट्ठिओ। ।123।।
  आत्मा ही सुख-दुःख का कर्ता है और विकर्ता (भोक्ता) है। सत्प्रवृत्ति में स्थित आत्मा ही अपना मित्र है और दुष्प्रवृत्ति में स्थित आत्मा ही अपना शत्रु है।
- सव्वगंधविमुक्को, सीईभूओ पसंतचित्तो अ। जं पावइ मुत्तिसुहं, न चक्कवट्टी वि तं लहइ। ।145।।
  सम्पूर्ण ग्रन्थ (परिग्रह) से मुक्त, शीतीभूत, प्रसन्नचित्त श्रमण जैसा मुक्तिसुख पाता है, वैसा सुख चक्रवर्ती को भी नहीं मिलता।
- जह ते न पिअं दुक्खं, जाणिअ एमेव सव्वजीवाणं। सव्वयरमुवउत्तो, अत्तोवम्मेण कुणसु दयं। ।150।।
  जैसे तुम्हें दुःख प्रिय नहीं है, वैसे ही सब जीवों को दुःख प्रिय नहीं है-ऐसा जानकर, पूर्ण आदर और सावधानीपूर्वक आत्मौपम्य की दृष्टि से सब पर दया करो।
- तुमं सि नाम स च्चेव, जं हंतव्वं ति मन्नसि। तुमं सि नाम स च्चेव, जं अज्जावेयव्वं ति मन्नसि। ।152।।
  जिसे तू हननयोग्य मानता है, वह तू ही है। जिसे तू आज्ञा में रखने योग्य मानता है, वह तू ही है।
- नाऽऽलस्सेण समं सुक्खं, न विज्जा सह निद्दया। न वेरग्गं ममत्तेणं, नारंभेण दयालुया। ।167।।
  आलसी सुखी नहीं हो सकता, निद्रालु विद्याभ्यासी नहीं हो सकता, ममत्व रखने वाला वैराग्यवान नहीं हो सकता, और हिंसक दयालु नहीं हो सकता।
- सोवण्णियं पि णियलं, बंधदि कालायसं पि जह पुरिसं। बंधदि एवं जीवं, सुहमसुहं वा कदं कम्म। ।201।।
  बेड़ी सोने की हो चाहे लोहे की, पुरुष को दोनों ही बेड़ियां बांधती हैं। इसी प्रकार जीव को उसके शुभ-अशुभ कर्म बांधते हैं।
- **जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ। जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणइ। ।1258।।**
  जो एक (आत्मा) को जानता है वह सब (जगत्) को जानता है। जो सबको जानता है, वह एक को जानता है।
- थोवम्मि सिक्खिदे जिणइ, बहुसुदं जो चरित्तसंपुण्णो। जो पुण चरित्तहीणो, किं तस्स सुदेण बहुएण। ।267।।
  चारित्रसम्पन्न का अल्पमत ज्ञान भी बहुत है और चारित्र-विहीन का बहुत श्रुतज्ञान भी निष्फल है।

('रमण सुत्तं' से संकलित)

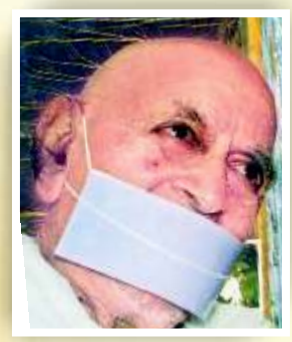

तुलसी उवाच

चुनाव

- अभाव और मोह को उत्तेजना देकर लोकमत प्राप्त करना चुनाव की पवित्रता का लोप है।
- गलत बुनियाद पर चुनाव में विजयी लोग देश को स्वस्थ प्रशासन नहीं दे सकते।
- चुनाव के समय जो धांधली चलती है, उससे लोकतंत्र की आत्मा कराह उठती है।
- चुनाव लड़ना कोई बुरी बात नहीं है, किन्तु येन-केन-प्रकारेण चुनाव जीतना मानवता का उपहास है।
- चुनाव राष्ट्रीय चरित्र का प्रतिबिम्ब है।
- जैसे अनाज की वृद्धि के लिए अच्छा बीज आवश्यक है, वैसे ही जनतांत्रिक मूल्यों को विकसित करने के लिए अच्छा चुनाव जरूरी है।
- चुनाव जनतंत्र का प्राण है।
- चुनाव का महत्वपूर्ण मुद्दा होना चाहिए-राष्ट्र को नैतिक विकास की दिशा में आगे बढ़ाना, उसकी एकता और अखंडता को कायम रखने का वातावरण निर्मित करना।
- चुनाव यदि स्वस्थ ढंग से होता है तो जनतंत्र शक्तिशाली बनता है और यदि उसमें भ्रष्टाचार, हिंसा आदि रोग के कीटाणु पनपते हैं तो जनतंत्र का शरीर भी रुग्ण हो जाता है।
- चुनाव का समय देश के भविष्य-निर्धारण का समय है
- लोगों में चुनाव के लिए पार्टी का टिकट प्राप्त करने की जितनी उत्सुकता होती है, उतनी उत्सुकता यदि उसके योग्य बनने की हो तो कितना अच्छा काम हो सकता है।
- चुनाव की शुद्धि हर श्वास में शुद्धि लाती है और इसकी विकृति हर श्वास में विकार।
- मेरी दृष्टि में चुनाव-शुद्धि के तीन ही विकल्प हैं। पहला-हम विजयी बनें या न बनें पर चुनाव में भ्रष्ट तरीकों का प्रयोग नहीं करेंगे। दूसरा-सत्तारूढ़ दल चुनाव-शुद्धि के लिए संकल्पबद्ध हो। तीसरा-जनमत जागृत हो।
- चुनाव परम्परा में विकृति नहीं होगी तो योग्य व्यक्ति अनायास ही प्रकाश में आ जाएगा।
- जब तक जनता की उदासीनता और मूढ़ता दूर नहीं होगी, चुनाव के नाम पर होने वाले दंगल को रोकना संभव नहीं है।
- जहां चुनाव दंगल का रूप ले लेता है, वहां सहयोग और सद्भावना की बात छूट जाती है।
- चुनाव का व्यय न बढ़े-यह तो गौण बात है, मौलिक बात यह है कि उसे जातीयता, साम्प्रदायिकता आदि विषैले तत्त्वों से कैसे मुक्त रखा जाये?
- जैसे अनाज की वृद्धि के लिए अच्छा बीच आवश्यक है, वैसे ही जनतांत्रिक मूल्यों को विकसित करने के लिए अच्छा चुनाव जरूरी है।

वर्ण व्यवस्था कर्म से हो

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण

जैनदर्शन में सृष्टि की जो अवधारणा है, उसमें कालचक्र का सिद्धान्त है। अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल के छह-छह अर होते हैं। कुल बारह अरोंवाला यह कालचक्र माना गया है। जैसे चक्का घूमता है, वैसे मानों काल भी घूमता है। वर्तमान में जो कालचक्र का अर्द्धभाग है, वह अवसर्पिणी काल है। इसमें धीरे-धीरे ह्रास होता जा रहा है। एक समय था, जब मनुष्य का आयुष्य तीन क्रोड़ाक्रोड़ी का होता था। वह घटते-घटते आज अधिकतम लगभग सौ-सवा सौ वर्ष तक आ गया और आगे वह बीस वर्ष तक रह जाएगा। एक समय था, जब मनुष्य की ऊंचाई उत्सेध अंगुल के अनुसार तीन कोस जितनी लम्बी हुआ करती थी। वह लम्बाई कम होते-होते आज लगभग साढ़े तीन हाथ की हो गई और भविष्य में वह एक हाथ से भी कुछ कम रह जाएगी। इस अवसर्पिणी काल में सब चीजों का ह्रास हो रहा है। साधना का भी ह्रास हो रहा है। एक समय था, जब केवलज्ञानी संत होते थे, आज वह स्थिति समाप्त हो गई। केवलज्ञानी संतों का होना हमारे यहां बन्द हो गया। इस अवसर्पिणी काल के बाद चक्का घूमेगा और वापस विकास का क्रम शुरू हो जाएगा। फिर आयुष्य भी बढ़ जाएगा, लम्बाई भी बढ़ जाएगी और साधना में भी विकास होगा। वर्तमान अवसर्पिणी काल में भगवान् ऋषभ से पहले यौगलिक काल था। उस समय एक मां-बाप दो ही संतान पैदा करते थे–एक लड़का और एक लड़की। यह निश्चित क्रम था। उस समय समाज जैसी व्यवस्था नहीं थी। वर्तमान जैसी शादी की व्यवस्था भी नहीं थी। उस समय जो भाई-बहन होते, वे ही आगे जाकर पति-पत्नी बन जाते। फिर समाज की व्यवस्था बनाई गई। सामाजिक व्यवस्था में चार वर्णों की स्थापना की गई–क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र। चारों के अपने-अपने कार्य निश्चित किए गए। श्रीमद्भगवद्गीता में ब्राह्मण का कर्त्तव्य बताते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं–

शमो दमस्तपः शौचं
क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं
ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ।। 18/42 ।।

आत्म-संयम, इन्द्रिय-नियमन, तपस्या, पवित्रता, सहनशीलता, ऋजुता, ज्ञान, विज्ञान और धर्म में श्रद्धा–ये ब्राह्मण के स्वाभाविक गुण हैं।

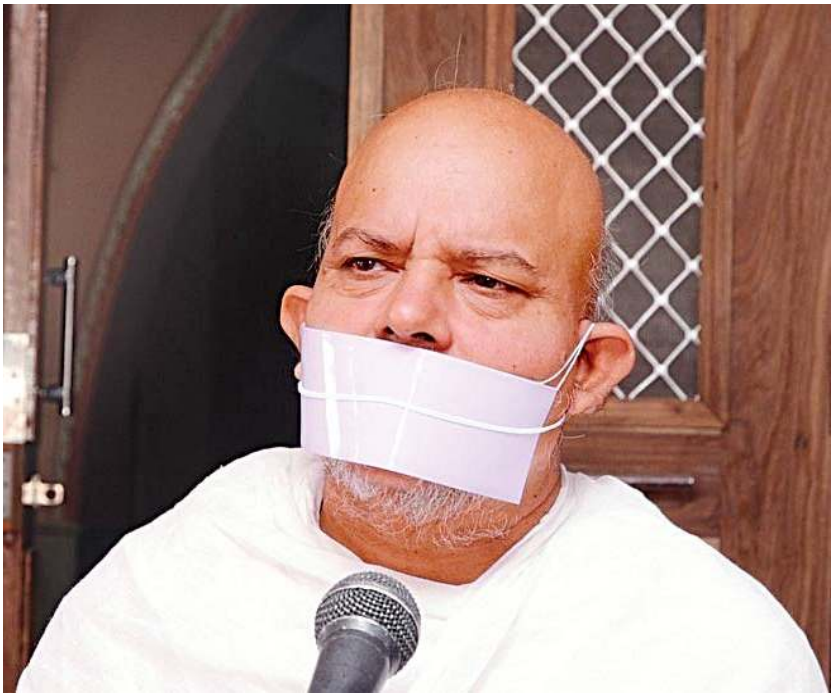

ईमानदार व्यापारी की दुकान विश्वस्त बन जाती है और लांग टर्म में देखें तो जहां विश्वास जम जाता है, उस व्यापारी का व्यापार भी अच्छा चलने की संभावना रहती है। जिस व्यापारी का विश्वास खत्म हो जाता है फिर लोग वहां जाने से कतराते हैं, इसलिए परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने व्यापारियों के लिए भी अणुव्रत की बात कही। उन्होंने कहा-व्यापार में मिलावट न करें। असली दिखाकर नकली देने का प्रयास न करें और अप्रामाणिकता से बचने का प्रयास करें।

गीताकार के अनुसार ब्राह्मण वह होता है–

- जो आत्मसंयम की साधना करता है।
- जो इन्द्रियों का नियमन करने की साधना करता है।
- जो तपस्या करता है।
- जो शुद्धि रखता है।
- जो क्षमा की साधना करता है।
- जो ऋजुता की साधना करता है।
- जो ज्ञान-विज्ञान की आराधना करता है और शास्त्रों का ज्ञाता होता है।
- जो आत्मा-परमात्मा, पुण्य-पाप आदि में विश्वास रखने वाला होता है।

जन्मना ब्राह्मण होना एक बात है, परन्तु कर्मणा ब्राह्मण होने के लिए गीता की दृष्टि में अनेक गुणों को धारण करना आवश्यक होता है। ब्राह्मण में उपरोक्त गुणों के साथ-साथ उपशम का विकास होना चाहिए। यह नहीं हो कि वह जब कभी गुस्से में आ जाए और इन्द्रियों का दास बन जाए। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया कि **कम्मुणा बंभणो होइ** अर्थात् ब्राह्मण का जो कर्म निर्धारित है, उसका आचरण करने से वह ब्राह्मण कहलाता है। और यह भी कहा गया कि **न ओंकारेण बंभणों** अर्थात् केवल ओंकार का जप करने मात्र से कोई ब्राह्मण नहीं होता। गीता और जैन परम्परा में ओंकार या ओम् का बड़ा महत्त्व माना गया है। जैन-दृष्टि से विचार करें तो एक ऊँ में पंच परमेष्ठी समाविष्ट हो जाते हैं–अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि।

पातंजल योगदर्शन में ऊँ को परमात्मा का वाचक शब्द माना गया है। ओम् का जप करना अच्छा है, पर मात्र ओम् का जप करे और गुण व कर्म अगर वैसे न हों तो ब्राह्मण कहलाने का वह पूरा अधिकारी नहीं बनता। संस्कृत साहित्य में ब्राह्मण का एक नाम द्विज आया है। ब्राह्मण को गीता की इन बातों पर ध्यान देना चाहिए कि ये बातें मेरे में हैं तब तो मैं ब्राह्मण कहलाने का पूरा अधिकारी हूं, वरना अधिकार में कुछ कमी रह जाती है। ब्राह्मण अपने गुणों से ब्राह्मण बनने का प्रयास करे।

क्षत्रिय के कर्त्तव्य के बारे में श्रीकृष्ण कहते हैं–

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं
युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं
कर्म स्वभावजम्।। 18/43।।

वीरता, तेज, धीरता, सूझबूझ, युद्ध से मुंह न मोड़ना, दानशीलता और नेतृत्व–ये क्षत्रिय के स्वाभाविक कर्त्तव्य हैं।

पहली बात बताई गई कि क्षत्रिय में शौर्य होना चाहिए। कायरता तो क्षत्रिय का शत्रु है। निडरता और शूरवीरता क्षत्रिय के लिए आवश्यक है। क्षत्रिय युद्ध करने के लिए जाए और बीच में भाग जाए तो वह क्षात्रधर्म से च्युत हो जाता है। योद्धा युद्ध में लड़ते-लड़ते मर जाए तो उसके लिए गौरव की बात है, परन्तु कोई क्षत्रिय योद्धा युद्ध के प्रांगण से पलायन कर दे तो उसके लिए शर्म की बात होती है।

दूसरी बात बताई गई कि क्षत्रिय में तेजस्विता होनी चाहिए। वह बुझी हुई अग्नि के समान न हो। जलता हुआ अंगारा बनकर जीना तो मुहूर्त्तभर का भी अच्छा होता है और बुझी हुई अग्नि या धुआं बनकर लम्बे काल तक जीना भी अच्छा नहीं होता। क्षत्रिय में शक्तिमत्ता होनी चाहिए। उसमें क्षात्रधर्म का तेज बोलना चाहिए, कभी दौर्बल्य नहीं आना चाहिए।

बारहवें वासुदेव त्रिपृष्ठ बड़े तेजस्वी थे। क्षत्रिय को जैसा होना चाहिए, वे गुण उनमें थे। एक बार वे जिस राजा की आधीनता में थे, उस क्षेत्र में एक शेर का आतंक पैदा हो गया। यह व्यवस्था की गई कि एक-एक राजा बारी-बारी से खेतों में पहरा देगा और किसानों की शेर से रक्षा करेगा। एक दिन त्रिपृष्ठ वासुदेव के पिता प्रजापति का नम्बर आया। प्रजापति जाने को तैयार हुआ, तब त्रिपृष्ठ ने कहा–पिताजी! इतने छोटे-से काम के लिए आपको जाना पड़े, यह बात उचित नहीं है। रावण को मारना हो तब तो राम-लक्ष्मण जाए, पर छोटे-मोटे राक्षस को मारने के लिए भी राम जाए, यह ठीक नहीं है। इतना काम तो उनके अनुचर भी कर सकते हैं। एक शेर की ही तो बात है, उसके लिए आपको पधारना पड़े, यह तो हम पुत्रों के लिए लज्जा की बात है। आप हमें आज्ञा दें, हम जाएंगे। पिता ने सोचा, पुत्र बड़ा कुशल है। पुत्र योग्य हो तो पिता को क्या चिन्ता? त्रिपृष्ठ रवाना हुआ।

उसने सोचा, आज मैं ऐसा करूं कि सबके लिए समस्या का हल हो जाए, किसी को फिर बारी में जाना ही न पड़े। त्रिपृष्ठ ने पूरी जानकारी कर ली कि शेर कहां रहता है। फिर वह शेर की गुफा की ओर आगे बढ़ा। गुफा के निकट जाकर उसने नाद किया। नाद सुनते ही शेर उत्तेजना में आ गया और गुफा से बाहर निकला। शेर राजकुमार की ओर सामने जाने लगा। राजकुमार ने सोचा कि शेर तो पैदल आ रहा है और मैं रथ में बैठा हूं, यह तो बराबरी की बात नहीं है। त्रिपृष्ठ भी पैदल चलने लगा। फिर देखा कि शेर के पास कोई शस्त्र नहीं है, फिर मैं हाथ में शस्त्र क्यों रखूं। उसने शस्त्रों को भी छोड़ दिया। अब शेर और त्रिपृष्ठ दोनों बिल्कुल आमने-सामने हो गए। शेर तो हिंस्र पशु होता ही है, वह त्रिपृष्ठ की ओर लपका। त्रिपृष्ठ बड़ा जागरूक था। उसने शेर के जबड़े को पकड़ा। और इस तरह चीर डाला, जैसे किसी पुराने बांस को चीरा हो। कुछ ही क्षणों में शेर का प्राणान्त हो गया। प्रजापति को बधाइयां मिलने लगीं कि आपके पुत्र ने सबके लिए समस्या का हल कर दिया। कहने का मतलब कि त्रिपृष्ठ में कितना क्षात्रतेज और कितना शौर्य था।

तीसरी बात बताई गई कि क्षत्रिय में धैर्य होना चाहिए। उसे अधीरता नहीं करनी चाहिए। आदमी को समझकर काम करना चाहिए। उत्तेजना में, आवेश में कोई काम नहीं करना चाहिए।

चौथी बात बताई गई कि क्षत्रिय में दक्षता होनी चाहिए, कार्यकौशल होना चाहिए। अगर वह राजा है तो राज्य संचालन करने की दक्षता होनी चाहिए। क्षत्रिय अपने कर्त्तव्य का भली-भांति निर्वाह करे।

पांचवीं बात बताई गई कि क्षत्रिय वह होता है, जो समरांगण से हटता नहीं, मुकाबला करता है और निडरता से आगे बढ़ता है। वह देश के लिए प्राण न्यौछावर करने को तैयार रहता है। हम साधु हैं, आत्मा का साम्राज्य पाने के लिए साधना कर रहे हैं। हमारे मन में भी इतना संकल्प होना चाहिए कि आत्म-साम्राज्य पाने के लिए हमारे प्राण भले चले जाएं, किन्तु हम अपनी साधना से कभी पलायन न करें।

छठी बात बताई गई कि क्षत्रिय में उदारता होनी चाहिए। वह कंजूस नहीं होना चाहिए। जो मुंह का जवाब देने वाला नहीं, हाथ का जवाब देने की वृत्तिवाला होता है तो मानना चाहिए उसमें क्षात्रधर्म है। एक धनवान व्यक्ति के पास कोई भिखमंगा आया और भीख मांगने लगा। धनवान व्यक्ति ने कहा—मैं तुम्हें पैसा तो दे दूंगा, पर तुम हमेशा भिखमंगे ही बने रहो, यह मैं नहीं चाहता। मैं चाहता हूं कि तुम भी स्वावलम्बी बनो। मेरे से कुछ पैसे ले लो और जंगल में जाओ, वहां लकड़ियां काटो, उन्हें बेचो, मजदूरी करो, पैसा कमाओ और अपना काम चलाओ। तुम हमेशा भिखमंगे मत रहो। क्षत्रिय की दानशीलता ऐसी हो कि वह भिखमंगे को हमेशा भिखमंगा ही न रहने दे, अपने सहयोग के द्वारा उसको अपने पैरों पर खड़ा कर दे। हर व्यक्ति अपने कर्म के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कहलाने का अधिकार प्राप्त करे।

वैश्य और शूद्र के कर्त्तव्य के बारे में बताते हुए गीताकार कहते हैं—

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं
वैश्यकर्म स्वभावजम्।
परिचर्यात्मकं कर्म
शूद्रस्यापि स्वभावजम्।।18/44।।

कृषि, गौरक्षा और व्यापार—ये वैश्य के स्वाभाविक कर्त्तव्य हैं। शूद्र का स्वभाविक कर्त्तव्य सेवा का कार्य करना है।

खेती-बाड़ी से आजीविका चलाने वाला, गौरक्षा का काम करने वाला, व्यापार करने वाला व्यक्ति वैश्यकर्म कर्ता होता है। व्यापार भी एक प्रकार की सेवा होती है। व्यापार के माध्यम से पैसा कमाना स्वयं के लिए लाभ की बात है, किन्तु हम गहराई में जाएं तो व्यापार के माध्यम से वस्तु वितरण होता है और वस्तु वितरण के माध्यम से जनता की अपेक्षापूर्ति होती है, इसलिए व्यापार से जनता की सेवा होती है। व्यापारी को यह सोचना चाहिए कि मैं केवल पैसा कमाने पर ही ध्यान न दूं, मैं जनता की सेवा करूं। जनता की सेवा तब अच्छी होगी, जब व्यापारी ईमानदारी रखेगा। ईमानदार व्यापारी की दुकान विश्वस्त बन जाती है और लांग टर्म में देखें तो जहां विश्वास जम जाता है, उस व्यापारी का व्यापार भी अच्छा चलने की संभावना रहती है। जिस व्यापारी का विश्वास खत्म हो जाता है फिर लोग वहां जाने से कतराते हैं, इसलिए परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने व्यापारियों के लिए भी अणुव्रत की बात कही। उन्होंने कहा—व्यापार में मिलावट न करें। असली दिखाकर नकली देने का प्रयास न करें और अप्रामाणिकता से बचने का प्रयास करें। यह व्यापारी का धर्म है। जैन वाङ्मय में कहा गया—धम्मेणं वित्तिं कप्पेमाणा अर्थात् धर्मपूर्वक जीविका कमाना। आदमी धर्मस्थान में धर्म करे, यह अच्छी बात है, पर बाजार में भी धर्म का प्रभाव रहे, यह खास बात है। उपासना स्थल में अलग तरह का धर्म होता है। उसका अपना विधि-विधान है, वह होना कोई बुरी बात नहीं है, परन्तु बाजार का धर्म है—करुणा, ईमानदारी आदि। बाजार में अथवा दुकान में अगर करुणा है, ईमानदारी आदि है तो मानना चाहिए कर्मस्थान में भी धर्म हो रहा है।

खेती में अहिंसा का प्रयोग हो, यह ध्यान देना चाहिए। कृषि के कार्य में शुद्धि रहे। दवा आदि का प्रयोग करने से अनेक जीव मर जाते हैं। जब मैं मध्यप्रदेश की यात्रा में था, तब एक गांव में गया। मैं कुछ देर के लिए वहां रुका। अनेक किसान लोग मेरे पास आए। उनमें से एक भाई खड़ा हुआ और बोला—बाबाजी! हम तो पापी लोग हैं, हम खेती करते हैं और खेती में दवा का प्रयोग करते हैं, जिससे असंख्य जीव मर जाते हैं। आप हमें कोई प्रायश्चित दें ताकि उस हिंसा का पाप साफ हो जाए। फिर मैंने सोचा कि खेती में किस प्रकार की अहिंसा का विकास हो, यह शोध का अच्छा विषय है। बाद में मैंने सुना कि खेती में जीव ज्यादा न मरें या अहिंसा का ध्यान रखा जा सके, ऐसे प्रयोग भी हो रहे हैं। वैसे तो हर प्राणी के प्रति अहिंसा की भावना रहे, किन्तु गीताकार ने गौरक्षा की बात विशेष रूप से कही है। वैश्यकर्म में शुद्धि रहे, यह ध्यान रखने का प्रयास करना चाहिए।

शूद्र का कर्म है—सेवा करना। क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य—इन सबकी सेवा करना शूद्र का धर्म या कर्म है। सेवा अपने आप में बड़ा महत्वपूर्ण उपक्रम होता है। सेवा के द्वारा आदमी के मन को जीता जा सकता है। सेवा के द्वारा दूर हो चुके व्यक्ति को निकट लिया जा सकता है। जब किसी में उदारता होती है, परोपकार की भावना होती है, कर्त्तव्य भावना होती है, तब कोई आदमी सेवा कर सकता है। उत्तराध्ययन सूत्र में भी इन चार वर्णों की चर्चा की गई है। गीता और उत्तराध्ययन में कुछ बातों में बहुत समानता है।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया—'वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा' अर्थात् कर्म से वैश्य होता है और कर्म से ही शूद्र होता है। आदमी जिस किसी कर्म का पालन करे, उसके साथ धर्म को जोड़ने का प्रयास करे। कर्म और धर्म दोनों साथ हो जाएं तो कर्म शुद्ध हो जाता है। ।

लोकतंत्र और राष्ट्रीय एकता

आचार्य महाप्रज्ञ

मनुष्य समस्या और समाधान–दोनों के बीच में जी रहा है फिर भी वह प्रयत्न करता है कि समस्याएं कम हों और समाधान ज्यादा हों। इस दिशा में प्रयत्न करते-करते लोकतंत्र का उदय हुआ। अनेक तंत्र बने। पहले कुलतंत्र बना। अनेक कुल थे। प्रत्येक कुल का मुखिया उसका अधिष्ठाता था। फिर राजतंत्र आया। एक राजा बना और सारी प्रजा बनी। राजतंत्र बहुत लम्बे समय तक चला। विश्व के इतिहास में चिरकाल तक जीने वाला है राजतंत्र। प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक चला। अभी तक भी कहीं-कहीं राजतंत्र चला आ रहा है। इसके बाद आया अधिनायकतंत्र। न लोकतंत्र, न राजतंत्र। किसी सैनिक ने, किसी शक्तिशाली नेता ने क्रांति की और सारी सत्ता अपने हाथ में ले ली। वर्तमान युग लोकतंत्र का है। लोकतंत्र में सब समान हैं। जाति, रंग, और सम्प्रदाय कोई बाधा नहीं हैं। किस रंग का आदमी है, किस जाति का है या किस सम्प्रदाय का है, इसका कोई प्रश्न नहीं। प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार प्राप्त हैं। यह समानता का सूत्र लोकतंत्र का प्राणतत्व है, मूल आधार है।

दो उम्मीदवार खड़े हो गए। एक चरित्रवान है, गुणवान है, भ्रष्टाचार नहीं करता है, अनैतिक तरीके काम में नहीं लेता है, न झूठे आश्वासन देता है। दूसरा सब तिकड़म जानता है। वोट जुटाने में तिकड़मबाज सक्षम बनेगा। उसे ज्यादा मत मिलेंगे और वह लोकतंत्र का रक्षक बन जाएगा। जहां पर यह प्रवृत्ति है, वहां संख्या को अधिक महत्व मिलता है, गुणवत्ता को नहीं। जहां गुणवत्ता को महत्व नहीं मिलता, वहां अक्षम व्यक्ति भी मुख्य हो जाता है।

इसीलिए राष्ट्रपति राधाकृष्णन ने कहा था–आज का लोकतंत्र महावीर के सिद्धान्तों पर आधारित है।

इसका कारण है–सापेक्षता, समानता, सह-अस्तित्व और स्वतंत्रता। अनेकांत सिद्धान्त के चार मुख्य फलित होते हैं–स्वतंत्रता, सापेक्षता, समानता और सह-अस्तित्व। ये चारों लोकतंत्र के सिद्धान्त भी बन जाते हैं। यह कहा जा सकता है–भगवान महावीर ने जो अनेकांत का दर्शन दिया था वह आज लोकतंत्र में सामाजिक रूप में फलित हो रहा है। वह एक तत्त्वज्ञान का दर्शन है। उसका व्यावहारिक रूप है–सामाजिक प्रणाली।

अनेकांत में समाधान

भगवार महावीर राजतंत्र की परम्परा में नहीं जन्मे थे। उनका जन्म गणतंत्र की परंपरा में हुआ था। गणतंत्र की परंपरा के प्रभाव को हम ऐतिहासिक दृष्टि से अस्वीकार कैसे करेंगे? हमें स्वीकार करना होगा–गणतंत्रीय परंपरा का भगवान महावीर पर प्रभाव था। उसी का तात्विक रूप बन गया–अनेकांतवाद, व्यावहारिक रूप बन गया–गणतंत्र और आज की भाषा में उसे कहा गया–लोकतंत्र। सिद्धान्त वे ही हैं। जो सिद्धान्त अनेकांत के हैं, वे ही लोकतंत्र के हैं।

जैन-दर्शन ने समानता का सिद्धान्त प्रस्तुत किया–प्रत्येक प्राणी समान है। लोकतंत्र का आधारभूत सिद्धान्त है–प्रत्येक नागरिक समान है। जहां इस समानता के सिद्धान्त का अतिक्रमण होता है वहां विरोध और विद्रोह की स्थिति बन जाती है। समस्या यह है-व्यक्ति दूसरे के अधिकार को मान्यता देना नहीं चाहता। हां, जहां यह समस्या होती है, वहां लोकतंत्र विकसित नहीं हो सकता। जहां असमानता की चेतना प्रबल होती है, वहां असहिष्णुता को पनपने का अवसर मिलता है। जब असहिष्णुता का भाव प्रखर बनता है, मानवीय संबंध बिखरने लगते हैं।

मानवीय संबंधों का बिखराव लोकतंत्र के स्वास्थ्य को लील जाता है। जहां समानता है, वहां सहिष्णुता है। जहां सह-अस्तित्व है, वहां भी सहिष्णुता का होना जरूरी है किन्तु सहिष्णुताका विकास समानता की चेतना

के उन्नयन से ही संभव है। लोकतंत्र को आज इसीलिए महत्व मिला कि उसमें समानता का सिद्धान्त प्रतिष्ठित है। वह प्रत्येक व्यक्ति को प्रिय है। प्रत्येक व्यक्ति समानता की भूमिका में रहना पसंद करता है। जहां भी थोड़ी असमानता आती है, चित्त में उद्वेग और विक्षोभ पैदा हो जाता है, इसीलिए समानता को आधार मिल रहा है।

लोकतंत्र की अपनी समस्याएं भी हैं। सबसे पहली समस्या है–अक्षमता का शासन। कारण यह है–प्रकृति में एक ऐसी बात आ गई कि जहां समानता की बात है वहां व्यक्ति संख्या पर अधिक केन्द्रित होगा, गुणवत्ता पर कम होगा। इस पर ध्यान केन्द्रित नहीं होगा–सब गुणवान आएं किन्तु यह चिंतन प्रबल होगा–संख्या में सबसे ज्यादा हों। दो उम्मीदवार खड़े हो गए। एक चरित्रवान है, गुणवान है, भ्रष्टाचार नहीं करता है, अनैतिक तरीके काम में नहीं लेता है, न झूठे आश्वासन देता है। दूसरा सब तिकड़म जानता है। वोट जुटाने में तिकड़मबाज सक्षम बनेगा। उसे ज्यादा मत मिलेंगे और वह लोकतंत्र का रक्षक बन जाएगा। जहां पर यह प्रवृत्ति है, वहां संख्या को अधिक महत्व मिलता है, गुणवत्ता को नहीं। जहां गुणवत्ता को महत्व नहीं मिलता, वहां अक्षम व्यक्ति भी मुख्य हो जाता है। 10 सक्षम व्यक्ति पूरे शासन को ठीक चला सकते हैं किन्तु 100 अक्षम आदमी शासन को कुछ भी नहीं चला सकते। लोकतंत्र के साथ जो अक्षमता का अभिशाप जुड़ा हुआ है, उसमें संख्या का महत्व है, गुणवत्ता के लिए कोई अवकाश नहीं है। यह लोकतंत्र की एक दुर्बलता है, समस्या है। लोकतंत्र की दूसरी समस्या है–उत्तरदायित्व का केन्द्रित न होना। एक राजा है। उसे किसी समस्या के संदर्भ में निर्णय लेना है तो वह पांच मिनट में निर्णय ले लेता है। आज लोकतंत्र में कोई समस्या है तो क्या इतना शीघ्र निर्णय लिया जा सकता है? निर्णय लेते-लेते फाइलों की संख्या बढ़ जाती है। उत्तरदायित्व केन्द्रित नहीं है, यह बड़ी समस्या है लोकतंत्र में।

तीसरी समस्या है–भ्रष्टाचार की। लोकतंत्र में भ्रष्टाचार के लिए भी काफी अवकाश है। वोट लिए जाते हैं आश्वासनों के आधार पर। वे जानते भी हैं–आश्वासन पूरे होने के नहीं हैं। जब व्यक्ति जीत जाता है तब वोटरों को खुश रखने के लिए ऐसे काम भी करने लगता है, जो करणीय नहीं होते।

एक भी, अनेक भी

हमारे जीवन में एकता और अनेकता का ऐसा विचित्र योग है कि हम एक होकर भी अनेक हैं और अनेक होकर भी एक हैं।

हमारी एकता का अर्थ है समानता की अनुभूति और अनेकता का अर्थ है आवश्यकताओं का विभाजन। हम सब मनुष्य हैं। मनुष्य-मनुष्य समान हैं, इसलिए सब एक हैं। किन्तु हमारी आवश्यकता-पूर्ति के स्रोत भिन्न-भिन्न हैं। उनमें हम विभक्त हैं, इसलिए अनेक भी हैं।

जिससे हमारी अपेक्षा पूरी होती है, उससे हमारा मोह हो, यह स्वाभाविक है। जिनसे मोह होता है, उन्हें महत्व देने की भावना भी अस्वाभाविक नहीं है। हम सबसे अधिक महत्व अपने शरीर को देते हैं। फिर अपने रंग-रूप, भाषा, जाति, गांव, जिला, प्रांत और राष्ट्र को देते हैं। उन्हें महत्व देना कोई अपराधी भी नहीं हैं, यदि हम दूसरों को हीन माने बिना, बाधा पहुंचाए बिना उन्हें महत्व दें, लेकिन हम में अनेक भौतिक साधनों को सीमा से अधिक महत्व देने की प्रवृत्ति होती है। इसीलिए हम दूसरों के साधनों के सामने अपने साधनों की योग्यता प्रमाणित करना चाहते हैं। इस प्रक्रिया में हमारा मन घृणा, गर्व आदि अनेकता के बीजों की बुआई करता है। हम नहीं चाहते कि साधनों की अनेकता के आधार पर मानवीय एकता खण्डित हो, पर साधनों को असीम महत्व देते हुए हम यह कैसे कह सकते हैं? भौतिक साधनों के प्रति हमारा आकर्षण जितना अधिक होगा, उतनी ही अधिक मानवीय एकता खण्डित होगी। हम मानवीय एकता को बनाए रखना चाहते हैं और भौतिकता के आकर्षण को कम करना नहीं चाहते, फिर वह कैसे संभव होगी?

शक्तिशाली और बुद्धि-सम्पन्न लोग जब अधिकार-लोलुप हो जाते हैं, प्रत्यक्ष या परोक्ष साम्राज्य जब प्रिय हो जाता है, तब मानवीय एकता का भंग होता है। दुष्ट-प्रकृति के लोग अपने पर संतुलन न रखने के कारण भेद का वातावरण उत्पन्न कर डालते हैं। इतिहास स्वयं साक्ष्य है कि जब-जब मानवीय एकता का भंग हुआ है, तब-तब ऐसे ही लोगों के द्वारा हुआ है।

तत्काल समाधान

यदि हम चाहते हैं कि मानवीय एकता पुनः स्थापित हो, भौतिक उपकरण को लेकर मनुष्य मनुष्य का शत्रु न बने तो हमें मानव-

निर्माण के प्रति विशेष ध्यान देना होगा। तात्कालिक उपचार यह हो सकता है कि एकता के प्रबल आंदोलन द्वारा मनुष्य को मानवीय एकता की अनुभूति कराई जाए। इसका स्थाई समाधान यह है कि हम अपने प्रशिक्षण-क्रम में तीन तत्वों को अनिवार्यता दें–

(1) शक्ति-संगोपन (2) बुद्धि-संयम

(3) भाव-पवित्रता की शिक्षा।

शक्ति संगोपन की शिक्षा प्राप्त हो तो बहुमत अल्पमत के प्रति कभी आक्रमणकारी नहीं हो सकता और अल्पमत बहुमत के प्रति कभी उद्दण्ड नहीं हो सकता। शक्ति के संगोपन का उसकी उपलब्धि से अधिक महत्व है। बौद्धिक-संयम का अभ्यास हो तो किसी भी प्रकार का साम्राज्य स्थापित नहीं हो सकता और शोषण भी नहीं हो सकता। स्वभाव की पवित्रता प्राप्त हो जाए तो आए दिन होने वाले संघर्ष समाप्त हो जाएं।

भेद के हेतु

राष्ट्रीय एकता की बात सोची जाती है पर हमारा विश्वास है कि मानवीय एकता को आधार माने बिना राष्ट्रीय एकता स्थितिशील नहीं बनती। मनुष्य के मूल्यांकन का हमारा दृष्टिकोण विशुद्ध नहीं है। हम मनुष्य को मनुष्य की दृष्टि से नहीं जानते-पहचानते। हम उसका अंकन जातीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय, भाषायी आदि माध्यमों से करते हैं। इसलिए वह हमसे बहुत दूर रह जाता है। उसके माध्यम हमारे माध्यमों से भिन्न होते हैं। इसलिए भेद मिट ही नहीं पाता। फिर भी जो राष्ट्रीय एकता का ज्वलंत प्रश्न है उस पर विचार करना चाहिए। वर्तमान में जो भेद वाली प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं, उसके प्रभावशाली हेतु हैं–

(1) प्रांतीयता (2) जातीयता

(3) भाषा (4) राजनीतिक-दल।

जातीयता किसी दिन समाप्त हो सकती है। तब सभी लोग खुद को भारतीय मानने में गौरव का अनुभव करेंगे। जन्मना कोई बड़ा-छोटा, स्पृश्य-अस्पृश्य नहीं होता। यानी जातिवाद समाप्त हो जाएगा। प्रांतों की व्यवस्था में भी संभव है परिवर्तन हो जाए। प्रांतों का विभाजन प्रशासन की सुविधा का साधन रहकर अलगाव का प्रमुख हेतु बनता है तो यह स्वयं एक दिन चिंतनीय होगा, किन्तु भाषा और राजनीतिक दल एकता के स्थाई शत्रु हैं। भाषा या राजनीतिक दल एक ही हो, यह कल्पना कुछ जटिल है फिर भी ये दोनों जीवन को बहुत निकटता से प्रभावित करने वाले तत्व हैं। इसलिए इनके बारे में बहुत गहराई से सोचना चाहिए। भाषा का प्रश्न भी राजनीति से भिन्न नहीं है। परंतु राजनीतिक व्यक्ति ही अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए भाषायी विवाद खड़ा करते हैं। जो लोग राष्ट्र-संचालन के लिए अधिक उत्तरदायी हैं, उनके द्वारा भी राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन नहीं मिलता है। यह सचमुच आश्चर्य की बात है।

मतदान कीजिए

आये वतन पे आंच तो दिल जान दीजिये,
संसद को चुन के देश का दीवान दीजिये।
कन्या कुमारी से चुनो, कश्मीर से चुनो;
काबिल वतन परस्त की तासीर से चुनो।
मुफलिस का दिल मिज़ाज़ से बन्दा नवाज़ हो;
उस रहनुमा-सा देश को इन्सान दीजिये।।
संसद को छू ना पायेगा बे-ईमान आदमी,
हो सौ फीसदी चुनाव में मतदान लाज़मी।
मौका है दिल की मान, तकाज़ा है वक्त का।
अपने वतन के वास्ते मतदान कीजिये।।
पूजा है प्रजातंत्र को भारत विशाल ने,
सींचा है लोकतंत्र को निष्ठा की ताल ने
फूला-फला है खूब सहारे विधान के,
फिर भी नई उमर को नया मान दीजिये।।
फिरका परस्त ताकतें पनपें ना देश में,
मौका परस्त ताकतें पनपे ना देश में।
है भाईचारा खूब मुसीबत में आजकल,
फिर से वतन को प्यार की पहचान दीजिये।।
भारत सा भला देश भी संसार में कहां?
ऐसा फलक का फूल भी गुलजार में कहां?
'जब्बार' अब वतन की हिफाज़त के वास्ते
फौलादी दिल का देश को दीवान दीजिये।।

अब्दुल जब्बार

नूर निकेतन, 48 कुंभानगर बाजार,
चित्तौड़गढ़ (राज.) -312001

egkohj t ;irh ¼13 vily½

THE BASIS OF DEMOCRACY

MAHAVIRA'S PHILOSOPHY *

Acharya Tulsi

The twenty-fifth centenary of Mahavira's nirvana is being discussed all over the country today. Preparations have already begun to organise programmes in different fields, depending on their respective abilities and qualifications.

It may be asked why the centenary of Mahavira's nirvana is being observed. We are human beings and Mahavira was also a human being. Then what was so significant about Mahavira that the centenary of his nirvana should be observed? We are observing the centenary of his nirvana because the philosophy that he gave us and the values that he established and principles that he promulgated were in the best interest of all. In this lies the true solution for the problems of all ages.

A person would find solution and relief according to the restraint he exercises. In the present age, the fascination for power and wealth is continuously on the increase. They are such pleasing temptations that it is extremely difficult to save oneself from their influence and protect against it. As for the common people, only that person can be illustrious example who keeps himself away from them.

** An except of Acharya Tulsi is speech delivered by him on the occassion of Mahavira's nirvana centenary celebration and launching that year as 'Year of Restraint'.*

The principles of non-violence, non-possession, pluralistic view, restraint and equanimity which he preached, are no doubt unique not only from the spiritual point of view, but their significance from the political point of view also cannot be denied. In fact, they are the basic formulae on which the democratic system of governance is based.

Dr. S. Radhakrishnan, who was not only the President of India, but also a scholar who understood the Indian as well as the Western philosophy, had said on one occasion, "The democratic constitution of independent India is based entirely on non-aggression, co-existence, equality and restraint. These are Mahavira's basic and practical principles. Hence, we can say that the Indian constitution is influenced by Mahavira's principles or Mahavira's principles have given basic and practical direction to Indian democracy.

The Indian Constitution has accepted the policy of non-aggression. Bhagwan Mahavira also said two thousand, fie hundred years ago–"Do not be an aggressor. Do not rob anyone of his freedom by attacking him."

To-day, the people's consciousness all over the world has awakened in support of the policy of non-aggression. If someone attacks anyone, everyone points its finger at him as an aggressor. Hence, one does not easily dare attack anyone. The policy of non-aggression has proved to be successful and effective in the matter of solving the terrible and destructive problem of war. This can be described as Mahavira's valuable contribution towards world peace.

Co-existence is another point of Mahavira's principle. Following this principle people holding extremely divergent views sit at one table and try to find solution to the world problems, and make combined efforts in that direction.

The result of Mahavira's principle of non-possession is socialism of the present age. He said–"Do not indulge in accumulating too much wealth. Do not earn wealth by unfair means." He gave the principle of dispersal alongwith earning, because the concentration of wealth gives rise to social disparities, and disparity is the origin of class-conflict.

Mahavira enshrined the principle of equality to combat these disparities that marked the social order of his times. He said, "Mankind is one. Dividing mankind on the basis of casteism, provincialism, nationalism, sectarianism and linguism is a terrible mistake and a curse for mankind."

The Constitution of India also gives no place to distinctions on the basis of caste, religion, sex, colour, etc. Any individual can be installed in the highest national office on the strength of his own merits, personality and achievements, irrespective of his caste or religion. The ideal is not confined to the constitution. In fact, India has evolved many practical forms from time to time. This liberal outlook is the implementation of Mahavira's principle of equality.

Restraint is the basic and significant formula given by Bhagwan Mahavira. This principle provides a solution for many complexities and difficulties. The problems of scarcity and inflation can be solved through restraint.

It has been decided to observe the coming year as the 'Year of Restraint', in the context of the Nirvana celebrations of Bhagwan Mahavira. This would result in benefit to the individual as well as the nation.

In order to come out of the critical situations through which our country is passing today, not only the Jains, but all our countrymen should necessarily pursue the path of restraint. Restraint can be in many forms. Restraint can be exercised in a number of ways with regard to consumption of food, water, clothings, electricity, transport, etc. A person would find solution and relief according to the restraint he exercises. In the present age, the fascination for power and wealth is continuously on the increase. They are such pleasing temptations that it is extremely difficult to save oneself from their influence and protect against it. As for the common people, only that person can be illustrious example who keeps himself away from them.

History always shows that the person who runs after power and wealth is never able to protect his honour and dignity.

A Sanyasi and the Sword

Once there was a *sannyasi* who was constantly engaged in his penance and *sadhana*. The fame of his penance had spread far and wide. The currents of friendship, love and compassion that flowed from the depths of his heart had such a profound influence on the living creatures around him that even the creatures who had been living like enemies from birth forgot their natural animosity and started living in an atmosphere of friendliness.

The fame and the growing influence of the *sannyasi* even shook the throne of Indra (the King of Gods). Indra was in panic and feared that the *sannyasi* might deprive him of his throne. Indra thought that the only way to keep his own throne save was to distract the *sannyasi* from his *sadhana*. He thought of a device. He assumed the form of a Brahmin. He picked up a sword and stopped by the hut of that *sannyasi*. Before procedding further he said, "Oh, *sannyasi!* I wish to go further. What would I do with this sword? Let me leave it with you. I shall take it when I come back."

The *sannyasi* waited long for the Brahmin. But the Brahmin never returned, He never even intended to return, What could the *sannyasi* do with that sword? He just kept it with him, with the result that the animals living around him were frightened. Their feelings changed. The springs of love, compassion and non-violence started drying up. The feelings of violence and counter-violence rose in their hearts. The influence of the *sannyasi* also started wearing out. His penance and *sadhana* were disturbed. His mind strayed. With that, Indra's throne was again safe.

That sword was the symbol of power. He who gets entangled in it, loses everything he has. Indian culture has always laid stress on renunciation, penance and restraint as against possession of power and wealth. If the importance of this is realized in its totality and the basic tenets of Mahavira's philosophy are emphasized and are followed in practice, then only we can pay true tribute to Bhagwan Mahavira. ।

लोककल्याणकारी राज्य और महावीर की जीवन-दृष्टि

डॉ. महेन्द्रसागर प्रचण्डिया

जैन धर्म के उन्नायकों की एक सुदूरगामी परम्परा रही है, जिसे चौबीस तीर्थंकरों द्वारा समय-समय पर अनुप्राणित किया गया है। आद्य तीर्थंकर ऋषभदेव तथा अन्तिम चौबीसवें तीर्थंकर महावीर ऐतिहासिक महापुरुष माने जाते हैं। उनके कल्याणकारी विचारों का विवेचन अनेक प्रकार से हुआ है। यहां लोककल्याणकारी राज्य और महावीर की जीवन-दृष्टि का संक्षेप में विवेचन प्रस्तुत है।

लोक : अर्थ और प्रकार

लोक के अर्थ हैं–भुवन। पुराणानुसार सात लोक हैं, यथा–(1) भूलोक, (2) भुवर्लोक, (3) खर्लोक, (4) गहर्लोक, (5) जनलोक, (6) तपोलोक, (7) सत्यलोक।

वैद्यक के अनुसार लोक के दो विभेद किये गये हैं–(1) स्थावर, (2) जंगम। वृक्ष, लता, तृण आदि स्थावर और पशु, पक्षी, कीट, पतंग तथा मनुष्यादि जंगम हैं।

व्यवस्था और जन-कल्याण

सुव्यवस्थित जीवन चर्या के लिये व्यवस्था की आवश्यकता होती है। स्थापित व्यवस्था का एक व्यवस्थापक होता है। व्यवस्था के प्रति जनता की आस्था बनी रहे, उसका दायित्व व्यवस्थापक पर होता है। आस्था गिरी कि व्यवस्था का विसर्जन सुनिश्चित। इस प्रकार लोक में अनेक बार व्यवस्थायें बनीं-बिगड़ीं किन्तु उनके निर्माण में जन-कल्याण की भावना प्रधानरूप से सदा विद्यमान रही है।

भुवन का उतना भूमि भाग, जितना एक राजा द्वारा शासित हो, वस्तुतः राज अथवा राज्य कहलाता है। राज की व्यवस्था राजतंत्र होती है। राजतंत्र के सुव्यवस्थित संचालन के लिये एक राजा की आवश्यकता होती है। किसी नये राजा के राजसिंहासन पर आरूढ़ होने का संस्कार प्रायः राजतिलक कहलाता है। इसी को राज्यभिषेक भी कहते हैं। राज-व्यवस्था के लिये राजदण्ड का व्यवहार प्रायः अनिवार्य होता है। श्रीसोमदेवसूरि विरचित 'नीतिकाव्यामृत' नामक ग्रंथ में राजा के कर्त्तव्य की चर्चा इस प्रकार हुई है–

'राज्ञोहि दुष्टनिग्रहः
शिष्टपरिपालनं च धर्मः'

अर्थात्–दुष्ट अपराधियों को सजा देना और सज्जन पुरुषों की रक्षा करना राजा का धर्म है। राजा और राज्य के प्रति राज-वासियों के भी कुछ दायित्व होते हैं। राजा और प्रजा वस्तुतः अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है–यथा राजा तथा प्रजा।

इकाई से दहाई

महावीर का दृष्टिकोण इकाई से दहाई को स्पर्श करता है। वे किसी रूप में अनेक से एक तक नहीं आते अपितु एक से अनेक को अनुप्राणित होना मानते हैं। व्यक्ति का विकास विभु बनने तक होता है। राज-तंत्र के विषय में भी यही बात चरितार्थ है। एक श्रावक सधा कि श्रावकों का कुल सध सकता है और कुल से समुदाय, समाज आदि प्रभावित हुआ करते हैं। सच यह है कि–"सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, उसका असर राष्ट्र पर हो।" फिर किसी समुदाय अथवा समाज की इकाई कैसी भी हो? कहा है–"जे गिलाणंपडियरई से धन्ने"–जो, वृद्ध, रोगी और पीड़ितों की सेवा करता है, वस्तुतः वही धन्य है।

वित्त से चित्त मुक्त हो

वित्त से चित्त मुक्त हो तभी जीवन व्रतोन्मुख हो सकता है। जीवन में व्रत से व्यक्ति की साधना आरम्भ होती है। व्रत-साधना अन्तर से उद्भूत हो तो वह शाश्वत होती है। बाहर से थोपा गया व्रत-विधान प्रायः टिकाऊ प्रमाणित नहीं हुआ करता अन्तर से व्रतों के प्रति जागरण संकल्प पर निर्भर करता है। संकल्प के मूल में श्रद्धा है। किसी के प्रति श्रद्धाभाव उसमें संकल्प-शक्ति का संचार किया करता है। हिंसा,

झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह, ऐसे कुविचार हैं जिनसे श्रद्धाभाव उत्पन्न नहीं हो सकते। इन विकारों से विमुक्ति के लिये महावीर ने पंचाणुव्रतों की चर्चा की है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह जैसे उदात्त आत्म-स्वभावों के चिन्तन से व्यक्ति की साधना सम्पन्न हुआ करती है। व्यक्ति सधा कि समाज का संवर्द्धन सम्भव हुआ करता है।

अब प्रश्न है कि क्या अहिंसा किसी परिधि में सीमित की जा सकती है? जब यह आत्मा का स्वभाव है तो इसे हम व्यक्ति द्वारा निर्धारित किसी सीमा-परिधि में किस प्रकार परिसीमित कर सकते हैं। अहिंसा का क्षेत्र निस्सीम है। वह वस्तुतः सर्वभूत है। किन्तु उसके आचरण पक्ष को हम सुविधानुसार सीमित कर सकते हैं। श्रावक की अहिंसा और मुनि की अहिंसा में अन्तर है। मुनिचर्या में सर्वदेशीय व्रत-विस्तार है। वहां राष्ट्र जैसी किसी भी परिधि का व्यवहार नहीं है, वहां सर्वभूत-प्राणीमात्र का हित- चिन्तन है। अणुव्रतों का धारी श्रावक भी किसी राष्ट्र का नागरिक हो सकता है। उसकी चर्या सीमा-रेखाओं में विभाजित की जा सकती है; किन्तु मुनि अथवा आचार्य का क्षेत्र निस्सीम है। वह वस्तुतः किसी राष्ट्र का होता हुआ भी अन्तरराष्ट्र का होता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि श्रावको का संघ और संघकुल, समाज तथा उसका लोककल्याणकारी राज्य और महावीर की जीवन-दृष्टि वृहद्रूप देश बन सकता है। व्यवस्था की दृष्टि से उसे हम एक राष्ट्र की संज्ञा दे सकते हैं। राष्ट्र का शासन उसके संविधान के द्वारा हुआ करता है। भगवान् महावीर की दृष्टि में किसी भी राष्ट्र का संविधान सम्पूर्ण नहीं हो सकता। विधान है तो परिधि का होना अनिवार्य है और यदि वह सम्पूर्ण नहीं है तो निश्चय ही वहां जीवन में हिंसा है। उनका राष्ट्रीय और सामाजिक आदर्श रहा है—"स्वयं जीओ और दूसरों को जीने दो।" यह वस्तुतः किसी भी राष्ट्र के लिये कितनी सरल और स्वाभाविक व्यवस्था है। इस प्रकार की व्यवस्था में व्यक्ति का हृदय हिन्द-महासागर बन अपनी विशालता, सहृदयता और परोपकारिता जैसी उदात्त वृत्तियों से लहरा उठेगा। यहां पारस्परिक उत्थान के लिये तो अवकाश है, किन्तु पतन के लिये कोई कार्यक्रम नहीं। इसीलिये जैन दृष्टि में किसी भी जन-कुल को हम सीमित नहीं कर सकते।

श्रम और संकल्प की अनिवार्यता

आत्म-स्वभाव का एक पक्ष अहिंसा है, दूसरा सत्य और क्रमशः अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। महावीर के राज में अपरिग्रहवाद का वातावरण सभी को सद्भाव में रहने के लिये आमंत्रित करेगा। ऐसी राजकीय व्यवस्था में श्रम और संकल्प की अनिवार्यता होगी। प्रत्येक श्रमी को स्वार्जित कर्मानुसार अपना पेट भरने के लिये यथेष्ट खाद्य सामग्री उपलब्ध होगी किन्तु उसे पेटी भरने के लिये कोई अवसर न मिलेगा।

श्रम से प्रसूत जागतिक सुविधा का सोद्देश्य उपयोग हुआ करता है। प्रमाद-जन्य उपलब्धि से व्यक्ति में विकारों का संचार हो उठना अत्यन्त स्वाभाविक है। विकारों का शिकार हुये बिना व्यक्ति न तो आत्मार्थी होगा और नाहीं परमार्थी।

सर्वोदय न कि वर्गोदय

महावीर की राज्य-व्यवस्था में सभी का उदय सम्भव है। व्यक्ति विशेष का चरमोत्कर्ष उसके पड़ोसी के लिये घातक नहीं अपितु उसकी षट्कर्मों से अनुप्रमाणित दिनचर्या दानव्रत से समता तथा सहअस्तित्व का संचार करती है। प्राणी मात्र के प्रति नागरिक का दृष्टिकोण उदार तथा समतामूलक हो तो फिर इससे बड़ा साम्यवाद और क्या हो सकता है? वहां वस्तुतः सर्वोदय होगा, वर्गोदय नहीं, वहां प्राणी-पोषण होगा, समाज-शोषण नहीं। ऐसी स्थिति में वैचारिक विरोध हो सकता है, व्यक्ति-विरोध नहीं। विपरीत परिस्थिति में भी व्यक्ति का दृष्टिकोण मध्यस्थतापूर्ण परिलक्षित होगा :

सत्वेषु मैत्री, गुणिषु प्रमोदं,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्
मध्यस्थभावं विपरीत वृत्तौ,
सदा ममात्मा, विद्धातुदेवः।

यहां दाता-विधाता नहीं, स्वयं का सम्यक् पुरुषार्थ ही व्यक्ति के उत्कर्ष का मुख्याधार है। ऐसी राज-व्यवस्था में व्यक्ति की आस्था अपने श्रम, समता और स्वतंत्रता पर आधृत होगी।

क्रियामुक्त ज्ञान

आचार्य उमास्वामि ने स्वविरचित 'तत्वार्थसूत्र' में स्पष्ट कहा है कि "सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः।" दर्शन क्या है? श्रद्धा-विश्वास (Right belief), ज्ञान विवेक (Right knowledge) और चारित्र्य से तात्पर्य है—आचरण (Right conduct) जो व्यक्ति-विकास में परम आवश्यक है। क्रियामुक्त ज्ञान ही श्रेष्ठ है। क्रिया से रहित ज्ञान लंगड़ा है, भार है।

गणित की भाषा में

क्रिया(-) ज्ञान= रूढ़ि, क्रिया (+) ज्ञान= पुरुषार्थ।

मैं मानता हूं कि पुरुषार्थ करने के लिये किसी आस्था की अपेक्षा हुआ करती है। कार्य के प्रति विश्वास, उसके प्रति पूर्ण ज्ञान और तज्जन्य क्रियाचरण वस्तुतः जागतिक और जागतेतर उपलब्धियों की प्राप्ति में परम सहायक हैं।

आत्मीय अनुशासन

इस प्रकार महावीर की दृष्टि में लोक-कल्याणकारी राज्य मात्र परिधियों का पोषक नहीं हो सकता, वहां जीवन व्रत-साधना से परिमार्जित होगा। शारीरिक शासन की अपेक्षा आत्मीय अनुशासन से व्यक्ति-व्यक्ति में समता, सौहार्द तथा स्वतंत्रतापरक प्रतीतियां होंगी। वहां पोषण होगा, शोषण नहीं। "स्वयं जीओ और दूसरों को जीने दो" की भावना का साकार उदाहरण होगा। बड़ी बात यह कि वहां प्रत्येक व्यक्ति में सुख-दुःख का सम्यक् बोध होगा।

(साभार)

तीर्थंकर महावीर
आज के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. कुसुम लूनिया

मनुष्य की असीम इच्छाएं और इनकी पूर्ति के लिए अन्याय, अत्याचार एवं अनुचित साधनों का बढ़ता प्रयोग ही भ्रष्टाचार है जो किसी भी राष्ट्र की प्रगति को दीमक की तरह चाट जाता है। आज 'इच्छा परिमाण'' का सिद्धान्त गरीब-अमीर की खाई पाटने एवं भ्रष्टाचार निरोधन का अमोध अस्त्र साबित हो सकता है।

सौरमण्डल का सुन्दरतम ग्रह पृथ्वी है। इसी धरा पर आज से 2613 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला त्रयोदसी (27 मार्च 598 ई.पू) 'वैशाली' के 'क्षत्रिय कुण्डग्राम' में वर्धमान महावीर का जन्म हुआ। उन्होंने अपना समग्र जीवन आत्मकल्याण एवं जनकल्याण को समर्पित कर दिया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार ''जिन पुनीत महात्माओं पर भारतवर्ष उचित गर्व कर सकता है उनमें अग्रगण्य हैं भगवान महावीर।'' ऐसे महापुरुषों की प्रेरणाओं और विद्वत्जन के प्रयासों से यह दुनिया शानदार होती गई, किन्तु उनके हजारों वर्ष बाद आज, समाचारपत्रों की सुर्खियां हमें चिन्तन हेतु मजबूर करती हैं।

लंदन की 'ईस्ट एंजिलिया यूनिवर्सिटी' की नवीनतम शोध के अनुसार मानवनिर्मित चार गैसें ओजोन की परत के लिए गम्भीर खतरा बतायी गयी है। ग्लोबल वार्मिंग से ग्लेशियर पिघल रहे हैं, और समुद्र विषैले होते जा रहे हैं। धरती कांप रही है, पर्वत थर्रा रहे हैं। आतंकवाद इतना बढ़ गया है कि विमान तक लापता हो जाते हैं और दस-बारह देशों के सिपहसालार भी मिलकर उसे ढूंढ नहीं पाते। अत्याधुनिक हथियारों का जखीरा और अनगिनत मिसाइलें समग्र मानवजाति को समाप्त करने को तैनात हैं। स्वार्थ के वशीभूत हो भाई-भाई को ही भयंकर क्षति पहुँचा रहे हैं। क्यों बढ़ रही हैं ऐसी परिस्थितियां?

ईसा से पूर्व चीन के कन्फयूशस, ईरान के जरथुस्त्र, यूनान के सुकरात तथा पाइथागोरस एवं भारत के गौतम बुद्ध तथा श्रमण महावीर आदि ने अपना ध्यान बाह्य प्रकृति के बजाय मनुष्य की आत्मा के अध्ययन पर केन्द्रित किया और शाश्वत विकास का मार्ग सुझाया। परन्तु, धीरे-धीरे वे महान् सन्देश विस्मृति की धारा में बहते गये।

वर्तमान में विश्व को विनाश से बचाने के लिए महावीर के सिद्धान्तों को भी स्मरण करना होगा। महावीर की स्मृति का अर्थ है– पराक्रमी होना, सत्यशोध के लिए विनम्र और उदार दृष्टिकोण अपनाना और संयम की शक्ति का स्फोट करना। तीर्थंकर महावीर ने धर्म के प्राणतत्व के रूप में अहिंसा को स्थापित किया। उन्होंने कहा–'पणया वीरा महाविहि' (1/37 आचारांग) अर्थात- अहिंसा वीरों का महापथ है। इस पथ के पथिक को सिर्फ मनुष्य की रक्षा ही नहीं करनी होती, बल्कि पृथ्वीकाय, अपकाय, तेजसकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय एवं त्रसकाय समेत समग्र जीव-जगत को अभयदान देना होता है। अगर महावीर की बात को माना गया होता और अनियंत्रित डायनामाइट लगा-लगाकर वसुधा को खोखला न किया होता, तो सम्भवतः उत्तराखण्ड जैसी त्रासदी नहीं झेलनी पड़ती।

उनके 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' के संदेश को पुनर्जीवित कर जन-जन तक पहुँचाना होगा जिससे पृथ्वी, पानी, अग्नि (बिजली), वायु, वनस्पति एवं जीव जगत का अंधाधुंध अपव्यय एवं प्रदूषण रूक सके और सुनामी एवं सूखे जैसी समस्याओं से बचा जा सके। महावीर की अंहिसा की शक्ति से अभिप्रेरित हो, उनके सिद्धान्तों को आचरित कर महात्मा गांधी ने अंहिसात्मक नीतियों द्वारा भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से आजादी दिलाई। आज भी इसी अंहिसा की शक्ति से विश्व को आतंकवाद, भारत को नक्सलवाद और नेपाल को माओवाद की व्याधि से मुक्त कराया जा सकता है।

अंहिसा आधारित महावीर का स्वास्थ्यशास्त्र स्वस्थ होने का अचूक नुस्खा है। उनके अनुसार आत्मिक स्वास्थ्य में बाधा डालने वाले तत्व हैं राग, द्वेश, मोह, क्रोध, मान, माया, लोभ, भय, शोक, घृणा और कामवासना - जो शरीर और मन को रूग्ण बनाते हैं। विभिन्न पद्धतियों से इनकी चिकित्सा ही स्वास्थ्य का मूल आधार है, जिसमें शाकाहार भी सहायक है।

'अनेकान्त' और 'स्याद्वाद' भी उनकी अद्भुत देन है। प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण-धर्म होते हैं। उसे अनेक दृष्टिकोणों से देखना और जानना ही 'अनेकान्त' है। 'स्याद्वाद' अनेकान्त चिन्तन की अभिव्यक्ति शैली है। इस प्रकार सत्य के सभी पहलुओं को स्वीकारते हुए वैचारिक विभिन्नताओं के समन्वय से 'सर्व-राष्ट्र-समभाव', 'सर्व-धर्म-समभाव' एवं 'सर्व-व्यक्ति-समभाव' का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत होता है। सन् 2014 के लोकसभा चुनावों के पश्चात यदि सभी सांसदों को 'अनेकान्त और स्याद्वाद' का प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाए तो निःसंदेह भारतीय संसद सुचारू चलकर लोकतन्त्र का नया इतिहास गढ़ सकती है।

'अपरिग्रह' और 'इच्छा-परिमाण' सिद्धान्त के माध्यम से महावीर ने मानव को सुखी

... शेष पृष्ठ 18 पर

अपने अहं के विजेता महावीर

डॉ. एस. राधाकृष्णन्

महावीर में हमें एक ऐसे व्यक्ति का आदर्श मिलता है जिसने सांसारिक वस्तुओं का परित्याग कर दिया था, जो भौतिकता के बन्धनों में नहीं जकड़ा था, वरन् जो अपनी आत्मा की आन्तरिक गरिमा को प्राप्त करने में समर्थ था। इस आदर्श तक हम कैसे पहुँच सकते हैं? किस तरह हम इस आत्म-दर्शन, इस आत्म-नियंत्रण की स्थिति को पा सकते हैं? हमारे धर्मशास्त्र हमें बताते हैं कि यदि हम आत्मा को जानना चाहते हों, तो श्रवण, मनन, निदिध्यासन का अभ्यास करें।

800 से 200 ई0पू0 का काल इतिहास की धुरी माना जाता है। दूसरे शब्दों में, विश्व की चिन्तना की धुरी प्रकृति के अध्ययन से हटकर मनुष्य के जीवन के अध्ययन पर आ गई। चीन में लाओ-त्से और कनफ्यूशस, भारत में उपनिषदों के द्रष्टा-ऋषि, महावीर और गौतम बुद्ध; ईरान में जरथ्रूस्त्र; जूडिया में महान् पैगम्बर लोग; यूनान में पाइथागोरस, सुकरात और प्लेटो जैसे दार्शनिक; इन सभी महापुरुषों ने बाह्य प्रकृति से अपना ध्यान हटाकर मानव-आत्मा के अध्ययन में लगाया।

इतिहास के इन महापुरुषों में से एक महावीर भी थे। उनको 'जिन' अर्थात् विजेता कहा जाता है। उन्होंने राज्य नहीं जीते, बल्कि अपनी आत्मा को, अपने अहं को जीता। उनको 'महावीर' कहा जाता है, परन्तु वह सांसारिक युद्ध को अपना पराक्रम दिखानेवाले वीर नहीं थे, वरन् आन्तरिक जीवन के द्वन्द्व में वीरता दिखाने वाले महावीर थे। कृच्छ् साधना, संयम्, आत्म-शुद्धि और सहानुभूति की निरंतर प्रक्रिया के द्वारा उन्होंने अपने दैवी-मानव की स्थिति प्राप्त कर ली। उनका जीवन अन्य लोगों के लिए भी, जो आत्मजित् बनने के इसी आदर्श का पालन करना चाहते हैं, प्रेरणाप्रद है।

यह देश अपने इतिहास के आदिकाल से लेकर आज तक इसी महान् आदर्श का पोषक रहा है। जब हम मोहनजोदाड़ो और हड़प्पा के काल से लेकर इस आधुनिक काल तक के प्रतीकों, मूर्त्तियों और अन्य अवशेषों को देखते हैं, तक हमें उस परंपरा की स्मृति हो आती है कि जो मनुष्य आत्मा की श्रेष्ठता स्थापित कर लेता है और भौतिकता से अधिक आध्यात्मिकता को महत्त्व देता है, वही आदर्श हमारे देश के धार्मिक जगत् को चार या पांच सहस्राब्दियों से अनुप्राणित रखता है।

जिस महान् कथन के लिए उपनिषद् संसार में विख्यात हैं, वह है : 'तत् त्वमसि' अर्थात् 'वह तुम हो।' इस कथन में इस बात पर जोर दिया गया है कि मानव-आत्मा में देवत्व प्राप्त करने की शक्यता है। उपनिषद् हमें बताते हैं कि आत्मा को देह मत समझो, क्योंकि देह का नाश हो सकता है; इसे मन

भी मत जानो, क्योंकि मन में परिवर्तन हो सकता है, उसको चाहे जिस सांचे में ढाला जा सकता है; बल्कि आत्मा तो देह के भूतावशेषों या मन की अस्थिरताओं से भी कहीं अधिक श्रेष्ठ है। वह ऐसी चीज है जो हर आदमी के पास है; एक तरह से वह अगम्य-अदम्य है; उसको किसी पदार्थ या विषय का रूप नहीं दिया जा सकता। ऐसा नहीं कि मनुष्य किसी ब्रह्माण्डीय वात्याचक्र में संसार के ऊपर है। जब तक हम मानव आत्मा की अन्तर्मुखता को, आत्मनिष्ठता के सिद्धान्त को समझ सकने के योग्य नहीं हो जाते, तब तक हम अपने-आपको पा नहीं सकते, हम अपनी खुदी को गवां बैठेंगे। हममें से अधिकांश लोग हमेशा दुनियादारी के गोरख-धन्धें में पड़े रहते हैं, भौतिक सुखों के संग्रह में अपना सारा समय तथा सारी शक्ति लगा देते हैं। स्वास्थ्य, धन, वैभव, मकान और ज़ायदाद ये जो सांसारिक चीजें हैं, उन्हीं में हम अपने को खो देते हैं हम खुद उनके स्वामी नहीं बनते, उनको अपना स्वामी बन जाने देते हैं। ऐसे ही लोग अपनी आत्मा का हनन करने वाले होते हैं। उनको 'आत्महनो जनाः' कहा जाता है। यही कारण है कि हमारे देश में सदा से यह कहा जाता रहा है आत्मा के स्वामी बनो।

सभी विज्ञानों में आत्म-विज्ञान श्रेष्ठ है। 'अध्यात्मविद्या विद्यानाम्।' उपनिषद् कहते हैं 'आत्मानं विद्धि' अपने आपको जानो। शंकराचार्य आत्मिक जीवन के लिए 'आत्म-अनात्म-वस्तु विवेक' को एक अनिवार्य शर्त मानते हैं। क्या आत्म है और क्या अनात्म, इसमें भेद करने का विवेक हमें होना चाहिए। अपनी आत्मा पर अधिकार करने के सिवाय इस दुनिया में दूसरी कोई चीज बड़ी नहीं है। इस तरह विभिन्न लेखकों ने हमें बताया है कि सही अर्थों में आदमी वह है जो सांसारिक सम्पदा का उपयोग आत्मा की स्वाभाविक गरिमा प्राप्त करने में करता है। उपनिषद् के कई श्लोकों में यह कहा गया है कि चाहे पति हो या पत्नी या सम्पत्ति, ये सब, व्यक्ति के आत्म-दर्शन में आत्म-साक्षात्कार में सहायक हो सकते हैं। जो आदमी संयम-नियम के पालन और निष्कलंक जीवन से उच्चतम वह 'अर्हत्' है। 'अर्हत्' पुनर्जन्म या कालाधीनता के बंधन से मुक्त हो जाता है।

1. महावीर में हमें एक ऐसे व्यक्ति का आदर्श मिलता है जिसने सांसारिक वस्तुओं का परित्याग कर दिया था, जो भौतिकता के बन्धनों में नहीं जकड़ा था, वरन् जो अपनी आत्मा की आन्तरिक गरिमा को प्राप्त करने में समर्थ था। इस आदर्श तक हम कैसे पहुँच सकते हैं? किस तरह हम इस आत्म-दर्शन, इस आत्म-नियंत्रण की स्थिति को पा सकते हैं? हमारे धर्मशास्त्र हमें बताते हैं कि यदि हम आत्मा को जानना चाहते हों, तो श्रवण, मनन, निदिध्यासन का अभ्यास करें। भगवद्गीता में कहा है : 'तद् विद्धि प्राणि-पातेन परिप्रश्नेन सेवया।' महावीर ने जब दर्शन, ज्ञान और चारित्र की बात कही, तब वह इन्हीं तीन सिद्धान्तों पर जोर दे रहे थे। हमको इस बात पर विश्वास होना चाहिए, श्रद्धा होनी चाहिए कि सांसारिक वस्तुओं से भी श्रेष्ठ कोई चीज है। केवल श्रद्धा से, अविवेकपूर्ण अन्धश्रद्धा से काम नहीं चलेगा। हमें मनन करना होगा, ज्ञान प्राप्त करना होगा। चिन्तन-मनन के द्वारा हम श्रद्धा की उपज को ज्ञान की उपज में बदल सकते हैं। लेकिन, मात्र सैद्धान्तिक ज्ञान भी काफी नहीं है। 'वाक्यार्थज्ञानमात्रेण नामृतम्' अर्थात् धर्मशास्त्रों को पढ़ने मात्र से हम शाश्वत जीवन नहीं प्राप्त कर सकते। हमें इन सिद्धांतों का निजी जीवन में समावेश करना आवश्यक है। चरित्र या आचरण भी उतना ही आवश्यक है। हम आरम्भ करते हैं दर्शन, प्रणिपात या श्रवण से। उसके बाद हम ज्ञान, मनन या परिप्रश्न तक आते हैं तत्पश्चात् हम निदिध्यासन, सेवा या चरित्र तक पहुंचते हैं। जैसा कि जैन तीर्थंकरों ने कहा है, ये चीजें अत्यावश्यक हैं।

2. चरित्र या सदाचार के क्या सिद्धांत हैं? जैन आचार्य हमसे कई प्रतिज्ञाएं करने को कहते हैं। प्रत्येक जैन को पांच प्रतिज्ञाएं करनी पड़ती हैं : किसी की हिंसा नहीं करूंगा, असत्य नहीं बोलूंगा, जो वस्तु दी नहीं जाएगी उसे नहीं लूंगा, ब्रह्मचर्य-पालन करूंगा और बाह्य वस्तुओं का सुख त्याग दूंगा। परंतु, इन सबसे महत्त्वपूर्ण है अहिंसा की प्रतिज्ञा, किसी भी प्राणी को क्षति नहीं पहुंचाने की प्रतिज्ञा। कुछ जैन तो अहिंसा को इस सीमा तक ले जाते हैं कि वे खेती करना तक छोड़ देते हैं; क्योंकि हल जोतने से धरती की छाती विदीर्ण होती है और कीड़े-मकोड़ों की हत्या होती है। इस संसार में रहते हुए हम हिंसा से पूर्णतः बच सकें, यह असम्भव है। जैसाकि महाभारत में कहा गया है : ***'जीवो जीवस्य जीवनम्।'***

हमसे आशा की जाती है कि हम अहिंसा का दायरा बढ़ावें—'यत्नात् अल्पतरा भवेत'। अपने आत्म-प्रयत्न से हमें बल-प्रयोग का दायरा घटाना चाहिए और आग्रह या अनुनय का दायरा बढ़ाना चाहिए। इस प्रकार अहिंसा ही वह आदर्श है जिसे हमने अपने सामने रखा है।

3. यदि हम अहिंसा के आदर्श को अपना लें तो उसके फलस्वरूप हम एक दूसरे जैन-सिद्धान्त—'अनेकान्तवाद' तक पहुंचेंगे। जैन-दर्शन कहता हैं कि 'केवल-ज्ञान' हमारा आदर्श है। लेकिन जहां तक हमारा सम्बन्ध है, हम केवल खण्ड-सत्य को ही जानते हैं। वस्तु 'अनेकधर्मात्मकम्' है—उसके अनेक धर्म या पक्ष हैं; वह जटिल है—उसमें बहुत-से गुण हैं। लोग वस्तु के कभी इस पक्ष को जानने की कोशिश करते हैं और कभी उस पक्ष को; परन्तु उनके विचार आंशिक, अस्थायी या प्रयोगात्मक और परिकल्पनात्मक होते हैं। इन विचारों में पूर्ण सत्य के दर्शन नहीं हो सकते। सत्य का दर्शन नहीं हो सकता। सत्य का दर्शन तो केवल वही आत्माएं कर सकती हैं जिन्होंने अपनी तृष्णाओं पर काबू पा लिया हो। इससे एक ऐसी भावना जन्म लेती है, जिससे

हम विश्वास करने लगते हैं कि जिसे हम ठीक समझते हैं, वह अंततः शायद ठीक न हो। यह मानवीय परिकल्पनाओं, निराधार अनुमानों की अनिश्चितता से हमें परिचित कर देती है। इससे हमारे मन में यह बात बैठ जाती है कि हमारे दृढ़ से दृढ़ संकल्प भी बदल सकते हैं या क्षणिक सिद्ध हो सकते हैं। एक दन्तकथा प्रचलित है जिसमें छह अन्धे आदमी एक हाथी के बारे में अटकलें लगाते हैं। एक अन्धे की पकड़ में हाथी के कान आए, उसने कहा कि यह तो सूप है। दूसरा अन्धा हाथी के पैर से लिपट गया और बोला यह तो खम्भा है। लेकिन उनमें से हर एक के हाथ केवल आंशिक सत्य लगा। पूर्ण सत्य को वह अंशतः ही जान पाया। किसी भी चीज के भिन्न-भिन्न पहलू आपस में विरोधी ही हों, यह जरूरी नहीं। वे आपस में उस तरह से सम्बन्धित नहीं हैं जिस तरह प्रकाश अंधकार से सम्बन्धित है। उनका आपसी सम्बन्ध वैसा ही है जैसा किसी 'स्पेक्ट्रम' (रंगावलि) के विभिन्न रंगों का एक-दूसरे से होता है। उनको परस्पर-विरुद्ध न मानकर केवल परस्पर-विपरीत मानना चाहिए। वे आपस में भिन्न हो सकते हैं, पर विरोधी नहीं। वे सत्य के वैकल्पिक पाठ हैं।

4. आज विश्व एक नये जन्म की प्रसव-पीड़ा भोग रहा है। हम सबका लक्ष्य तो एक विश्व है, परन्तु हमारे युग का लक्षण एकता नहीं, विभेद बन गया है। विश्व के ढांचे में तो हममें से कई लोगों के लिए यह प्रलोभन है कि हम एक को गलत और दूसरे को सही समझें, और जिसे गलत समझें, उसका प्रत्याख्यान करें; लेकिन इनको विकल्प मानना ही उचित है—एक प्रकार से ये एक मूलभूत सत्य के परिवर्तनशील पक्ष हैं। सत्य के किसी एक पक्ष पर जरूरत से ज्यादा जोर देना हाथी के बारे में अन्धों की मान्यता से मिलती-जुलती चीज होगी। दन्तकथा के अन्धों में से हरेक ने हाथी के जिस अंग को छुआ, उसी के अनुरूप सारे हाथी को नाम दिया। इसी तरह हम भी खण्ड सत्य को ही पूर्ण-सत्य मान लेने की भूल कर सकते हैं।

मानव-कल्याण के लिए व्यक्तिगत स्वातंत्र्य और सामाजिक-न्याय दोनों अत्यावश्यक हैं। हम चाहें तो एक को अतिरंजित कर सकते हैं या दूसरे को अवमूल्यित। परन्तु आदमी तो जैन-मत के अनेकान्तवाद, सप्तभंगीनय, या स्याद्वाद् की धारणा का अनुसरण करता है, वह उस प्रकार का सांस्कृतिक साधारणीकरण या 'रेजिमेण्टेशन' नहीं स्वीकार करेगा। उसके और उसके प्रतिपक्षी के विचारों में से किसके विचार सही हैं और किसके गलत, इसको समझने का विवेक उसके पास होगा, फिर वह दोनों प्रकार के विचारों में समन्वय करने की चेष्टा करेगा। हमें ऐसा ही रुख अपनाना चाहिए। इसीलिए आत्म-नियंत्रण, अहिंसा के अभ्यास, सहिष्णुता तथा दूसरों के दृष्टिकोण के प्रति सहानुभूति की आवश्यकता है। ये कुछ शिक्षाएं हमें महावीर के महान् जीवन से प्राप्त हो सकती हैं।

क्रमशः पृष्ठ 16 से...

बनने का मन्त्र दिया। आवश्यकताएं सीमित रखना, लालसा पर अंकुश और संग्रह की सीमा बांधना, यह 'परिग्रह-परिमाण व्रत' है। मनुष्य की असीम इच्छाएं और इनकी पूर्ति के लिए अन्याय, अत्याचार एवं अनुचित साधनों का बढ़ता प्रयोग ही भ्रष्टाचार है जो किसी भी राष्ट्र की प्रगति को दीमक की तरह चाट जाता है। आज 'इच्छा परिमाण' का सिद्धान्त गरीब-अमीर की खाई पाटने एवं भ्रष्टाचार निरोधन का अमोघ अस्त्र साबित हो सकता है।

'ब्रह्मचर्य अथवा स्वदार-सन्तोष' के सिद्धान्त को स्थापित करते हुए उन्होंने बताया कि व्यक्ति अपनी इन्द्रियों को, कामनाओं और वासनाओं को नियंत्रित करे। वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में चार वर्षीय बच्ची से लेकर सत्तर वर्षीय महिला की सुरक्षा एक यक्ष-प्रश्न बना हुआ है। निश्चित रूप से इसका समाधायक हो सकता है 'स्वदार-सन्तोष व्रत' 'अर्थात्—अपने जीवन साथी से ही मर्यादित सेक्स- व्यवहार में सन्तोष रखना।'

'जीव-साम्य' विषयक विचार भी महावीर की क्रान्तिकारी देन है। आपने कहा—'णो हीणे, णो अइरत्ते, णो पिहए' (3/49 आचारांगद्ध न कोई हीन है, न कोई अतिरिक्त है न कोई अस्पृष्य है। सब जीवों में आत्मा समान होती है। उन्होंने कर्मवाद की विलक्षण व्याख्या करते हुए कहा कि मनुष्य जाति एक है। व्यक्ति जन्म से नहीं, कर्म से महान बनता है तथा अपने अच्छे-बुरे कर्म एवं उसके परिणाम का वह स्वयं जिम्मेदार होता है। अतः मनुज अपने सत्कर्मों द्वारा समाज एवं आत्म-उत्थान में योगदान दे सकता है। यह बात भली-भांति समझ में आ जाए तो आरक्षण, जातीय दंगे और ऑनर किलिंग जैसी समस्याएं समाधान पा सकती हैं और भारत से जातिवाद का दानव दफा हो सकता है।

वास्तव में देखा जाए तो महावीर को पहचानने का अर्थ है—स्थूल से सूक्ष्म की ओर प्रयास, महावीर को जानने का अर्थ है—अंधकार से प्रकाश की ओर प्रयाण। कुल मिलाकर एक वाक्य में कहें तो महावीर ऐसे महापुरुष हुए जिन्होंने आत्मा के अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त बल और अनन्त वीर्य को उद्घाटित करके भक्त को भी भगवान बनने का आह्वान किया। उनके सिद्धान्त 'सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय' हैं, इन्हें हृदयंगम कर प्रत्येक व्यक्ति विश्व का सुयोग्यतम नागरिक बन सकता है। इस प्रकार वर्तमान विश्व की ज्वलंत समस्याएं सुलझ सकती हैं।

ऐसे महामनीषियों को जानने और मानने का सार तत्व यही है कि अपने भीतर का ज्ञानदीप प्रज्ज्वलित कर दीप से दीप जलाते हुए समग्र लोक को आलोकित करने का अध्यवसाय करें, तभी महावीर के स्मरण की सार्थकता होगी।

बी-66, सूर्य नगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)

अहिंसक क्रांति के पुरोधा भगवान महावीर

प्रो. सुमेरचन्द जैन

भगवान महावीर का जन्म इसी युग के पूर्वार्द्ध में ई.पू. 599 में हुआ। उनका जन्म कुछ ऐसे विषम समय में हुआ जब चारों ओर आक्रन्दन था। शोषण, अन्याय और अत्याचार का बोलबाला था। जातिवाद, दास प्रथा, नारी वर्ग के अपमान और मूक पशुओं के बलिदान का वह बर्बर समय था। हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा था।

भगवान् महावीर का जन्म एक राजघराने में हुआ। अतः ऐश्वर्य और वैभव-विलास की वहां कोई कमी नहीं थी। किन्तु भगवान महावीर जैसे ही बाल्यभाव से मुक्त होकर यौवन में प्रविष्ट हुए, धर्मान्धता को और सामाजिक परम्पराओं को देखकर करुणा से कांप उठे। उनका संवेदनशील हृदय प्राणी कल्याण के लिए मचल उठा। सर्वप्रथम उन्होंने अपने आप को साधा। 30 वर्ष की तरुण अवस्था में प्रवजित हो गए। सभी सांसारिक बंधनों एवं प्रभावों से मुक्त होकर उन्होंने साढ़े बारह वर्ष तक दीर्घ साधना की। वे इस साधनाकाल में किसी से बोलते नहीं। उपदेश नहीं देते। किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखते। अधिकतर एकान्त में ध्यान-मग्न रहते और लम्बी-लम्बी तपस्या करते।

साढ़े बारह वर्ष बाद उनकी साधना सफल हुई। एक अनूठी निष्पत्ति हुई। उन्होंने केवल ज्ञान पाया। जीवन का परम सत्य उपलब्ध हुआ। तब उन्होंने जन-जन के कल्याण और आत्म-विकास के लिए प्रवचन किया। समता और शांति का संदेश दिया।

अहिंसक क्रांति के पुरोधा

भगवान महावीर ने 'अहिंसा परमो धर्म' की संस्थापना की। महावीर के समय हिंसा का बड़ा वीभत्स वातावरण था। धर्मान्धता का गहरा कुहासा छाया हुआ था। धर्म और भगवान के नाम पर देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए लोग मूक-प्राणियों की उनकी बलि चढ़ा देते थे और उससे सुख, सुरक्षा और सम्पत्ति की कामना करते थे। गज, अश्व और यहां तक कि कभी-कभी मनुष्य को भी अपने सुख-सौभाग्य के लिए होम कर दिया जाता था। पशु-पक्षियों की बलि के पीछे मनुष्य की जिह्वा-लोलुपता और सामिष लिप्सा भी छिपी हुई थी। महावीर ने धर्म के नाम पर होने वाली इस जघन्य हिंसा, आडम्बर का उग्र विरोध किया एवं उसके प्रतिरोध में आयी यातनाओं को समता भाव से सहा। उन्होंने कहा—''सब प्राणी सुखइच्छुक हैं, दुःख किसी को काम्य नहीं, सबको जीवन प्रिय है, मरना कोई नहीं चाहता।'

ऐसी स्थिति में किसी के प्राणों का अपहरण करना, उस पर प्रहार करना, उसे आघात पहुंचाना, उस पर शासन चलाना और उसका शोषण करना हिंसा है, महान पाप है। किसी प्राणी की हत्या नहीं करना, परिघात न पहुंचाना, विवश न करना, उसका अधिकार न छीनना शाश्वत व ध्रुव धर्म है। इस सिंहनाद का भी बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। चिन्तन में एक नया परिवर्तन आया और अहिंसा परमो धर्म का नारा गूंज उठा।

महावीर कालीन समय बड़ा बर्बर था। दासप्रथा और नारी उत्पीड़न का खुला बोलबाला

था। क्रीत दास और नारी के साथ पशु जैसा ही क्रूर व निष्ठुर व्यवहार किया जाता था। भगवान् महावीर ने दास प्रथा को समाप्त किया और नारी को भी पुरुष के समान ही प्रतिष्ठित किया। आत्मविकास और आत्म-कल्याण के लिए उसे पूरा अवकाश दिया।

अहिंसक क्रांति के सूत्र

राग और द्वेष से मुक्त होना अहिंसा है। सब जीवों के प्रति संयम करना, समभाव रखना अहिंसा है। समानता का भाव सामुदायिक जीवन में विकसित होता है तब अहिंसक क्रांति घटित होती है। महावीर ने अहिंसक क्रांति के लिए जनता को ये सूत्र दिए–

1. किसी का वध मत करो।
2. किसी के साथ बैर मत करो, जो दूसरों के साथ वैर करता है, वह अपने बैर की शृंखला को और प्रलम्ब कर देता है।
3. सबके साथ मैत्री करो। अहिंसा के इन सूत्रों का मूल्य वैयक्तिक था। महावीर ने सामाजिक संदर्भ में भी अहिंसा के सूत्र प्रस्तुत किए।
4. उस समय दास प्रथा चालू थी। सम्पन्न मनुष्य विपन्न मनुष्य को खरीदकर दास बना लेता था। महावीर ने इस हिंसा के प्रति जनता का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने एक सूत्र दिया–दास बनाना हिंसा है, इसलिए किसी को दास मत बनाओ।
5. उस समय के पुरुष स्त्रियों और शासक वर्ग शासितों को पराधीन रखना अपना अधिकार मानते थे। महावीर ने इस ओर जनता का ध्यान खींचा कि दूसरों को पराधीन बनाना हिंसा है। उन्होंने अहिंसा का सूत्र दिया–दूसरों की स्वाधीनता का अपहरण मत करो।
6. उस समय उच्च और नीच–ये दो जातियां समाज-व्यवस्था द्वारा स्वीकृत थे। उच्च जाति नीच जाति से घृणा करती थी। उसे अछूत मानती थी। महावीर ने इस व्यवस्था को अमानवीय प्रतिपादित किया। उन्होंने कहा–जाति वास्तविक नहीं है। जाति-व्यवस्था परिवर्तनशील है, काल्पनिक है। इसे शाश्वत का रूप देकर हिंसा को प्रोत्साहन मत दो। किसी मनुष्य से घृणा मत करो, उन्होंने सब जाति के लोगों को अपने संघ में सम्मिलित किया तथा 'मनुष्य जाति एक है' इस आन्दोलन को गतिशील बना दिया।
7. उस समय स्वर्ग की प्राप्ति के लिए पशु की बलि दी जाती थी। महावीर ने कहा–स्वर्ग मनुष्य का उद्देश्य नहीं है, उसका उद्देश्य है–निर्वाण–परमशांति। पशुबलि से स्वर्ग नहीं मिलता। जो पशुबलि देता है, वह मूक पशुओं की हिंसा कर अपने लिए नरक का द्वार खोलता है।
8. उस समय माना जाता था कि युद्ध में मरने वाला स्वर्ग में जाता है। महावीर ने इसकी अवास्तविकता का प्रतिपादन करते हुए कहा–युद्ध हिंसा है। वैर से वैर बढ़ता है। उससे समस्या का समाधान नहीं होता।
9. आक्रमण मत करो। मांसाहार और शिकार का वर्जन करो।

स्पष्ट है कि भगवान महावीर ने अहिंसा को प्रथम धर्म इसलिए कहा कि उसमें समाज की तत्कालीन समस्याओं का समाधान निहित था। वे जानते थे कि अहिंसा की भावना पनपेगी तो आत्मतुल्यता के आधार पर पशु-पक्षियों के प्रति दया की भावना जागेगी। इससे यज्ञ तथा रस-लोलुपता के लिए किया जाने वाला पशुवध बन्द होगा। इसी प्रकार दास-प्रथा, अस्पृश्यता और संलग्नता की भावनाएं भी मिटेंगी। यद्यपि युग-प्रवाह हिंसा का समर्थक था, परन्तु उन्होंने निर्भीकतापूर्वक अपने विचार रखे और उस प्रवाह को बदलने में सफल हुए।

आज भारत की कोटि-कोटि जनता के मन में अहिंसा के प्रति जो अनुराग है, उसमें भगवान महावीर के उस उपदेश का पूर्ण प्रभाव दिखायी देता है।

10, इन्डस्ट्रियल एरिया, रानी बाजार, बीकानेर

पाथेयम्

परिस्थितीनां परिवर्तनानि, भवन्त्वनेकानिन यथेप्सितानि।
मनस्थितिश्चेत् परिवर्तिता नो, न स्यात्समाधिः सुलभः तदानीम्।।

परिस्थितियों के कितने ही परिवर्तन हो जाएं, यदि मनः स्थिति का सुधार और बदलाव नहीं होता हो तो शांति और समाधि सुलभ नहीं है।

Peace and bliss can not be achieved without improvement and change in mental attitude, even though the circumstances may be modified as one wishes.

प्रसन्नतायाः परिधानमस्ति, सर्वर्तुकाले सुखदं मनोज्ञम्।
सर्वाङ्गसौन्दर्यमिहावहन्ति, ये तन्मनुष्याः परिधातुकामाः।।

प्रसन्नता का परिधान सभी ऋतुओं में सुखद और हितकारक है। जो उसे पहनते हैं वे जीवन में सर्वांगीण सुन्दरता प्राप्त करते हैं।

Garment of happiness is comfortable and beneficial in all seasons. Those who wear it achieve complete beauty in life.

। मुनि राकेश ।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी एवं शैक्षिक क्रांति

प्रो. चांदमल कर्णावट

शिक्षा की महिमा

शिक्षा व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र के सम्यक् निर्माण एवं उत्थान का मूलाधार है। वह व्यक्ति का शारीरिक-मानसिक एवं आत्मिक विकास करती है। कहा भी गया है Education uncovers the potentialities of human being. हमारे राष्ट्रपिता गांधी जी ने भी शिक्षा को परिभाषित करते हुए बताया Education is drawing out the best of body, mind and spirit. दोनों कथनों का आशय है कि शिक्षा से व्यक्ति का शरीर मस्तिष्क एवं आत्मा का सर्वांगीण विकास होता है। शिक्षा व्यक्ति में निहित सभी क्षमताओं को उद्घाटित करती है, उनका आवरण हटने से ज्ञान की ज्योति जगती है। इससे व्यक्ति अपने हिताहित, कल्याण- अकल्याण, शुभ-अशुभ, श्रेय-उपादेय और हेय को जान पाता है। ऐसा शिक्षित व्यक्ति अपने कर्तव्यों का बोध करके घर-परिवार समाज एवं राष्ट्र के विकास में अपना योगदान करता है।

आधुनिक शिक्षा की ह्रासोन्मुखता

आधुनिक शिक्षा में शिक्षित व्यक्ति अधिकांश में घर-परिवार समाजादि के लिए विध्वंसकारी प्रवृत्तियां करते हैं। हड़तालें, तोड़-फोड़, आगजनी, हत्या तक कर डालते हैं। जैसे फल से किसी वृक्ष की पहिचान होती है उसी प्रकार इस शिक्षाप्राप्त व्यक्ति के व्यवहारों से शिक्षा की पहिचान होती है। आज शिक्षा में भेदभाव गरीब-अमीर का, जाति आदि का है। अभी कुछ दिनों पूर्व सुप्रीम कोर्ट ने जातिगत रैलियों पर रोक लगा दी थी। शिक्षा में चरित्र का भयावह अभाव है। शरीर और बुद्धि की शिक्षा के अलावा भावना की शिक्षा का भी सर्वथा अभाव सा है। हृदयपरिवर्तन के लिए भावना की शिक्षा आवश्यक है; क्योंकि बुद्धि की शिक्षा का संबंध मस्तिष्क से है। शिक्षार्थी वर्ग में अनुशासन का अभाव है। आचार्य तुलसी महिमामय कथन हैं –'निज पर शासन फिर अनुशासन' और 'संयम ही जीवन है'।

आचार्य तुलसी द्वारा शैक्षिक क्रांति

अरिहंतों - सिद्धों के गुणगान पाठ 'नमोत्थुणं' में अरिहंतों के लिए 'आइगराणं' शब्द का प्रयोग है। उसका अर्थ धर्म की आदि से है; परंतु उसका आशय यही बताया गया है कि धर्म तो अनादि से है। यहां आशय है कि अरिहंत या तीर्थंकर अपने समय में धर्म में आई हुयी विकृतियों का निवारण कर शुद्ध या प्रकृत धर्म का उपदेश/संदेश देते हैं। इस अपेक्षा से धर्म के आदिकर्ता उन्हें माना गया है। इसी प्रकार आचार्य श्री तुलसी ने शिक्षा में आई विकृतियों के निवारण हेतु तथा कुछ नवीन बिन्दु क्रांति के निर्दिष्ट किए हैं। उनकी यह क्रांति प्रकृत-शिक्षा के सही स्वरूप को पुनः प्रतिष्ठापित करने हेतु है।

आचार्य तुलसी द्वारा शैक्षिक क्रांति में निम्नांकित महत्वपूर्ण निर्देशों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है। शैक्षिक क्रांति में उनके द्वारा महत्वपूर्ण पथ-प्रदर्शन प्राप्त होगा–

1. पाठ्यक्रम में अहिंसा का विषय रूप में समावेश
2. शिक्षा में भेदभाव का निवारण
3. सृजनशीलता
4. चरित्रनिर्माण पर विशेष बल
5. प्रयोगधर्मिता
6. संस्कार-निर्माण
7. जन-शिक्षण

8. शिक्षण में निरंतरता
9. नैतिकता का शिक्षण

1. पाठ्यक्रम में अहिंसा विषय को सम्मिलित करना

जीवन में और लोकतंत्र में अहिंसा एक महत्वपूर्ण आधार है। हिंसा को जीवन में और विशेषतः लोकतंत्र में कोई स्थान नहीं। आचार्य तुलसी के सदुपदेश और उनके अनुयायियों के प्रयासों से लाडनूं (राजस्थान) में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। विश्वविद्यालय विगत कई दशकों से चल रहा है। वहां अहिंसा शिक्षण का स्वतंत्र विभाग है। आचार्य तुलसी का कथन है–'जितने भी विद्यालय और महाविद्यालय हैं, उनमें अहिंसा को अनिवार्य सब्जेक्ट के रूप में स्वीकार किया जाए और थ्येरिटिकल ट्रेनिंग के साथ प्रेक्टिकल ट्रेनिंग पर भी ध्यान केन्द्रित किया जाय। अहिंसा की यह पद्धति और अधिक वैज्ञानिक और सुगम बने, इस दृष्टि से समीक्षात्मक बहस भी आमंत्रित की जा सकती है।[1]

(2) शिक्षा में भेदभाव का निवारण

वर्तमान लोकतंत्र शासन पद्धति में हमारे देश में अवसरों की समानता का विधान है। परन्तु अपने लोभवश सत्तासीन व्यक्ति इसमें किसी विशेष जाति के लिए अधिक कोष की स्वीकृति देते हैं, सबको समान रूप से सहयोग नहीं दिया जाता, ऐसा लगता है। पूर्व राष्ट्रपति राधाकृष्णन ने आचार्य तुलसी के साथ वार्ता में बताया–'शिक्षा में भेद है–उच्चता और नीचता में भेद है, मनुष्य मनुष्य में भेद है निर्धन और धनिक का भेद है। आप दृष्टि उठाकर देखें, सर्वत्र भेद की एक अभेद्य दीवार मिलेगी।[2]

आचार्य तुलसी का प्रसिद्ध नारा है–

"इन्सान पहले इन्सान,
फिर हिन्दू या मुसलमान"

(3) सृजनशीलता

शिक्षा का एक अतीव महत्त्वपूर्ण पक्ष है सृजनशीलता की शिक्षा। इसमें शिक्षार्थी शिक्षक के प्रश्नों के आधार पर एक ही प्रश्न के अनेक उत्तर देता है। वर्तमान स्थिति बताने पर भी भविष्य की अनेक स्थितियों के प्रश्न कर सकता है। उनमें उसकी बुद्धिमत्ता के अनुसार मौलिकता भी होती है। लेखक ने इस सृजनशीलता पर गोष्ठी करके राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर के परीक्षा प्रश्न-पत्रों में सृजनशीलता के प्रश्नों का अंकन करवाया था। विश्लेषण से पता चला कि केवल 8 प्रतिशत प्रश्न सृजनशीलता की जांच करने वाले थे।

आचार्य तुलसी के इस विषय पर कथन को उनके उत्तरवर्ती आचार्य महाप्रज्ञ ने इस प्रकार व्यक्त किया है–'आचार्य प्रवर कल्पना, चिंतन और क्रियान्विति को समरेखा में रखते थे। जो व्यक्ति कल्पना करना नहीं जानता दिवास्वप्न लेना नहीं जानता, वह कुछ नया सृजन नहीं कर सकता। जो व्यक्ति चिंतन करना नहीं जानता वह सृजन की आत्मा को संस्थान नहीं दे सकता।[3]

सृजनशीलता के विकास से शिक्षार्थी के मन में अनेक विकल्प सूझते हैं–वे समस्या के समाधान विविध रूप से बता सकते हैं।

जीवन-विज्ञान–जीव विज्ञान नहीं, जीवन का विज्ञान। जीवन-विज्ञान मूल्यपरक शिक्षा की समन्वय आधारित प्रयोग-पद्धति है। उसमें 16 मुख्य सामाजिक, बौद्धिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य मिलाकर बताए हैं। केवल सिद्धान्त बोध के द्वारा विद्यार्थी अपनी अस्मिता को पहचान सके और सामाजिक न्याय के प्रति समर्पित हो सके, यह कम संभव है। इसके लिए सिद्धान्त और प्रयोग दोनों का समन्वय आवश्यक है। शिक्षा प्रणाली में बौद्धिक विकास पर अधिक भार दिया गया है। जबकि अनुशासन, चरित्रविकास तथा अपराधी मनोवृत्ति के परिवर्तन के लिए बौद्धिक विकास की अपेक्षा भावनात्मक विकास अधिक मूल्यवान है।[4]

महाप्रज्ञ का कथन है–आचार्य तुलसी ने अणुव्रत की आचार संहिता के माध्यम से अच्छे नागरिक का प्रारूप समाज के सामने रखा था। जीवन-विज्ञान उसकी क्रियान्विति का प्रयत्न है–(जीवन विज्ञान फोल्डर)

(4) चरित्र-निर्माण पर विशेष बल

कहा गया–धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, पर चरित्र गया तो सब कुछ चला गया। आधुनिक शिक्षा में चरित्र बल पर बहुत कम भार दिया गया है–पाठ्यक्रम, शिक्षक, समाज सभी में चारित्रिक मूल्यों का अभाव-सा लगता है। आचार्य श्री तुलसी का कथन था–आचरण के बिना प्रचार का कोई मूल्य नहीं है।

लोकतंत्र गोली और गाली का शासन नहीं, वहां तो चरित्र की ही प्रधानता और सशक्तता है। आज के शिक्षार्थी का व्यवहार प्रत्यक्ष ही चरित्र के ह्रास का फल है, जिसका फल समाज और राष्ट्र को भुगतना पड़ रहा है।

(5) प्रयोगधर्मिता

सिद्धान्त की सार्थकता उसके प्रयोग में निहित है। प्रयोग से भविष्य की राहें खुलती हैं और सिद्धान्त का स्वरूप सुदृढ़ बनता है। आचार्य तुलसी ने नैतिकता के विकास का मार्ग बताया। उन्होंने कहा–'नैतिकता की प्रतिष्ठा कोरे वचनों से नहीं हो सकती, उसके लिए सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में प्रायोगिक कार्य करना जरूरी है। आप नैतिकता और अनैतिकता के परिणामों का विश्लेषण कीजिए। जनता किस ओर आकृष्ट होती है, वह उसी पर छोड़ दीजिए।[5]

(6) संस्कार-निर्माण

आचार्य तुलसी के शब्दों में 'अणुव्रत का मुख्य कार्य संस्कार-निर्माण है। इसलिए उसका मुख्य कार्यक्षेत्र शिक्षा-जगत होना चाहिए। संस्कार-निर्माण के क्षेत्र में शिक्षक जितना काम कर सकते हैं, उतना अन्य लोग नहीं कर सकते। मैं चाहता हूं कि इस कार्य में शिक्षकों का अधिक योग प्राप्त किया जाए।[6]

संस्कार निर्माण के अन्तर्गत सही मनुष्य के निर्माण पर अधिक भार देते हुए आचार्य तुलसी ने कहा–'मेरा अपना अभिमत यह है कि कोई भी मंत्र-तंत्र या यंत्र तब तक सफल

नहीं होगा, जब तक मनुष्य सही मनुष्य नहीं होगा। तंत्र का संचालक मनुष्य होता है—वह संचालन में जितनी अनैतिकता करेगा, तंत्र उतना ही विकृत होता चला जाएगा। विकृत तंत्र के आधार पर स्वस्थ समाज या राष्ट्र की परिकल्पना ही बेमानी है। अतः संस्कारों के निर्माण की शिक्षा ही सच्ची शिक्षा का मूलाधार है।

(7) जन-शिक्षण

शिक्षा शिक्षालयों की चार दीवारी के बाहर जनता तक भी पहुंचनी चाहिए। व्यक्ति पर समाज के वातावरण का भी गहरा प्रभाव होता है। अतः जनता को तथा घर-परिवारों को भी सुशिक्षित करना आवश्यक है। माता-पिता, परिवार एवं समाज के अन्य घटक जब तक सुशिक्षित नहीं बनेंगे तब तक चार दीवारी में प्रदत्त शिक्षा सार्थक नहीं बनेगी। आचार्य तुलसी का मत था—'नैतिकता के अभियान को तीव्र करने के लिए जनता तक पहुंचना व उसे नैतिकता से होने वाले लाभ समझाना जरूरी है। 'तुम्हें नैतिक बनना चाहिए' यह मात्र उपदेश है, इससे बहुत सफलता की आशा नहीं की जा सकती।

विस्तार-भय से कुछ शेष बिन्दुओं पर लिखना संभव नहीं।

मेरा अपना भी यह सुझाव है कि शोधों के आधार पर परिणाम सामने लाए जाएं। क्रियात्मक अनुसंधान अपनाकर किसी समस्या के विभिन्न समाधान जो प्राप्त हों, परिकल्पना मानकर उनको क्रियान्वित किया जाए। उनमें जो क्रियान्विति के अन्तर अधिक सार्थक लगें उन्हें अपना लिया जाए।

केस-स्टडी

किसी एक परिवार या विद्यालय या अन्य संस्था को लेकर उसे एक केस माना जा सकता है, उस पर विस्तार से जानकारी करें। साक्षात्कार से या प्रश्नावली से और प्रत्यक्ष अवलोकन कर के जो निष्कर्ष निकलें, उनके आधार पर शिक्षा में नैतिकता, संस्कार सम्पन्नता आदि क्षेत्रों में कार्य किया जाए। जैसे एक संस्कारी परिवार को लेकर उस पर उपर्युक्त रीति से कार्य किया जा सकता है, फिर उसके निष्कर्ष अन्य परिवारों पर लागू किए जा सकते हैं।

लेखक ने इन अनुसंधानों का प्रयोग अपने अध्यापनकाल में किया है।

संदर्भ साहित्य

(1) अणुव्रत पाक्षिक : 1-15 अक्टूबर, 2011
(2) अणुव्रत पाक्षिक 16-31 दिसम्बर, 2011, पृष्ठ-10
(3) अणुव्रत पाक्षिक : 1-15 जनवरी, 2013
(4) जीवन विज्ञान फोल्डर—युवाचार्य महाप्रज्ञ प्र. आचार्य श्री तुलसी
(5) अणुव्रत मासिक जन. 1-31, 2013, पृष्ठ 12
(6) अणुव्रत मासिक जन. 1-31, 2013 पृष्ठ 12
(7) अणुव्रत पाक्षिक 16-31 जन. 2012, पृष्ठ 5
(8) अणुव्रत मासिक 1-31 जन. 2013, पृष्ठ 11

प्लॉट नं. 35, अहिंसापुरी, फतहपुरा, उदयपुर (राज.)

झांकी हिन्दुस्तान की

मिलावटी दूध पीते ही मौत होगी, क्या तब बनेगा सख्त कानून?

मिलावटी दूध के बेरोकटोक चल रहे कारोबार पर सुप्रीम कोर्ट ने सख्त टिप्पणी की है। कोर्ट ने कहा है, 'दूध में सायनाइड मिलाया जाए और इसे पीकर लोगों की तत्काल मौत हो जाए; क्या तब जाकर सख्त कानून बनेगा? सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार से दो हफ्ते के भीतर जवाब मांगा है। पूछा है कि क्या उम्रकैद की सजा का प्रावधान लाने के बारे में वह विचार भी कर रही है या नहीं? इस सम्बन्ध में सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस केएस राधाकृष्णन और विक्रमजीत सेन की बेंच ने केन्द्र और राज्य सरकारों की ओर से पेश वकीलों की दलीलें सुनीं।

सरकार से 'जीरो', राष्ट्रपति ने बना दिया हीरो

नई दिल्ली। हरियाणा के आईएफएस अफसर संजीव चतुर्वेदी के बचाव में राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी खुद उतर आए हैं। राष्ट्रपति ने चतुर्वेदी की एनुअल कॉन्फिडेंशियल रिपोर्ट (एसीआर) को 'शून्य' से अपग्रेड कर आउटस्टैंडिंग करने को कहा है। उन्होंने हुड्डा सरकार को चतुर्वेदी को परेशान करना बंद करने के भी आदेश दिए हैं। राष्ट्रपति का आदेश राज्य सरकार के लिए झटका है। हरियाणा कैडर के वर्ष 2002 बैच के अफसर चतुर्वेदी ने झज्जर में जिला वन अधिकारी रहते हुए घोटालों का पर्दाफाश किया था। आरोप है कि उनकी ईमानदार कार्यशैली की वजह से हरियाणा सरकार उन्हें बार-बार परेशान कर रही है। उनकी एसीआर को डाउनग्रेड कर शून्य कर दिया था। एसीआर में कई प्रतिकूल बातें लिख दी गई थीं।

चौथी अम्मी मुझसे दो साल ही बड़ी!

मेरे अब्बू मोहम्मद अकबर पान की दुकान करते थे। चार निकाह किए उन्होंने। मेरी अम्मी उनकी पहली बीवी हैं। दूसरी अम्मी की चार बेटियां हैं। एक का निकाह तीन साल पहले तब हुआ, जब अब्बू ने भी चौथा निकाह किया। तीसरी अम्मी ने मुझे तबाह करने में अब्बू का साथ दिया। बताते हुए शर्म आती है कि चौथी अम्मी उम्र में मुझसे सिर्फ दो साल बड़ी हैं। मेरी अम्मी पढ़ी-लिखी नहीं हैं। मैं कभी स्कूल नहीं गई। पीयूसीएल की अध्यक्ष एवं लड़की की वकील जया विंघाला कहती हैं कि निकाह के नाम पर लड़कियों को बेचने का धंधा खुलकर जारी है। यह नेटवर्क हैदराबाद से मुंबई तक फैला है। यह केस इस अवैध कारोबार को खत्म करने के लिहाज से काफी मजबूत है। सरकारी एजेंसियों को खानापूर्ति की बजाए सख्त कदम उठाने चाहिएं।

प्रेरणा का अमर पाथेय

गुरुदेव तुलसी का सृजन-शतक

डॉ. अलका सांखला

लघुता से प्रभुता मिले सब यही चाहते हैं; परन्तु जीवन की सार्थक दिशाएं मिलना बहुत कठिन है। हम भाग्यवान हैं, हमें गुरुदेव श्री तुलसी जैसे महान् गुरु मिले। उन्होंने जो ज्ञान दिया उसे पढ़ेंगे, जानेंगे, जीवन में उतारेंगे तो हमारा जीवन ही बदल जायेगा। उनके द्वारा लिखित पुस्तकों के नाम पढ़ेंगे, तो आश्चर्य होगा कि एक व्यक्ति इतना भी लिख सकता है? उनकी आत्मकथा **मेरा जीवन मेरा दर्शन** पढ़ेंगे तो पता चलेगा कितना काम किया है, गुरुदेव तुलसी ने।

हमेशा गुरुदेव ने **नया मोड़** अपनाया। प्रज्ञापर्व में जो संदेश दिये उन्हें याद करो। हमें कहा—**जागो! निद्रात्यागो, उट्ठिए! नो पमाइय!** गुरुदेव केवल तेरापंथ समाज को ही नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व को दिशा दिखाकर, सबकी दशा बदलना चाहते थे। **अशांत विश्व को शांति का संदेश** देकर सबको **शांति के पथ पर** ले जाना चाहते थे।

गुरुदेव कहते—**जब जागो तभी सवेरा।** वे यह भी जानते थे, **नयी पीढ़ी नये संकेत** चाहती है, **जैन दीक्षा** लेकर साधु जीवन की उपयोगिता को न वह समझती है, न मानती है, पर **समाधान की ओर** सभी जाना चाहते हैं। **राजपथ की खोज** सभी करते हैं। **मंजिल की ओर** जाने का रास्ता सभी ढूंढ रहे हैं।

इसलिए गुरुदेव ने व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व सभी की समस्याओं को जाना, समझा और हर एक की समस्या का समाधान दिया। गुरुवर कहते थे—समस्या नहीं ऐसा जीवन नहीं और समाधान नहीं ऐसी कोई समस्या नहीं।

तेरापंथ या मूर्तिपूजक, हिन्दू हो या बौद्ध, मुस्लिम हो या ईसाई सब को **आत्मा के आसपास** तो जाना ही होगा। इसके लिए वे कहते—**सार्थकता संवाद की** तब होगी, जब **समस्या का सागर : अध्यात्म की नौका** से पार करेंगे, समझेंगे और मानेंगे।

नया समाज नया दर्शन गुरुदेव का सपना था। **घर का रास्ता** तो सभी जानते हैं। व्यक्ति-व्यक्ति को जगाकर **सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से** यह उनका प्रयत्न था। वे कहते—***संभल सयाने, आगे की सुधि लेइ। काल करे सो आज कर।***

मनुष्य शंकाशील प्राणी है। गुरुदेव इतना समझाते फिर भी उसके मन में प्रश्न उठता—**क्या धर्म बुद्धिगम्य है?** सहजता से गुरुदेव फरमाते—**गृहस्थ को भी अधिकार है धर्म करने का। जन-जन से** उठे प्रश्न समझकर उन्होंने कहा—**मानवता तभी मुस्काए** जब वे **चेतना का आकाश अध्यात्म का सूर्य** होता है, यह बात जान जायेंगे।

गुरुदेव तुलसी तो **मां वदना** के संस्कारों में पले-बड़े हुए। **सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति** लाडांजी से बहुत कुछ सीखा। **सेवाभावी** भाई चम्मक मुनि से तो न जाने उन्होंने कितना कुछ पाया। इतने महान् बने, क्योंकि उन्हें अपने गुरु कालूगणी से ज्ञान मिला, उन्होंने ही, गुरुदेव को तराशा था। गुरु कालूगणी के प्रति श्रद्धानत होकर **कालुयशोविलास** रूप में भावांजलि अर्पण की। पूर्वाचार्यों से भी जितना ले सके लिया, उन्हें याद करके **माणक महिमा, डालिम चरित्र, मगन चरित्र** का **सोमरस** लिखकर **शासन-सुषमा** का गौरव पढ़ाया। इस **सुधारस** का हम भी रसपान करें। गुरुदेव तुलसी का रूप, गुण और कार्य देखकर लगता था आचार्य **भिक्षु का पुनर्जन्म** तो नहीं हुआ?

धर्म में जो शक्ति है, उसे गुरुदेव जानते थे। सभी धर्म को जानें, पहचानें इसलिए प्रयत्न करते थे। **रे धार्मिकों! विचारों, ढाई अक्षर धर्म का** समझो। **धर्म की लौ जलाएं हम** फिर देखना **महके अब मानव मन।** उनके जीवन में तो **मेरा धर्म : केन्द्र और परिधि** सब कुछ धर्म था। वे कहते **हे प्रभो! यह तेरापंथ** जो **बूंद भी लहर भी,** सब कुछ है। **धर्म की जय हो जय!** कौन

कहेगा? जो जानेगा–**धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई। धम्मो सरणंमुत्तमं।** मैंने तो धर्म को जीवन में उतारा है, **धम्मो सरणं पवज्जामि।**

गुरुदेव श्री तुलसी यह भी जानते थे, सामान्य मनुष्य का यहां तक पहुंचना मुश्किल है। वे कहते–**बीती ताहि बिसार दे, मन की गांठें खोल, अतीत का विसर्जनः अनागत का स्वागत** कर, अंधेरा चारों तरफ फैला हुआ है, धर्म का दीप जलेगा, तो जीवन प्रकाशमय होगा। **दीया जले अगम का** तो फिर **दीये से दीया जले** और सभी सुखी-समृद्ध बनें।

उनका विश्वास और सपना भी था– **शिक्षा को बनाएं विकास और आनंद की दिशा।** संपूर्ण विश्व की ओर से **नव-निर्माण की पुकार** वे सुनते थे। सबके लिए जागरण-उद्‌बोधन जरूरी है, यह भी जानते थे। **सफर आधी शताब्दी का** हुआ तब उन्होंने चिंतन किया, धर्म का व्यवस्थित अभ्यास-क्रम बनाकर प्रस्तुत करना जरूरी है। **तत्त्व क्या है,** यह सहजता से समझेंगे तो आध्यात्मिक रुचि बढ़ेंगी। सभी जैन तत्त्व विद्या में आगे बढ़ें, पढ़ें इसलिए **जैन तत्त्व प्रवेश** जैसा अभ्यासक्रम तैयार किया। सर्व सामान्य व्यक्ति **कैसे जिएं, तेरापंथ क्या है, आचार-व्यवहार बोध** सहजता से जानें और करें इसलिए **सम्बोध** (आचार बोध, व्यवहार बोध, संस्कार बोध), **तेरापंथ प्रबोध** और **श्रावक सम्बोध** की रचना की, जो आज भी सभी रुचि लेकर पढ़ते हैं, कंठस्थ करते हैं।

अर्हत् उवाच सभी के लिए जरूरी है, इसलिए **अमृतम्** शब्दों में **अर्हत्वाणी** को **अर्हत् वंदना** का संगान द्वारा प्रस्तुति की, जो आज भी सभी श्रद्धा से अंतःकरणपूर्वक रोज करते हैं। **जैन सिद्धान्त दीपिका** द्वारा सबको प्रकाशमय बनाने की कोशिश की। श्रावक सम्बोध, अर्हत् वंदना गाते हैं तब ऐसा लगता है, **बूंद में सागर** के दर्शन हो रहे हैं। **बैसाखियां विश्वास की** जग जाने के लिए यह **चंदन की चुटकी भली।**

इतना समझाने के बाद, सहजता से कहने के बाद भी गुरुदेव देखते, नयी पीढ़ी की धर्म के प्रति रूचि कम है। व्यक्ति धर्म के प्रति जागरूक क्यों नहीं? वे कहते थे–**पानी में मीन पीयासी** क्यों? सब को जानना चाहिए। धर्म बिना गति-प्रगति नहीं, **बिन पानी सब सून।** वे कहते–**धर्म सबकुछ है और कुछ भी नहीं।** पर **जोत जलाओ ज्ञान की** और **माला मन की भली,** यह तो समझें।

दोनों हाथ एक साथ होते हैं, तो बनती है बात। गुरुदेव तो सबको साथ लेकर चलना चाहते थे। संपूर्ण विश्व को **जिज्ञासा के पंख : समाधान का आकाश** देना चाहते थे।

संपूर्ण मानव जाति के लिए उनका संदेश कितना सुंदर है–चिंता नहीं, चिंतन करो, व्यथा नहीं व्यवस्था करो। इसी आधार पर उन्होंने चिंतन किया और जाना आज की दुनिया की सबसे बड़ी समस्या है चरित्र, नैतिकता और अध्यात्म की कमी। इसके लिए उन्हें व्यथा होती थी। व्यवस्था करना जरूरी है, यह जानकर उन्होंने कहा **नया सवेरा आए** और इसके लिए **समता की आंख चरित्र की पांख** होना जरूरी है।

इस समस्या के समाधान के लिए उन्होंने **अणुव्रत आंदोलन** शुरू किया। क्योंकि वे जानते थे–जब तक व्यक्ति अपने आचरण के प्रति सजग नहीं बनेगा संसार की कोई भी शक्ति उसे सुख और शांति का वरदान नहीं दे सकेगी। इसलिए गुरुदेव ने कहा–खुद अणुव्रती बनो, सब को अणुव्रती बनाओ।

सबके मन में प्रश्न आता–**अणुव्रती क्यों बनें?** तब गुरुदेव ने रात-रात जागकर पैदल चलते-चलते, झोंपड़ी से राष्ट्रपति भवन तक, कन्याकुमारी से कोलकाता तक पूरे देश में लगभग एक लाख किमी. की पदयात्राएं कर नैतिक क्रांति को प्रज्ज्वलित किया। घर-घर, एक-एक को समझाया– अणुव्रत कोई नया तत्व नहीं, भगवान महावीर का बताया मार्ग है। **शाश्वत धर्म** का यह तत्व सभी धर्मों में बताया है। बौद्ध ने पंचशील के नाम से तो पतंजलि ऋषि ने पांच यम के द्वारा।

अनैतिकता की धूप, अणुव्रत की छतरी धारण करने से ही कम होगी। **अन्तर के पट खोल** और **अणुव्रत के आलोक में** आओ, तभी जीवन सुधरेगा, आत्मा का कल्याण होगा। **अणुव्रत गति-प्रगति** का सहज, सरल और सुंदर राजमार्ग है। गुरुदेव चाहते थे–**पानी आने से पहले** इन्सान इसे जाने और **सूरज ढल न जाए** इसके पूर्व उसे जीवन में उतारे। रात-दिन **अणुव्रती संघ और अणुव्रत** के द्वारा वे **अणुव्रत गीत** गाते थे।

भ्रष्टाचार की आधार शिलाएं जानें और इससे बचने के लिए, सब को बचाने के लिए **अवसर के महंगे मोती** गवाएं बिना अणुव्रती बनें। अणुव्रत को गुरुदेव ने सर्वाधिक महत्व दिया था।

गुरुदेव तुलसी चाहते थे एक-एक अणुव्रत का नियम समझो, जीवन में उतारो तो **बूंद-बूंद से घट भरे।** जैसे ही अणुव्रत की **ज्योति जले मुक्ति मिले। धर्म का मर्म** जानने वाले गुरुदेव कहते थे–यदि जीवन में धर्म नहीं तो वह निरर्थक है। उनका सपना था–**नई दृष्टि हो, नई सृष्टि हो,** अणुव्रतों के द्वारा **बदले युग की धारा।**

धर्म को व्यावहारिकता के धरातल पर लाकर हमें सहजता से समझाया–**संयम ही जीवन है।** ऐसे मानवता के मसीहा गुरुदेव तुलसी के जन्म-शताब्दी वर्ष पर हम संकल्प करें, हम तो अणुव्रत बनेंगे ही, अपने मित्र, परिवार, पड़ोसी, परिचित संस्थाएं तथा अपने बिजनेस में सबको मिलाकर कम से कम 100 व्यक्तियों को अणुव्रती बनाएंगे।

गुरुवर का कितना है कर्ज, हमारा भी है कुछ फर्ज। **अणुव्रत दर्शन** व्यक्ति को नैतिक बनाने की आचार-संहिता है। अणुव्रत गुरुदेव तुलसी का राष्ट्र को महान् अवदान है और व्यक्ति के लिए वरदान है। ।

401, ऑर्नेट पैलेस, चॉकलेट हाउस के सामने, आम्रकुंज सोसायटी, सूरत-(गुजरात)

जनतंत्र की स्वस्थता का आधार चुनाव-शुद्धि

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी

चुनाव जनतंत्र की अनिवार्य प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के अनुसार देश के प्रत्येक व्यक्ति को मानवीय और शासकीय अधिकार उपलब्ध हैं। अधिकार का उपयोग समीचीन रूप से हो तो कोई समस्या खड़ी नहीं होती, किंतु औचित्य का अतिक्रमण होने की परिस्थिति में कुछ समस्याएं उभार ले लेती हैं। समस्याओं के मूल स्रोत हैं प्रलोभन, जातीयता, सांप्रदायिकता आदि। प्रलोभन की प्रेरणा से व्यक्ति अपने सिद्धांतों को ताक पर रख देता है। सिद्धांतों की विस्मृति प्रतिकूल आचरण कराती है। इससे व्यक्ति कर्त्तव्य-च्युत होता है और व्यक्तिगत स्वार्थ को पोषण देने के लिए अकरणीय कार्यों में प्रवृत्त हो जाता है।

जातीयता के नाम पर सार्वजनिक क्षेत्रों में सत्ता और शक्ति का जो दुरुपयोग होता है, वह आज किसी से अज्ञात नहीं है। भाई-भतीजावाद भी इसी भावना का विकसित रूप है। जातिवाद और व्यक्तिवाद के धरातल पर सेवा का व्रत टूट जाता है तथा स्वार्थचेतना का ऊर्ध्वारोहण होने लगता है। सांप्रदायिक मनोवृत्ति से पक्षपात और अभिनिवेश की निष्पत्ति होती है। पक्षपात और अभिनिवेश प्रत्येक प्रक्रिया की शुद्धता में बाधक है। इस दृष्टि से प्रत्येक संदर्भ में इनका प्रस्तुतीकरण हुआ है। चुनाव-शुद्धि के लिए भी यह आवश्यक है कि प्रलोभन, पक्षपात और अभिनिवेश की परिधि को तोड़कर विशुद्ध सेवा-भावना से व्यक्ति कर्मक्षेत्र में उतरे। इस भूमिका पर खड़ा हुआ व्यक्ति अणुव्रतों की साधना करता हुआ भी निर्वाचित व्यक्ति के दायित्व का निर्वाह कर सकता है। यदि वह अपने व्रती जीवन और स्वीकृत दायित्व के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक है तो उसके जीवन पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं हो सकता। व्रत-निष्ठा उसे कर्त्तव्य-बोध देती है और कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति कभी विडंबना नहीं कर सकता।

मतदाता और उम्मीदवार दोनों पक्षों द्वारा निश्चित विधियों का अतिक्रमण किया जाता है। ऐसी स्थिति में निर्वाचन आचार-संहिता का कोई मूल्य नहीं रह जाता। मूल्यहीनता का प्रश्न बहुत गंभीर है। इस गंभीरता को कम करने के लिए कुछ मानदंडों का निर्धारण अपेक्षित है, जिसके आधार पर सार्वजनिक जीवन को विशुद्ध रखा जा सके। इस दृष्टि से मतदान का आधार होना चाहिए चरित्रशीलता और गुणवत्ता।

जनहित की प्रधानता सार्वजनिक चरित्र का ही एक अंग है। सार्वजनिक व्यक्ति का चरित्र व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनों दृष्टियों से उदात्त होना चाहिए। कभी व्यक्तिगत दुर्बलता क्षम्य भी हो जाती है पर उसे भी सर्वथा उपेक्षित नहीं किया जा सकता। वैयक्तिक दुर्बलता सार्वजनिक जीवन में प्रतिबिम्बित होकर व्यक्ति का अवमूल्यन कर सकती है, इसलिए बाहर और भीतर दोनों ओर से जीवन की पवित्रता काम्य है। पैसा खाकर काम करने की मनोवृत्ति, दूसरों के प्रति क्रोध और असंतोष, जनहित की गौणता तथा पक्षपातपूर्ण नीति चरित्रहीनता

की फलश्रुतियां हैं। मतदान का कोई निश्चित आधार नहीं होगा तो उक्त प्रवृत्तियों को टालना बहुत कठिन हो जाएगा।

चुनाव जीतने के लिए प्रचार को अनिवार्य माना जाता है। प्रचार-कार्य के साथ अपने कार्यकाल और प्रवृत्तियों के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना भी आवश्यक है। क्योंकि तथ्यों की प्रस्तुति के अभाव में अच्छा व्यक्ति बुरा बन सकता है और बुरा अच्छा बन सकता है। अपनी स्थिति का वास्तविक चित्रण अपराध नहीं है, किंतु अपने आपको तथा अपने कार्यक्रम को सर्वश्रेष्ठ बताकर दूसरों को गलत रूप में प्रस्तुत करना अपराध है। अपने प्रचार क्षेत्रों और प्रचार सभाओं में अवांछनीय आरोप-प्रत्यारोप, अश्लील शब्द-प्रयोग, असत्य और निराधार बातों का फैलाना, लांछन लगाना आदि कार्य कर्त्तव्य की सीमा के बाहर हैं।

वैचारिक स्वतंत्रता और मताभिव्यक्ति का जहाँ तक प्रश्न है, हर व्यक्ति को इसका अधिकार है, किंतु इससे संबंधित सभाओं और आयोजनों में उपद्रवों का होना जनतंत्र के प्रतिकूल है। जिस पक्ष द्वारा ऐसा प्रयत्न किया जाता है, वह उसकी दुर्बलता का सूचक है। इस सूचना का अर्थ यह है कि प्रजातंत्र का स्तर उच्च नहीं है। प्रजातंत्र की सार्थकता निरंकुश स्वेच्छाचारिता में नहीं है। जनतंत्र के स्तर को समुन्नत बनाने के लिए व्यक्ति-व्यक्ति को जागृत रखकर निर्वाचन संबंधी समस्याओं का हल खोजना होगा।

प्रजातंत्र एकतंत्र की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ हैं, एकतंत्र की लम्बी परंपरा से यह प्रमाणित हो चुका है कि एक व्यक्ति की इच्छा व्यापक हित में नहीं होती। आत्म-शासन के अभाव में निरंकुशता पनपती है। निरंकुश व्यक्ति जैसा चाहता है वैसा करता है। वह जनहित के सामने अपनी इच्छाओं को प्रमुखता देता है। कहीं-कहीं प्रजातंत्र में भी फासिज्म, डिक्टेटरशिप, सैनिक शासन आदि का अनुकरण होता है। पर वह टिक नहीं पाता।

जनतंत्रीय व्यवस्था में अधिनायकवादी को न्यायालय चुनौती दे सकता है, एकतंत्र में किसी दूसरे व्यक्ति की उचित मांग को निराकृत करने पर भी कोई कदम नहीं उठाया जाता। वहाँ औचित्य और अनौचित्य का निर्धारण शासक की अपनी इच्छाशक्ति पर निर्भर करता है। सामूहिक हितों को कुचलने की दुष्चेष्टा एकतंत्र का अभिशाप है। जब तक यह अभिशाप नहीं धुलता है, प्रजातंत्र की वरीयता को नकारा नहीं जा सकता।

मतदाता के लिए जो आचार-संहिता है, कुछ इसी प्रकार की आचार-संहिता उम्मीदवार के लिए भी है। प्रलोभन, जातीयता और सांप्रदायिकता के आधार पर उसके चिंतन और कार्य-पद्धति में कोई भेदरेखा नहीं होनी चाहिए। जीवन के अनेक पहलुओं में चर्यागत साम्य होने के साथ उम्मीदवार के लिए विशेष बात है, दलबदल की प्रक्रिया। व्यक्ति जिस दल का प्रतिनिधि बनकर चुनाव लड़ता है, चुनाव जीतकर वह अपने कर्मक्षेत्र में प्रवेश करता है। किसी दूसरे व्यक्ति या दल के प्रलोभन या दबाव से वह अपना दल बदल लेता है, यह निर्वाचन की शालीनता नहीं है। आजकल दलबदलू मनोवृत्ति के जो उदाहरण सामने आ रहे हैं, उससे राजनीति के वरिष्ठ चिंतक चिंतित हो रहे हैं। जब तक इस स्थिति को स्थायी समाधान प्राप्त नहीं होता है, एक स्वस्थ परंपरा का सूत्रपात नहीं हो सकता।

प्रत्येक निर्वाचित व्यक्ति की यह नैतिक जिम्मेदारी होती है कि वह किसी भी परिस्थिति में अपनी पार्टी और जनता को धोखा न दे। वैचारिक स्वतंत्रता के नाम पर यदा-कदा दल बदलना प्रवंचना है। वैचारिक प्रतिबद्धता को मान्यता देकर उसके विचारों की हत्या करने के पक्ष में मैं भी नहीं हूँ, पर इस प्रकार की वंचना के साथ मेरी सहमति कभी नहीं हो सकती। विचार-परिवर्तन के बाद अपने वर्तमान दायित्व से मुक्त होने के लिए त्यागपत्र देकर पुनः चुनाव लड़ने की परंपरा जनतंत्रीय पद्धति में निहित है। अधिकारप्राप्त व्यक्ति का यह पुनीत कर्त्तव्य है कि वह जनता को अपने विश्वास में ले। जहाँ शासक और शासित एक-दूसरे के प्रति संदिग्ध रहते हों, वहाँ सफलता भी संदिग्ध रहती है। जनता अविश्वास करे, उस स्थिति में अधिकारी व्यक्ति का यह नैतिक दायित्व है कि वह विग्रह की स्थिति उत्पन्न होने से पहले जनता में विश्वास उत्पन्न करे, अन्यथा त्यागपत्र दे।

अणुव्रत मानवीय मूल्यों की आचार-संहिता है। जीवन-स्तर और सामाजिक स्तर को समुन्नत बनाने के लिए इसकी अपेक्षा को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। निर्वाचन के क्षेत्र में आज जो धांधली चल रही है, उसमें परिष्कार करने के लिए अणुव्रत-दर्शन का व्यापक विश्लेषण, मनन और आचरण नितांत अपेक्षित है। मतदाता और उम्मीदवार अणुव्रत के आदर्शों को सामने रखकर ही जनतंत्रीय शासन-व्यवस्था को अधिक स्वस्थ और प्रशस्त बनाने में सक्षम हो सकता है।।

यदि चुनाव में अनैतिक आचरण हों तो उससे फलित होने वाला जनतंत्र फलित नहीं हो सकता। अणुव्रत आन्दोलन का लक्ष है-नैतिकता या चरित्र की प्रतिष्ठा। चुनाव में भी नैतिकता को बल मिलना आवश्यक है।

आचार्य तुलसी

चुनाव जनतंत्र की जीवनी-शक्ति है। यह राष्ट्रीय चरित्र का प्रतिबिंब है। चरित्र-शुद्धि के अभाव में चुनाव-शुद्धि की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

अचार्य महाप्रज्ञ

लोकतंत्र, चुनाव और अणुव्रत

अणुव्रत प्राध्यापक मुनि सुखलाल

शासन की अनेक प्रणालियां हैं। पुराने जमाने में लम्बे समय तक राजतंत्र ही प्रतिष्ठित था। जैसा राजा होता, वैसा ही प्रजा को दुःख-सुख भोगना पड़ता। बहुत बार कुशल राजा राज्य शासन करता है तो प्रजा में भी शान्ति का साम्राज्य रहता है। राजतंत्र में कुशल अनुशास्ता के रूप में श्रीराम का नाम आज भी बहुत सम्मान के साथ लिया जाता है। राम एक लोकप्रिय राजा थे। हजारों-हजार वर्षों बाद भी उनका नाम धुंधला नहीं पड़ा है। आज भारत में लाखों-लाख लोगों के नाम के साथ राम का नाम गौरव से जुड़ा हुआ है। राम स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम थे, तो उन्होंने अपनी प्रजा को भी मर्यादा में बांधकर उसको सुखमय जीवन जीने का अवकाश दिया। पर, दुनिया में राम जैसे राजा कितने हुए हैं?

असल में यह राजतंत्र की एक अनिवार्य शर्त है कि राजा का बेटा ही राजा होता है। चाहे उसमें राज्य करने की योग्यता हो या न हो। पर चूंकि वह रानी के पेट से जन्मा होता है, अतः सत्ता उसे वंश-परम्परा से प्राप्त हो जाती है। प्रजा में से कोई उसे चुनौती नहीं दे सकता। यद्यपि सत्ता एक ऐसी आकांक्षा है कि कई बार एक भाई भी अपने राजा भाई को मारकर शासक बन जाता है। बहुत बार तो सत्ता का आकांक्षी व्यक्ति अपने बाप को भी मौत के घाट उतारकर स्वयं राजा के पद पर आसीन हो जाता। राजतंत्र बाहुबल का खेल भी है। जिसका बाहुबल प्रबल होता है, वह शासन पर अपना अधिकार जमा लेता है। सत्ता एक कूटनीति भी है। बहुत बार कूटनीति के जाल में फंसकर भी राजा सत्ता से च्युत हो जाता है। पर, राजतंत्र की मान्यता ही ऐसी है कि जो एक बार राजा बन जाता है वह वंश परम्परा से राज्य का अधिकारी बना रहता है।

आज सबसे पहली आवश्यकता तो यह है कि क्षेत्रवाद को निःशेष किया जाए। आज इतनी पार्टियां हो गई हैं कि समझौते के बिना काम नहीं चल सकता। लोकतंत्र के पक्ष में प्रतिपक्ष तो समझ में आता है पर जब पार्टियों की भरमार हो जाती है तो सिद्धान्त धरे रह जाते हैं और सत्ता में तालमेल बिठाने के लिए अनचाहे समझौते करने पड़ते हैं। क्षेत्रवाद जितना बढ़ेगा लोकतंत्र उतना ही कमजोर होगा।

कभी-कभी कुछ तानाशाह भी अधिनायक के रूप में सत्ता के आसन पर अधिकार कर लेते हैं। तानाशाही भी एक तरह से कूटनीति तथा बाहुबल की ही परिणति है। बहुत बार तानाशाही सैनिक-क्रान्ति से जन्म लेती है तो बहुत बार वह प्रजा की पीड़ा से भी प्रकट होती है। पर, इसमें कोई संदेह नहीं कि वह एक प्रकार की तानाशाही होती है। वह खून-खराबे का खेल है। हजारों नहीं लाखों-करोड़ों लोगों को रणक्षेत्र में उतरकर अपने प्राणों की आहूति देनी पड़ती है। युद्ध अपने आपमें एक ऐसी त्रासदी है कि उससे अनेक बार धरती को खून से नहाना पड़ा है।

राजतंत्र और तानाशाही की त्रासदी से बचने के लिए अमेरिका में पहली बार लोकतंत्र का प्रयोग सामने आया। अत्याचार से संत्रस्त प्रगतिशील लोगों ने यह प्रयोग किया कि राजा रानी के पेट से नहीं निकले अपितु वोट की पेटी से जनमत के रूप में प्रतिष्ठित हो। लोकतंत्र में यह भी सुविधा है कि एक बार शासक यदि अयोग्य भी आ जाए तो अगले चुनाव में मतदान के रूप में उसे विस्थापित कर नये नेता को स्थापित किया जा सकता है। आज धीरे-धीरे सभी जगह लोकतंत्र मान्य हो गया है। यद्यपि अभी भी कहीं-कहीं राजतंत्र अस्तित्व में है, पर लोकतंत्र आज सर्वमान्य तंत्र विधा बन गया है।

भारत देश भरत नाम के राजा से एक राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। भारत का राज्य बहुत विशाल था। पूरे देश ने उसके स्वामित्व को स्वीकार किया। उसके बाद समय-समय पर चन्द्रगुप्त, अशोक आदि ऐसे राजा भी सामने आए जिनके सुशासन को आज भी याद किया जाता है। पूरे भारत में समय-समय पर भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में हजारों राजाओं ने शासन किया है। आज से लगभग 700 वर्ष पूर्व पंजाब के पुरु नाम के राजा को पराजित कर मुसलमानों ने अपना राज्य स्थापित किया था। यद्यपि प्रारम्भ में मुसलमान थोड़ी संख्या में ही यहां आये थे। ज्यादातर लोग हिन्दू ही थे। इसलिए इस राष्ट्र का नाम भी हिन्दुस्तान ही रहा। पर, मुसलमानों ने हिन्दुओं का धर्मांतरण करवाकर यहां मुसलमानों के जातिगत संख्या-बल में वृद्धि करके लम्बे समय तक भारत में अपना शासन चलाया। सन् 1616 में ईस्ट इंडिया कम्पनी के रूप में अंग्रेज भारत में व्यापार के लिए आये और बाद में मुगल सम्राट् जहांगीर को परास्त कर इंग्लैण्ड के सम्राट् पंचम जार्ज का झण्डा भारत में गाड़ दिया।

भारत देश कभी सोने की चिड़िया कहलाता था। शक, हूण, मुगल आदि अनेक आक्रमणकारियों ने इस देश पर आक्रमण

कर खूब धन-माल लूटा। अंग्रेजों ने भी विविध रूपों में भारत की सम्पदा का दोहन कर प्रभूत धनमाल लूटा। 1947 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई लड़कर बिना रक्त बहाए भारत आजाद हुआ और यहां लोकतंत्र स्थापित हुआ।

लोकतंत्र आज सर्वसम्मत शासन- पद्धति मान ली गई है। भले ही कुछ देशों में चुनाव नाम मात्र के हों, पर फिरभी जनता की उपेक्षा आज संभव नहीं रह गई है। लोकतंत्र तभी सफल हो सकता है जब चुनाव सही प्रक्रिया से हों। यदि चुनाव ही गलत तरीके से हों तो लोकतंत्र को उन्मार्गगामी बनने से नहीं रोका जा सकता। शक्तिपीठ पर यदि अयोग्य व्यक्ति आसीन हो जाता है तो वह बात जनता के लिए कल्याणकारी नहीं बन सकती। जनतंत्र में शक्तिपीठ पर सही व्यक्ति तभी आ सकता है, जब उसे चुनने वाली जनता प्रशिक्षित हो। जब तक जनता अपने भले-बुरे का सही निर्णय नहीं कर पायेगी, तब तक जनतंत्र सफल नहीं हो सकेगा। यह सही है कि जनतंत्र में बहुमत का निर्णय ही मान्य होता है। आवश्यकता तो यह है कि सारे निर्णय सर्वमत से हों। सर्वमत से होने वाले निर्णय ही प्रभावी हो सकते हैं। अल्प और बहुत्व में बंटा हुआ निर्णय होता भी है, तो वह प्रभावी नहीं बन सकता।

यह सही है कि चुनाव के सन्दर्भ में चुनाव आयोग की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है। राजनीतिक पार्टियां चुनाव को अपने पहलू से ही देखेंगी। उनका लक्ष्य लोकतंत्र की सुदृढ़ता नहीं अपितु अपनी सत्ता की स्थापना है। यद्यपि इन वर्षों में भारत में चुनाव आयोग ने काफी सही-सटीक निर्णय लिये हैं। उनसे कई बार राजनेता लोग असमंजस में पड़ते रहे हैं; फिर भी अकेला चुनाव आयोग इस चुनावी दलदली समुद्र से नहीं तार सकता। जब तक जनता का सहयोग नहीं होगा तब तक राजनीतिक पार्टियों को सही राह नहीं दिखाई जा सकती। इसके लिए जनता को प्रशिक्षण देना अत्यन्त आवश्यक है। जनता प्रशिक्षित नहीं हुई तो जातिबल, धनबल, बाहुबल आदि न जाने कितने बल आगे आ सकते हैं। राजनीतिक पार्टियां यह सब नहीं कर सकतीं, अन्ततः जन-प्रशिक्षण की व्यवस्था चुनाव आयोग को ही करनी पड़ेगी।

जन प्रशिक्षण के अनेक पहलू हैं। पहला पहलू तो यह है कि प्रत्याशी को प्रशिक्षण दिया जाए। यदि प्रत्याशी स्वयं ही नशेबाज है तो उससे न्याय की क्या आशा की जा सकती है? यद्यपि आज के युग में नशा एक महामारी बन गया है, बहुत कम लोग उससे बचे हुए हैं, पर नशेबाज लोकतंत्र का सम्यक् नियोजन कर सकें, यह बहुत कठिन बात है। नशेबाज लोगों का अपना परिवेश ही एक भिन्न प्रकार का होता है। अच्छे लोग उनके साथ नहीं जुड़ सकते। कठिनाई तो यह है कि नशा नहीं करने वाले लोग भी चुनाव में जी भरकर शराब पिलाते हैं। सचमुच शराब की बोतल से खरीदे जाने वाले वोट सही आदमी का चुनाव नहीं कर सकते।

इसी तरह धनबल, जातिबल आदि पर अंकुश लगाना आवश्यक है। यह खुशी की बात है कि चुनाव आयोग ने अपने मोर्चों पर दृढ़ता से अपने आपको प्रस्थापित किया है। हर दिन उसके चुनाव संबंधी घोषणाएं सुर्खियों में रही हैं। उसके निर्णयों से राजनीतिक दलों को अनेक परेशानियां हुई हैं, पर जनता ने बहुत बड़ी राहत महसूस की है। आवश्यकता यही है कि चुनाव आयोग तटस्थ तथा स्वस्थ-चुनाव के लिए प्रतिबद्ध हो।

सन् 1950 में भारतीय संविधान लागू हुआ। संविधान के बाद जब चुनाव आयुक्त सुकुमार सेन की देखरेख में प्रथम चुनाव हुआ उस समय अणुव्रत आन्दोलन सक्रिय रूप में था। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के सान्निध्य में कंस्टीट्यूशन क्लब में एक सर्वदलीय सभा का आयोजन हुआ। एक आचार-संहिता का निर्माण हुआ। वह आचार-संहिता आज भी है। समयानुसार उसमें थोड़ा बहुत परिवर्तन भी होता रहा है। उसका कभी-कभी असर भी हुआ पर आज समय बहुत बदल गया है। आज स्वार्थवाद इतना हावी हो गया है कि लोगों की लोकतंत्र से आस्था ही हिल गई है। भ्रष्टाचार इस हद तक बढ़ गया है कि लोकतंत्र का स्वरूप ही विकृत हो गया है। आज अणुव्रत आचार-संहिता की जरूरत पहले से भी ज्यादा है।

यदि भारत में लोकतंत्र को सफल होना है तो आज सबसे पहली आवश्यकता तो यह है कि क्षेत्रवाद को निःशेष किया जाए। आज इतनी पार्टियां हो गई हैं कि समझौते के बिना काम नहीं चल सकता। लोकतंत्र के पक्ष में प्रतिपक्ष तो समझ में आता है पर जब पार्टियों की भरमार हो जाती है तो सिद्धान्त धरे रह जाते हैं और सत्ता में तालमेल बिठाने के लिए अनचाहे समझौते करने पड़ते हैं। क्षेत्रवाद जितना बढ़ेगा लोकतंत्र उतना ही कमजोर होगा।

दूसरी बात यह है कि पार्टियां भी योग्य उम्मीदवारों को ही खड़ा करें। यदि पार्टियां अयोग्य उम्मीदवार को खड़ा करेगी तो मतदाताओं को भी नकारात्मक वोट देने का अधिकार मिलना चाहिए। इससे ही अयोग्य व्यक्तियों को उम्मीदवार बनने से रोका जा सकता है। असल में लोकमत जागृत नहीं होगा तो लोकतंत्र को सफल नहीं बनाया जा सकता।

आज लोकतंत्र को जो चुनौतियां मिल रही है उन से तभी निपटा जा सकता है जबकि जन-जन को जगाया जाए। यह भी एक कठिनाई है कि कुछ आदमी अपने बड़प्पन या लाइन में खड़े रहने से बचने के कारण वोट देने नहीं आते, तो कुछ लोग प्रलोभन के कारण, यहां तक कि मात्र शराब पीकर गलत उम्मीदवारों को वोट दे आते हैं। इसके अतिरिक्त भी अनेक कारण हो सकते हैं जिनसे लोकतंत्र विफल हो जाता है। इस दृष्टि से अणुव्रत आचार-संहिता का अनुपालन किया जाये तो निःसंदेह लोकतंत्र को सफल बनाया जा सकता है। ।

अच्छे जनप्रतिनिधि से ही अच्छी व्यवस्था

आचार्य दयानन्द भार्गव

लोकसभा के चुनाव सिर पर हैं। राजनीतिक चर्चा जोरों पर है। सभी दल अपनी प्रशंसा और दूसरे की निन्दा करने में रस ले रहे हैं। कुछ तटस्थ स्तम्भकार उनका निष्पक्ष विश्लेषण भी कर रहे हैं। मुझे नही मालूम कि वे दल इन विश्लेषणों से कुछ सबक सीख रहे हैं या नहीं। कुछ सीखेंगे तो उन्हें लाभ ही होगा। प्रश्न यह है कि परम्परागत भारतीय दर्शन के पास वर्तमान राजनीतिम ेंय ोगदानके ि लयेकु छहै य ा नहीं? भारतीय दर्शन एक महत्त्वपूर्ण चर्चा करता है कि दर्शन का अधिकारी अर्थात् पात्र कौन है। क्या हम राजनीति में स्पष्ट रूप से यह रेखांकित कर सकते हैं कि राजनीति में प्रवेश का अधिकारी कौन है। क्या हम कह सकते हैं कि टिकट उसी व्यक्ति को देंगे जो प्रान्त, भाषा, जाति, सम्प्रदाय या अन्य किसी खण्डित दृष्टि से न सोचकर अखिल भारतीय सोच रखता हो और जिसका सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत चरित्र भी संदेह से परे हो? भारतीय दर्शन ऐसे और केवल ऐसे व्यक्ति का ही समर्थन करेगा। प्राय: सभी दलों के नेता मुंह से भारतीय संस्कृति की प्रशंसा के पुल बांध देते हैं किन्तु व्यवहार में उम्मीदवार का चयन करते समय जातिगत तथा सम्प्रदायगत समीकरणों को महत्व न देते हों, ऐसा दावा कोई भी दल नहीं कर सकता। फलत: दर्शन की भाषा में कहूं तो अनधिकारी राजनीति में सत्ता हथिया लेते हैं। एक विचारशील व्यक्ति को यह बात बहुत अटपटी लगती है कि कोई भी दल बहुमत के लालच में यह हिम्मत नहीं जुटा पाता कि यदि कोई व्यक्ति भले ही वोट बटोर सकता है, किन्तु भ्रष्ट है तो राजनीतिक दल उसे प्रश्रय न दें। प्रजातन्त्र में ४९ प्रतिशत से काम नहीं चलता, ५१ प्रतिशत चाहिये।

> भारत का संविधान तथा श्रीमद् भगवदगीता ये दो ऐसे ग्रन्थ हैं जिन्हें राजनीति में भाग लेने वालों को बारम्बार पढ़ना चाहिये। महात्मा गांधी ने गीता को अपनी माता बताया है। सभी भारतीय राजनेता यदि गीता को अपनी माता मान लें तो राष्ट्र का काया-कल्प हो सकता है। पश्चिम के चाक-चक्य में हमें यह सब वर्तमान राजनीति में अप्रासङ्गिक लगता हो; किन्तु अरविन्द जैसे मनीषियों ने इस सब की प्रासङ्गिकता विस्तार से हजारों पृष्ठों में प्रतिपादित की है।

इस दो प्रतिशत के लिये दल के राष्ट्रीय स्तर के स्वच्छ छवि वाले नेता भी अनैतिकता से समझौता कर लेते हैं। उनका साध्य भले ही उत्तम हो किन्तु अनुचित साधन बरतना उनके प्रयास को उसी प्रकार दूषित कर देता है जिस प्रकार विष की एक बूंद एक गिलास पानी को जहरीला बना देती है। साध्य ही नहीं, साधन भी शुद्ध चाहिये, यह भारतीय दर्शन का प्रमुख उद्घोष है। इस पर व्यक्तिवादी होने का आरोप लगाया जाता है। यह व्यक्तिवादी है; किन्तु उसका व्यक्तिवाद स्वार्थपरक नहीं, परमार्थपरक है। परमार्थ का अर्थ है कि वही व्यक्ति दूसरों का भला कर सकता है जो स्वयं भला हो और कोई भी भला व्यक्ति दूसरों का बुरा नहीं कर सकता; किन्तु भला तो करता ही है। अत: स्वयं भले बनने का प्रयास व्यक्तिगत है किन्तु स्वार्थ नहीं है, परमार्थ है। याज्ञवल्क्य, बुद्ध, महावीर या शंकराचार्य ने जिस सत्य कोज ानाउ सेअ पनेत कस मेटक रन हीं रखा, जन जन तक बांटा। इस प्रक्रिया में उन्होंने सब प्रकार की सुख-सुविधा भी छोड़ी। इन्हें स्वार्थी न कहकर परमार्थी ही कहना होगा।

हमारा यह सब कहने का अभिप्राय यह

है कि राजनीति यदि लोकहित चाहती है तो राष्ट्र, समाज, नीति, विकास आदि की चिन्ता करने के साथ-साथ यह चिन्तन भी करे कि सभी दल किसे प्रश्रय दें और किसे न दें। वे यह साहस भी जुटायें कि अपात्र को प्रश्रय नहीं देंगे, भले सत्ता रहे या जाये। जनता यह समझ चुकी है कि घोषणा पत्र तो सभी दलों के बढ़िया ही होते हैं। आर्थिक विकास के साथ, बेरोजगारी, निर्धनता और अशिक्षा का उन्मूलन, सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था, कानून का पालन, आतंकवाद का दृढ़तापूर्वक सामना, सबको उन्नति का समान अवसर आदि-आदि बातें सभी घोषणा पत्रों में रहती हैं। इन घोषणाओं को लागू तो व्यक्ति ही करेगा न? राजनीतिक दल यह समझाते आये हैं कि इन अच्छी घोषणाओं को उनका दल इसलिये लागू कर देगा कि क्योंकि उनके दल की ही नीति सही है और दूसरों की गलत। सोचना यह है कि समस्या नीतिगत है या नैतिकतागत? कांग्रेस का राज्य रहा, एक बार भाजपा भी केन्द्र में आई। दोनों ने अपनी-अपनी नीति से ही सरकार चलाई होगी, यह मानना होगा। यदि मामला नीतिगत होता तो तस्वीर बदलनी चाहिये थी। कहीं मामला नैतिकतागत तो नहीं है? भ्रष्टाचार के विरोध में उठने वाला स्वर नीतिगत नहीं है, नैतिकतागत है। नैतिकता सदा व्यक्तिगत होती है। भ्रष्ट भी व्यक्ति ही होता है। जिस किसी दल को हम भ्रष्ट कह देते हैं उस दल के व्यक्ति भ्रष्ट होते हैं। यदि कोई सामूहिक निर्णय भी गलत है तो उस निर्णय की जिम्मेवारी भी व्यक्तियों पर आती है। पश्चिम के प्रभाव में हमने केन्द्र से व्यक्ति को हटा कर समष्टि को केन्द्र में रख दिया। समष्टि बौद्धिक अवधारणा है, ठोस सत्य तो व्यक्ति ही है। राजनीति सामूहिक चेष्टाह ैक िन्तुर ाजनीतिक ाभ ीघ ाटकत ो व्यक्ति ही है।

अत: भारतीय दर्शन व्यवस्था को सुधारने की बात करता है; किन्तु व्यक्ति को सुधारने से आगे जाकर व्यक्ति के रूपान्तरण की भी बात करता है। सुधार बाहरी है, रूपांतरण आंतरिक। व्यक्ति-रूपांतरण की प्रक्रिया का नाम योग है। इस योग ने तीन खण्डों में रूपांतरण की प्रक्रिया को बांटा। आसन-प्राणायाम शरीर-मन को बदलते हैं। यम-नियम-प्रत्याहार व्यवहार को बदलते हैं, ध्यान-धारणा हमारी चित्त-वृत्ति को बदलते हैं और समाधि पर जाकर व्यक्ति का पूर्ण रूपान्तरण होता है। यह अष्टाङ्ग योग है। इस प्रक्रिया से गुजरने के अतिरिक्त मानव जीवन को परिपूर्ण बना सकने का कोई दूसरा वैकल्पिक मार्ग नहीं है। यह बात अब पश्चिम की भी समझ में आ रही है। पता नहीं किस भय से हमारे राजनीतिक दल योग की इस समृद्ध परम्परा को शिक्षा में अनिवार्य बनाने से कतराते हैं? यह हम इसलिये कह रहे हैं कि योग ही व्यक्ति का रूपान्तरण करता है और वस्तुत: तो रूपान्तरित व्यक्ति ही राजनीति का सच्चा अधिकारी है।

इस देश में श्री कृष्ण से बड़ा राजनीतिज्ञ शाायद ही कोई हुआ हो। वे स्वयं तो योगीराज थे ही उन्होंने योद्धा-शिरोमणि अर्जुन को भी गीता में योगी बनने का आदेश दिया था। पतञ्जलि का अष्टांगयोग भारतीय दर्शनों में से एक है किन्तु श्रीकृष्ण की श्रीमद् भगवदगीता सभी भारतीय दर्शनों का समन्वित रूप है, जिसमें पतञ्जलि का अष्टाङ्गयोग भी शामिल है। श्रीमद् भगवद्गीता के सम्बन्ध में जैन मनीषी आचार्य महाप्रज्ञ का यह वक्तव्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि ''गीता आध्यात्मिक और दार्शनिक दोनों है। इसमें नय दृष्टि का पद-पद पर उपयोग है। इसलिये यह द्वैतवादी और अद्वैतवादी दोनों के लिये आधारभूत ग्रन्थ है।''

कुछ समय पूर्व इलाहाबाद उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश ने श्रीमद् भगवदगीता को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करने की संस्तुति की थी। ईसाई धर्मावलम्बी वारेन हेस्टिंग्ज तथा श्री ब्रूक्स जैसे चिन्तकों ने श्रीमद् भगवदगीता की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। भारत का संविधान तथा श्रीमद् भगवदगीता ये दो ऐसे ग्रन्थ हैं जिन्हें राजनीतिम ेंभ ागल ेनेव ालोंक ोब ारम्बार पढ़ना चाहिये। महात्मा गांधी ने गीता को अपनी माता बताया है। सभी भारतीय राजनेता यदि गीता को अपनी माता मान लें तो राष्ट्र का काया-कल्प हो सकता है। पश्चिम के चाक-चक्य में हमें यह सब वर्तमान राजनीति में अप्रासङ्गिक लगता हो; किन्तु अरविन्द जैसे मनीषियों ने इस सब की प्रासङ्गिकता विस्तार से हजारों पृष्ठों में प्रतिपादित की है। यदि हमारे राजनेता उनके ग्रन्थों को उलटने-पलटने का कष्ट करेंगे तो उन्हें वर्तमान राजनीतिक समस्याओं के मूल पर प्रहार करने वाले वे समाधान उपलब्ध होंगे जो इस देश ने पांच हजार वर्षों से अधिकल म्बेस मयत कग ंभीरअ ालोड़न करके प्राप्त किये थे।

इस देश ने सर्व सम्प्रदाय-समन्वय (जिसे भूल से 'सर्व-धर्म समन्वय' कह दिया जाता है; धर्म तो एक ही है, सम्प्रदाय अनेक हैं) का एक मार्ग ऋग्वेद से लेकर आज तक प्रशस्त किया है, जो अनेकता में एकता की खोज है। भारतीय चिन्तन कहता है कि सभी दलों के समन्वय का भी एक मार्ग है जिसमें राष्ट्र हित के मुद्दों पर सब एक होंगे, चाहे उनकी विचारधारा अलग-अलग हो। भ्रष्ट को भ्रष्ट ही कहा जायेगा, चाहे वह किसी भी दल का हो। समर्थ, कुशल और ईमानदार व्यक्ति को ही प्रश्रय दिया जायेगा, चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय अथवा जाति का हो। विपक्ष सत्तापक्ष का पूरक होगा, विरोधी नहीं। एक दूसरे के प्रति अभद्र भाषा और व्यवहार व्यक्ति का दोष माना जायेगा, गुण नहीं। विधानसभाओं और लोकसभा में हमारे सदस्य जो दुर्व्यवहार करते हैं उसे देख सुन कर हमारी युवा पीढ़ी क्या सीखेगी, यह विचारणीय है। यह सब वे बिन्दु हैं जिन पर भारतीय दर्शन वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य पर सोचने के लिये मजबूर करता है। ।

जे 1/7 जीवन सुरक्षा फ्लेटस्,
विद्याधर नगर सेक्टर-2, जयपुर-302023

चुनाव-शुद्धि
कष्टसाध्य है, असंभव नहीं

आलोक भट्टाचार्य

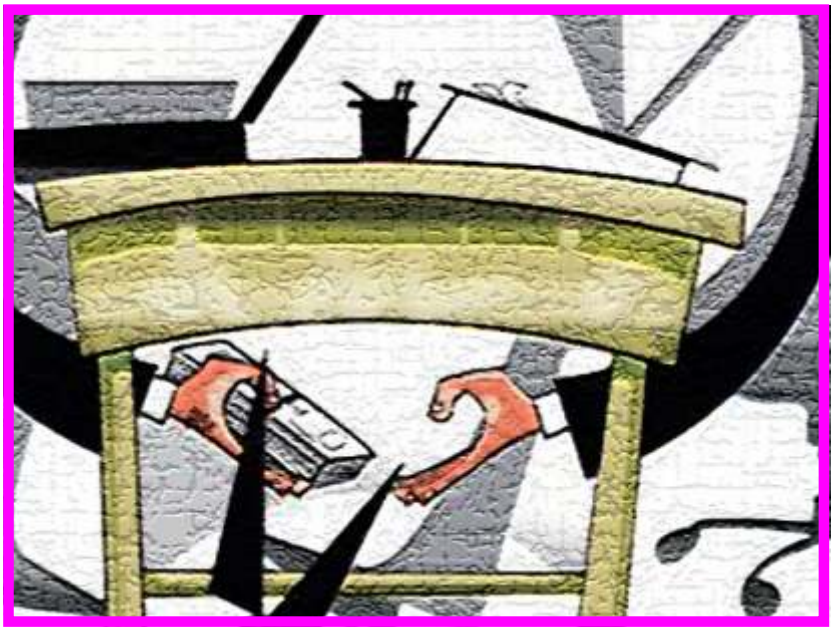

जो व्यक्ति खुली सड़क पर, गली में, किसी दीवार पर, किसी सार्वजनिक स्थान पर बिना झिझक थूक दे, कहीं भी पान की पीक छींट दे, कहीं भी कागज की पर्ची फाड़कर टुकड़े फैला दे, सार्वजनिक स्थलों पर बच्चों के सामने सिगरेट का धुआं उड़ाए और जो ट्रेफिक सिग्नल की परवाह न करे—क्या आप समझते हैं कि वह देशभक्त है? जिस व्यक्ति के मन में अपने देश के प्रति तनिक भी भक्ति हो, धरती माता के प्रति जिसके हृदय में जरा-सा भी आदर हो, वह यह सब कर ही नहीं सकता। जो व्यक्ति पानी बर्बाद करे, पेड़ काट फेंके, तालाब पाट दे, वह निश्चित ही देशद्रोही है। देशद्रोही बनने के लिए शत्रु देशों के पास पैसों के एवज में अपने देश की गुप्त सूचनाएं पहुंचाने जैसे 'बड़े काम' करने की कोई ज़रूरत नहीं, अपने आठ-दस साल के बेटे से कोई एक छोटा-सा झूठ बोल देना ही काफी है। चावल और दाल में मुट्ठी भर कंकर मिलाकर बेच देना ही पर्याप्त है।

ऐसे में देशहित में जनता की सेवा करने के नाम पर अपने लिए जो लोग मतों की मांग करते हैं, देश की व्यवस्था चलाने का मौका चाहकर जो लोग चुनाव में विजयी बनाने की चिरोरियां मतदाताओं से करते हैं, वे यदि चुनाव जीतने के लिए अनैतिक और हिंसक उपायों का सहारा लेते हैं तो वे निःसंदेह असली देशद्रोही हैं। वे देश के लिए अत्यन्त घातक हैं।

टी.एन.शेषन और उनके बाद के कई और मुख्य चुनाव आयुक्तों ने चुनाव-शुद्धि के लिए कई प्रकार के कानून बनाये, कई नियम लागू किये, उनका थोड़ा-बहुत प्रभाव भी पड़ा; लेकिन यह प्रभाव दरअसल सरकारी कागज़ात और जनता की आम जानकारी तक ही सीमित रहा। कानूनों ने जिन बातों के लिए बाध्य किया, उम्मीदवारों ने उनमें भी धांधलियां जारी रखीं, जैसे—चुनाव-खर्च की सीमा, उम्मीदवार की आय, जाति-प्रमाण-पत्र आदि। उम्मीदवारों ने इन मामलों में फर्ज़ी कागज़ात तक जमा किये।

चुनावी हिंसा रोकने के भी कई उपाय काम में लिये गये। सिर्फ स्थानीय पुलिस हिंसा रोकने में जब नाकामयाब रही, तब विशेष सैन्यबल तैनात किया गया। इससे पोलिंग-बूथ भले ही कुछहद तक सुरक्षित हो गये हों पर मोहल्लों-गलियों में होने वाली हिंसा पर काबू नहीं पाया जा सका। कई बार तो पूरे के पूरे मोहल्ले को मतदान करने के लिए घर से बाहर निकलने ही नहीं दिया गया। कहीं-कहीं इसमें स्थानीय पुलिस की भी मिली-भगत पायी गयी।

दरअसल कानून बनाकर और उन्हें लागू करवाकर चुनाव-शुद्धि का लक्ष्य नहीं पाया जा सकता। हत्या के खिलाफ मृत्युदंड का कानून तो सभ्य समाजों में सैकड़ों वर्षों से है, कितने ही हत्यारों को यह सजा मिल चुकी है, अपराधियों में खौफ़ जगाने के लिए कितने ही क्रूर हत्यारों को खुले आम सार्वजनिक स्थलों पर फांसी दे दी गयी, लेकिन हत्याएं फिर भी नहीं रुकीं?

जब तक मतदाता और मतप्रार्थी, अर्थात् समूची जनता की ही चरित्र-शुद्धि नहीं होती, चुनाव-शुद्धि संभव नहीं है। डरा-धमकाकर, पैसे-कपड़े बांटकर, शराब पिलवाकर, झूठे सपने दिखलाकर, बूथ लूटकर, चुनाव जीतना भ्रष्ट चरित्र के लोगों का काम है। ऐसे लोगों के पक्ष में मतदान करना भी दृढ़ चरित्र के सच्चे लोगों का काम नहीं। भ्रष्ट प्रार्थियों को उम्मीदवार बनाना भी भ्रष्ट पार्टियों का ही काम है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि चुनाव की अशुद्धि विभिन्न स्तरों के अशुद्ध-चरित्र

वाले लोगों की ही वजह से है। अतः, यह भी निश्चित है कि जब तक आम चरित्रों में शुद्धता नहीं आयेंगी, चुनाव-शुद्धि संभव नहीं होगी। यह चारित्रिक शुद्धता प्रार्थी को टिकट देने वाली राजनीतिक पार्टियों, मत-प्रार्थियों, मतदाताओं के चरित्रों में तो अनिवार्य है ही, चुनाव-व्यवस्था से संबद्ध समूचे तंत्र में बल्कि ज्यादा अनिवार्य है—चुनावकर्मी, सुरक्षाबल आदि सभी में।

चुनाव-प्रक्रिया लोकतंत्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्रवाई है। इसी के माध्यम से लोकतांत्रिक व्यवस्था का संस्थापन और संचालन होता है। इसी से यह तय होता है कि इतने बड़े देश के भविष्य का फैसला किन हाथों में सौंपा जाये। पवित्र संविधान के उच्च आदर्शों की सुरक्षा का भार किन कंधों पर डाला जाये। निश्चित रूप से इतनी बड़ी जिम्मेदारी सिर्फ और सिर्फ पक्के देशभक्तों को ही सौंपी जा सकती है।

और, मैं जब सड़क पर यहां-वहां थूकने वालों, पेड़ों की हरी-भरी डालियां तोड़ने वालों तक को गद्दार मानता हूं—जाने-अनजाने वे हैं भी—तो हजारों-करोड़ों के घोटाले करने वालों को, वेतन पाते हुए भी अपने हिस्से का काम न करने वालों को, भाई-भतीजावादी खुदगर्ज़ों को, जातिवादी और सम्प्रदायवादी कट्टरों को, प्रांतवादी-भाषावादी संकीर्णों को देशभक्त कैसे मान सकता हूं?

मेरा दृढ़ मत है कि सिर्फ किसी भी तरह चुनाव जीतकर विधानसभा या संसद में पहुंचने वालों या प्रतियोगितामूलक परीक्षाएं और इंटरव्यू पास करके उच्च पदों पर नियुक्ति पाने वालों को किसी भी छोटे से छोटे संवैधानिक पद पर भी तब तक, किसी भी कीमत पर नहीं बिठाना चाहिये, जब तक यह सुनिश्चित नहीं हो जाये कि उसके पास चुनाव जीतने या पद के लिए आवश्यक शैक्षणिक योग्यता होने के साथ ही उन मूल्यों के प्रति समर्पित निष्ठा भी है, जो मूल्य देश के संविधान ने निर्धारित किये हैं। ये मूल्य हैं—लोकतंत्र और पंथ निरपेक्षता की रक्षा तथा इन्हें सुदृढ़ करने का संकल्प, जाति-वर्ग-वर्णभेद रहित उदार मानसिकता, राष्ट्र के प्रति संपूर्ण निष्ठा। संविधान के आदर्शों पर पूर्णतः खरा उतरने वाले व्यक्ति को ही संवैधानिक पद सौंपे जायें, इस नीति का अत्यन्त कड़ाई के साथ पालन किया जाना अत्यावश्यक है।

मतदाता यदि देखे कि उसके द्वारा चुनकर भेजा गया उसका प्रतिनिधि विधानसभा या संसद में पहुंच जाने के बाद अपने आदर्शों से हट गया है, अनैतिक गतिविधियों में लिप्त हो गया है, अपेक्षित कर्तव्यों को दरकिनार कर अपनी स्वार्थसिद्धि में जुट गया है, तो ऐसे बेईमान प्रतिनिधि को उसके पद से खारिज करने का, उसे वापस बुला लेने का अधिकार भी मतदाता के पास होना चाहिये। 'वापस बुलाने के अधिकार' की कार्यविधि चुनाव-आयोग विधि सलाहकारों की मदद से तय करे।

रही साधारण और विशिष्टजनों के चरित्रों में नैतिकता की बात, तो वह देशभर में शैक्षणिक स्तर पर 'जीवन-विज्ञान' के पाठ्यक्रम को प्राथमिक श्रेणी से लेकर स्नातकोत्तर श्रेणी तक अनिवार्यतः लागू करने और बालक से लेकर प्रौढ़ोत्तर आयुवर्ग के सभी लोगों को 'अणुव्रत' का गहन प्रशिक्षण देने से ही अपेक्षित मात्रा में लायी जा सकने की संभावना है। शारीरिक पोषणता के लिए पुष्टिकर आहार देने की ही तरह मानसिक पोषणता के लिए नैतिकता का पाठ देने की आवश्यकता पर व्यावहारिक काम करना होगा। संस्कारों में नैतिकता घोलनी होगी। मात्र ज्ञान, आदर्श में ही नहीं, दैनंदिनी व्यवहार में भी नैतिकता पर प्रयत्क्ष अमल करवाना होगा।

जब तक मानस, हृदय और बुद्धि की शुद्धि नहीं होगी, तब तक चरित्र-शुद्धि नहीं होगी और तभी तक चुनाव-शुद्धि भी कष्ट साध्य ही है। लेकिन याद रखें, यह कष्ट साध्य हो सकती है है, असंभव नहीं है। ।

18 अंबिका निवास, पांडुरंगबाड़ी,
डोंबिवली, पूर्व, मुंबई

15वीं लोकसभा का आखिरी सत्र

काश! सदन का सौहार्द ऐसा ही बना रहे

नई दिल्ली। 15वीं लोकसभा का आखिरी सत्र पिछले दिनों समाप्त हो गया। विदाई की बेला थी तो प्रधानमंत्री समेत सभी बड़े नेता सदन में मौजूद रहे। माहौल बदला- बदला था। न झगड़ा, न हो-हल्ला। एक-दूसरे की तारीफें कीं। गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे ने भाजपा नेता सुषमा और आडवाणी की, सुषमा ने सोनिया और प्रधानमंत्री की और फिर सबने स्पीकर मीरा कुमार की प्रशंसा की।

सुशील कुमार शिंदे ने कहा—'अध्यक्ष महोदया, मैं सुषमाजी का आभारी हूं। वे कभी गुस्सा करती हैं तो ऐसा लगता है कि वह हमसे नाराज हैं। जैसे ही हाउस के बाहर जाती हैं तो उनकी बात में वह मिठास होती है जो मिठाई खाने से भी नहीं मिलती।'

सुषमा स्वराज ने कहा—'मेरे भाई कमलनाथ शरारत से सदन को उलझा देते थे। शिंदे जी शराफत से उसे सुलझा देते थे। इस शरारत और शराफत में सोनियाजी की मध्यस्थता, प्रधानमंत्री जी की सौम्यता, आडवाणीजी की न्यायप्रियता से यह सदन चल सका।'

...और लालकृष्ण आडवाणी की आंखों से छलके आंसू

अपने भाषण के क्रम में सुषमा ने कहा, 'भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष के रूप में आडवाणीजी से मैं मार्गदर्शन लेने जाती थी। वे हमेशा एक ही निर्देश देते थे कि सदन की गरिमा के अनुरूप ही आचरण करना है। नेता प्रतिपक्ष के रूप में जो भूमिका निभा सकी वह आदरणीय आडवाणीजी के आशीर्वाद के कारण निभा पाई।'

सुषमा जी ये बात बोल रही थी तब आडवाणी के आंखों में आंसू आ गए थे।।

चुनाव से पहले और
बाद में भी कुछ चुनें

प्रो. प्रेम मोहन लखोटिया

लोकतंत्र हमने अपनाया। छः से अधिक दशकों का खट्टा-मीठा अनुभव भी हमें हासिल हुआ। विगत-आगत सरकारों ने भौतिक प्रगति भी दी। 'चमकते भारत' वा 'आम आदमी की बुलंदी' का प्रलोभन भी दिया। बहुत सारे आंकड़े हमारे सामने हैं। गत लोकसभा के चुनाव के लुभावने अनुमान भी– प्रायः दो माह की चुनाव प्रक्रिया - चार चरणों में चुनाव - 10 हजार करोड़ रुपए का व्यय - कौन कहे कितना काला, कितना सफेद - चार करोड़ तीस लाख प्रथम बार मतदान करने वाले - मताधिकार का प्रयोग करने वालों में चालीस प्रतिशत युवा। दूसरी तरफ, आतंक का साया, क्रिकेट मैचों के स्थगन या विस्थापन पर विद्रोह। तीसरे आयाम में मर्यादाहीन दल-बदल - गठबन्धनों की उलटफेर और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सांप्रदायिक एवं जातिगत बिखराव और साथ ही मत देने के प्रति विस्तृत उदासीनता, जिसका कारण भले ही उपयुक्त प्रत्याशियों का न होना हो या पूर्व वादा-खिलाफी।

वर्तमान हालात और भी विकट हैं। बड़बोलों का जलजला है, प्रपंचों की बिसात है और आम आदमी के नाम थोपे गए चयन के चटखारे हैं, और भविष्य कैसा होगा–उसकी आशंका हर सजग नागरिक के हृदय में कसक रही है। दलों की दादुरबाजी चरम पर है। हर आशा के विपरीत लक्षण उभर रहे हैं। 'चुनाव' का 'शुद्धिकरण' मनीषा-मंथन की चुनौती दे रहा है; क्योंकि सारी प्रशासनिक व्यवस्थाएं हतप्रभ हैं।

हमें सप्रयास चुनने होंगे गुण और आचरण–
- *चेतना के, चरित्र के*
- *शिक्षा के, दक्षता के*
- *निष्ठा के, कर्मठता के*
- *संयम के, सद्व्यवहार के*
- *सत्यानुसरण के, सच्ची राष्ट्रीयता के*
- *मानववादिता के, अहिंसा के*
- *करुणा के, औदार्य के*
- *स्वावलम्बन के, स्वाभिमान के*
- *लोकहित के, स्वयं के और*
- *समूह के, पूर्ण समन्वय के।*

नियंत्रण के सारे विधान वृहत्तम, रोज-दर-रोज समाचार माध्यमों में वादी-परिवादी तकरार, आमुखीन संवाद-तंत्र में कभी अकथ्य, कभी परम बौद्धिक और कभी अजब-गजब कथनों की हुंकार! अब साधु-संत भी इस अछूत विषय का कभी विस्तार या कभी उद्धार करने में जुट गए हैं। खड़े हैं मुंह बाए बेताल प्रश्न जो टस से मस नहीं होतेः

- चुनाव भले ही सफल हो जाएं पर क्या सार्थक होंगे?
- क्या हमारा लोकतंत्र कहीं परिशुद्ध होगा?
- क्या जिस अमेरिका के विज्ञान और वैभव का हम लालायित होकर अनुशीलन या अंधी नकल करते हैं, उसका लोकतांत्रिक आदर्श और खुलापन भी हम स्वीकार कर सकेंगे?
- क्या हर समय कानून और दण्ड-विधान का सहारा लेने वाले, उन्हें और व्यापक बनाने की नीति की पैरवी करने वाले स्वयं मर्यादित, नियंत्रित और सक्रिय होने का पथ चुनेंगे?
- क्या हमारे युवा उदासीनता या उग्रता से परे चेतनापूर्ण कर्मिता का विकल्प चुन पाएंगे?
- क्या शेषगामी वयवृद्धों की अनुभवी तिकड़मों के आखेट से बचना वे चुन सकेंगे?
- क्या जोश एवं होश का उद्देश्यगामी समन्वय का मार्ग चुन सकेंगे?

हताशाहीन आशावादी होने के बावजूद मैं इन प्रश्नों का घनात्मक उत्तर संभावी नहीं पाता। आन्तरिक मूल्य से हीन आकर्षक वस्तुओं पर ऊंची कीमत के टैग लगे देखने के अभ्यासी तो हम हो ही गए हैं, जन-प्रतिनिधि चुनने से पहले हम स्वयं अपने मन-मानस के प्रतिनिधि भी कहां बन पाए हैं?

भारत में लोकतंत्र की आदि परम्परा रही है। हमारे वैदिक काल से 'जनपदीय व्यवस्था में राजा को भी 'राष्ट्राणि वै विशः' अर्थात् जनता ही राष्ट्र बनाती है, की सीख के साथ 'परिपातु विश्वतः' का आदर्श निभाने का दायित्व दिया जाता था। इतिहास में ऐसी लोकतांत्रिक आस्था की अन्य मिसाल दुर्लभ है तो दुर्लभ है वर्तमान के भारत के हाल की मिसाल भी।

यहां के आर्ष एवं पौराणिक साहित्य में एक शब्द का अत्यन्त दूरगामी एवं सांस्कृतिक महत्त्व है। वह शब्द है 'द्विज'। 'द्विज' माने जिसका दूसरा जन्म हुआ हो। मैं बात पुनर्जन्म की नहीं कह रहा। वह एक सैद्धान्तिक मान्यता है हमारी प्रचलित धार्मिक आस्था की। 'द्विज' का आशय है–एक भौतिक जन्म की अवधि में दूसरा सांस्कारिक जन्म। हमारे बारह या सोलह संस्कार हमें यथा-धारणा 'द्विज' बनाते हैं। अब इस 'द्विजत्व' का एक और विधान और संस्करण जोड़ना युगीन अपरिहार्यता है। मैं जिस 'द्विजत्व' की बात किया चाहता हूँ, वह है इस गणना से परे हमारे वयस्क होने पर सम्पूर्ण नागरिक

अधिकारों की प्रतिष्ठा वाला जन्म–'युगीन द्विजत्व', जिसमें हमारे भौतिक जन्म के सारे परिचय–लिंग, वर्ण, जाति, पंथ, धर्म एकीकृत हो जाते हैं। मताधिकार प्राप्ति के प्रथम स्पर्श से उपलब्ध नागरिक 'द्विज' का प्रस्फुटन। फिर हम भारत के 'द्विज' बन कर सर्वोपरि भारतीय बन जाते हैं। फिर भारतीय होना, भारतीय बने रहना ही हमारे चयन का शलाका आधार बन जाता है।

'भारतीय' बनने के लिए हमें सबसे पहले चुनना होगा हमारे संविधान द्वारा प्रदत्त एवं सुस्पष्ट नागरिक संस्कार। नागरिक बनना इसी जन्म में हमारा दूसरा सार्थक जन्म है। नागरिकता का जन्म हमें कोई जनक-जननी नहीं देता, अपितु यह हमें प्रेरित होकर स्वेच्छा से स्वयमेव अंगीकृत और आत्मसात करना होता है। संविधान ने हमें जहां मूलभूत मौलिक अधिकार दिए हैं, वहीं हमें मूलभूत मौलिक कर्तव्य भी सौंपे हैं। अधिकारों के कोलाहल में जब हमें कर्तव्यों का स्मरण ही न रहे तो जन-प्रतिनिधियों का चुनाव एक दंभी और प्रवंचक प्रक्रिया मात्र बन कर रह जाता है। दुर्भाग्यवशात्, चरित्र पर अनन्त उपदेश देनेवाले एवं आचरण की शुद्धता को सच्चा धर्म बताने वाले भारत देश में आज़ादी और लोकतंत्र की स्थापना के बाद तो यही अधिकांश बार हुआ है। अब तो जैसे जैसे आज़ादी की उम्र बढ़ रही है, यह नागरिक दुष्चरित्रता भी बढ़ रही है। अब सारा दोष सरकार, व्यवस्था और नेताओं पर मंढ़ कर भी क्या होगा? यह सब अपराधी की "मैं आरोपी नहीं" वाली बचाव की मुद्रा भर बन कर रह गया है।

जन्मदायिनी माँ की गोद से मोक्षदायिनी धरती माँ या दुःखतारिणी अग्नि माता की गोद में जाने तक के सारे कालखण्ड में हमें सप्रयास चुनने होंगे गुण और आचरण–

- चेतना के, चरित्र के
- शिक्षा के, दक्षता के
- निष्ठा के, कर्मठता के
- संयम के, सद्व्यवहार के
- सत्यानुसरण के, सच्ची राष्ट्रीयता के
- मानववादिता के, अहिंसा के
- करुणा के, औदार्य के
- स्वावलम्बन के, स्वाभिमान के
- लोकहित के, स्वयं के और
- समूह के, पूर्ण समन्वय के।

आज नीति के नाम पर नियम, अपेक्षाओं के नाम पर अधिकार और उत्कर्ष के नाम पर केवल वैभव की तलाश करने का नतीज़ा है कि व्यापक से विशाल बनता हुआ हमारा लोकतंत्र और अधिक विकृत ही होता जा रहा है। न तो हम किसी नायक और न ही हम किसी दल को सबल समर्थन दे पा रहे हैं और न ही हम उनको चुन लेने के बाद संशोधित करने की कोई शक्ति अपने पास बचा पा रहे हैं। लगता यूं है कि बिल्लियों के झगड़े में रोटी बंदर के लिए सुरक्षित है। हमारी समस्या तो यह है कि न तो हमें बिल्ली बनना चुनना है, न ही चुराई रोटी को चुनना है और न ही झगड़े को। हमें हमारा शुद्ध लोकतंत्र स्वयं अर्जन करना ही चुनना है। यह बात एक बिन्दु या एक वक्त के पड़ाव पर ही नहीं करनी है, अपितु निरन्तर और अपवादहीन करनी है।

बात जिस मंच और समय-संयोग पर गहनता से विवेचित हो रही है, वह है 'अणुव्रत' की आदर्श आचरण-संहिता के परिप्रेक्ष्य में आचार्य तुलसी की जन्म-शताब्दी के अवसर पर वैयक्तिक तथा सामूहिक निष्ठा एवं कर्मठता की। भव्य भविष्य के लिए हमारे पास विकल्प बहुत अल्प हैं–हम स्वयं शुद्ध होकर ही शुद्ध लोकतंत्र की कल्पना और अपेक्षा कर सकते हैं।

यदि हम भारत जैसे महान देश के नागरिक होने के नाते अपनी आन्तरिक शक्ति के महारथी 'अणु' बन कर सही लोकतांत्रिक एवं कल्याणकारी 'व्रत' को आत्मसात कर लें तो हममें से प्रत्येक नागरिक द्विजोत्तम प्रजातंत्री 'अणुव्रती' बन जाएगा।

-स्मृति, 141/1, गणेश नगर, इस्कॉन रोड, मानसरोवर, जयपुर-302020

प्रिय मतदाता!

मतदान के प्रति जिम्मेदारी का अहसास हमें वह शक्ति देता है जिससे हम देश क सुनहले भविष्य की इबारत खुद लिख सकें। फिर आपकी बारी है, इस अहसास को कायम रखें।

v v v

नेताओं के लिए दल-बदल अब कपड़े बदलने जैसा हो गया है। जो उम्मीदवार अपने दल के प्रति ही निष्ठा न रख पाए उससे मतदाताओं के प्रति निष्ठावान बने रहने की उम्मीद नहीं करें।

v v v

आपको यदि अपने क्षेत्र में खड़ा कोई भी उम्मीदवार पसंद नहीं है तो इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन में 'इनमें से कोई नहीं' (नोटा) का बटन दबा अपनी नाराजगी जाहिर कर सकते हैं।

v v v

वोट देने से पहले अपने क्षेत्र के हर उम्मीदवार के बारे में पूरी जानकारी जुटाएं। जिसकी छवि अच्छी हो, जो प्रत्याशी जनता से सीधा जुड़ा हो, जो जनकल्याण की सोचे, उसे ही वोट दें।

v v v

हमारे संविधान ने देश के सभी वयस्क नागरिकों को मतदान रूपी अमोघ अस्त्र प्रदान किया है। मताधिकार का इस्तेमाल कर प्रत्येक नागरिक पसंद के उम्मीदवार को चुन सकता है।

v v v

चुनाव के भारी-भरकम खर्चों का बोझा अंततः देश की जनता पर ही पड़ता है। आपकी ही कमाई से हो रहे इन चुनावों में आप अच्छे उम्मीदवार को चुनने से वंचित नहीं रह जाएं, इसका ध्यान रखें।

v v v

आचरण-शुद्धि ही हो चुनाव का आधार

जस्टिस पानाचन्द जैन

सभी राजनैतिक पार्टियों को, जिनकी सरकारें केन्द्र अथवा राज्य में हैं, वे चुनाव से छः माह की अवधि में ऐसी कोई घोषणा नहीं करेंगे, जिसे सामान्य भाषा में 'लोक- लुभावना' समझा जाता है और न ऐसे कोई कानून बनायेंगे, जो उस कानून के अनुसार 'लोक-हितकारी' बताये गये हैं। घोषणा-पत्र के अनुसार चुनाव जीतकर सरकार बनाने के बाद घोषित कार्य नहीं करने पर अनुच्छेद 356 के तहत ऐसी सरकार को निलम्बित कर वहां गवर्नर-रूल लागू कर देना चाहिए।

एक भक्त ने आचार्य से प्रश्न किया–धर्म क्या है? आचार्य ने बताया–महावीर ने कहा था, आनन्द चाहिए तो खोजलो उसे तुम्हारे भीतर, जो कभी दुःखी नहीं हुआ; अगर चाहते हो अमृत तो खोजलो उसे अपने भीतर, जिसका जन्म कभी नहीं हुआ।

लोकजीवन की प्राणशक्ति आचार ही है। आचार से ही धर्म का उद्भव है। अनेक धर्म, जैसे सिक्ख धर्म आचार को सत्य से भी ऊपर मानता है। सही भी है सदाचार के बिना धर्म प्राणरहित है। धर्मशास्त्रों का आधार आचार-शास्त्र है। धर्म का आधार नीति है। हमारे देश ने आचारहीन शासक को कभी स्वीकार नहीं किया। चरित्रहीन साधु को भी शैतान माना गया है।

'आचरण' का विपरीत शब्द अनाचरण या भ्रष्ट-आचरण है। व्यक्ति का आचरण गिर जाता है, तो वह भ्रष्टाचारी हो जाता है। रिश्वत तो भ्रष्टाचार का गौण रूप है। कर्त्तव्य का निर्वाहन नहीं करना, कानून व नियमों की पालना नहीं करना, हिंसा में लिप्त रहना, व्यसन का आदी होना, बड़ों की इज्जत न करना, जीवों के प्रति करुणा भाव न रखना, यह सब अच्छे आचरण की निशानी नहीं हैं।

भ्रष्टाचार बहुत व्यापक रूप में जाना जाता है। मंदिर, गिरजाघर, मस्जिद आदि कोई भी स्थान ऐसा नहीं है, जहां किसी न किसी रूप में भ्रष्टाचार विद्यमान नहीं हो। हमारी मान्यता हो गई है कि भगवान को भी भक्त का काम करने के लिए प्रसाद चाहिए, चढ़ावा चाहिए। भक्त भी अत्यन्त ही श्रद्धालु हैं! भगवान् को धोखा देने में भी नहीं चूकते। सोने की जगह पीतल चढ़ाकर भगवान् का आशीर्वाद लेना चाहते हैं। भगवान् से प्रार्थना करते हैं हमें ऐसा वरदान दो–'हृदय शुद्ध हो, विमल बुद्धि हो, निर्मल होवे ज्ञान।' फिर हम जैसा आचरण करते हैं क्या प्रभु से हम अच्छे परिणाम की अपेक्षा कर सकते हैं?

अनेक संत-महात्माओं के आश्रम भी चरित्र निर्माण की अपेक्षा पाप के अड्डे बने दिखाई देते हैं। देश की काली कमाई ही भगवान् की पूजा कराती है। विशाल मंदिरों का निर्माण कराती है। जब देवदूत व भक्त दोनों ही भ्रष्ट हैं, फिर सामान्य नागरिक, अधिकारी व राजनेताओं में चरित्रवान् व्यक्ति की तलाश करना कैसे संभव हो सकता है?

आने वाला लोकसभा चुनाव भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक जंग है। शंखनाद हो चुका है। हमें देश हित, समाज हित व मानव हित में सोचना ही होगा कि भ्रष्टाचार कैसे समाप्त हो; क्योंकि हमनें तो सृष्टि के रचनाकार को ही अपने आचरण से भ्रष्ट कर दिया है, तो फिर बचा ही कौन है? इसलिए आवश्यक है कि हमें अपने स्वयं को सुधारना होगा, अपने चरित्र का निर्माण स्वयं करना होगा।

अभी कुछ दिन पूर्व फस्ट इंडिया न्यूज टी.वी. चैनल पर 'भ्रष्टाचार कैसे समाप्त हो' विषय पर वार्ता हो रही थी। छोटे-मोटे सुझावों के अतिरिक्त अन्य कोई हल नहीं निकल पाया। किन्तु; चैनल का प्रयास प्रशंसनीय रहा। आजकल भ्रष्टाचार के दानव को समाप्त करने की दिशा में सभी प्रयत्नशील हैं। हांलाकि, यह सारा प्रयत्न समुद्र में एक बूंद से अधिक नहीं है, फिर भी अच्छा प्रयास है। सर्वोच्च न्यायालय ने चुनावों में सुधार हेतु कुछ सुझाव चुनाव आयोग को दिए हैं। चुनाव आयोग स्वयं सुधारों के लिए आचार संहिता बनाता आया है, उसमें सुधार करता रहा है। केन्द्र सरकार लोकपाल लेकर आई है। राज्य सरकारें भी इस ओर कदम उठा रही हैं। 'आम आदमी' पार्टी ने एक तथाकथित भ्रष्टाचारियों की लिस्ट जारी की है। इनके विरुद्ध चुनाव में अच्छे व्यक्ति खड़े कर, उनका पत्ता साफ कर, भ्रष्टाचार के 'शैतानों' को समाप्त करना उसका लक्ष्य है। उधर, संसद में शोर-शराबे के अतिरिक्त कोई काम नहीं होता। देश का संविधान कहता है कि प्रत्येक नागरिक हिंसा से दूर रहेगा, सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करेगा, पर्यावरण व प्राकृतिक सम्पदा को बचायेगा, प्राणी मात्र के प्रति करुणा का भाव रखेगा; किन्तु सांसद इसकी पालना नहीं करते। हंगामे के बीच ही कानून बना देते हैं। बिना पढ़े-लिखे और दागी लोग ही हमारे लिए कानून बनाने वाले बने हुए हैं। राजनीति हास्यास्पद होती जा रही है।

आइए, भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए क्या किया जा सकता है, इस पर हम सब विचार करें। भ्रष्टाचार की जड़ क्या है? भ्रष्टाचार नये जमाने की वस्तु नहीं है। अतीत में भी यह था–धोखा, फरेब, गद्दारी के रूप में। सत्ता की भूख इसका मुख्य कारण रहा है। विलासिता के लिए भी भ्रष्ट तरीके अपनाये जाते थे और अपनाये जाते

हैं। किन्तु; वर्तमान में भ्रष्टाचार का प्रधान कारण है—नैतिकता की कमी, शिक्षा की दोषपूर्ण नीति। दूसरा मुख्य कारण है, उपभोक्ता संस्कृति। जहां इच्छाएं निरन्तर बढ़ रही हैं। इच्छाओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति सब कुछ करने को तैयार है। उसे पैसा चाहिए। व्यक्ति परिग्रही हो गया है। घोटाले, लाखो-करोड़ों के हो रहे हैं। टू-जी घोटाले ने भ्रष्टाचार का नया इतिहास रचा है। प्रायः धर्म भी दिखावा बन गया है। प्रजातंत्र व्यक्तिवादी हो गया है। सत्ता का केन्द्र धनबल है। बाहुबलि व धनपति समाज में पूजनीय बने हुए हैं। वोट लेने के लिए शासन सब कुछ करने को तैयार है। पहले चुनाव स्वयं की पूंजी से लड़े जा रहे थे, अब सरकार का धन लुटाकर ही मतदाताओं को भ्रष्ट बनाया जा रहा है। भांति-भांति की सब्सीडी मतदाताओं को रिझा रही है। सरकारें कंगाली के कगार पर है।

भ्रष्टाचार मिटाने व चुनावों में शुचिता लाने के लिए कुछ सुझाव इस प्रकार हो सकते हैं—

v शिक्षा में नैतिकता की शिक्षा को उचित स्थान मिलना चाहिए। संविधान में जो नागरिक के मूल कर्त्तव्य बताये हैं, उन पर अमल को सर्वोपरि प्राथमिकता मिले। जो व्यक्ति इन कर्त्तव्यों के प्रति उदासीन है और निर्देशनों की पालना निरन्तरता से नहीं कर रहा है, वह किसी भी पद के योग्य नहीं समझा जाना चाहिए। उसको चुनाव में खड़े होने का कोई अधिकार नहीं दिया जाना चाहिए।

v प्रशासनिक व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। संयुक्त दलों की सरकारों ने राजनीति को भ्रष्टाचार में जकड़ा हुआ है। देश को एक दल की मजबूत व भ्रष्टाचार से मुक्त सरकार अपेक्षित है। सरकार में महिलाओं व युवा-शक्ति की भागीदारी आवश्यक है। यद्यपि वर्तमान परिस्थितियों में कुछ दलों की मिली-जुली सरकार भी कुछ समय के लिए उपयुक्त हो सकती है। किन्तु उनका लक्ष्य और निष्ठा भी एक हो उनके लिए राष्ट्रहित ही सर्वोपरि हो। अन्यथा शासन के निरंकुश होने की संभावना बनी रहती है।

v चुनाव आयोग को संविधान के अनुच्छेद 324 में कार्यपालिका, न्यायपालिका व विधायिका के अधिकार दिए गए हैं। इनका युक्ति संगत प्रयोग होना चाहिए। चुनाव में खड़े होने की योग्यता को पुनः परिभाषित करना चाहिए। हमने शिक्षा में 1950 से ही निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का संकल्प लिया था, इसलिए स्नातक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति से कम शिक्षा वाले व्यक्ति को चुनाव में सांसद अथवा विधायक के पद हेतु योग्य नहीं माना जाना चाहिए। कोई भी व्यक्ति यदि दो वर्ष की सजा का अपराधी है, तो उसे चुनाव लड़ने के लिए सक्षम नहीं माना जाना चाहिए तथा जिस व्यक्ति के विरुद्ध संगीन अपराध लग चुके हैं उसे भी चुनाव में खड़ा होने के लिए अक्षम मानना चाहिए। अपील के कानूनी प्रावधान के होते हुए ऐसे व्यक्ति को यदि कोई राजनैतिक पार्टी खड़ा करती है तो भी जनता को अपने घोषणा-पत्र में अपील करनी चाहिए कि वे ऐसे अक्षम व्यक्ति के पक्ष में 'नोटा' का प्रयोग करे।

v चुनाव-प्रचार के कार्य को सरकारी खर्चे पर किए जाने की योजना बना कर, इस अपार खर्चे से देश को बचाना चाहिए। इससे काले धन पर लगाम लगेगी।

v सरकारी नौकरी में प्रवेश से पहले रिश्वत न लेने की और निष्ठापूर्वक सेवा करने की शपथ लेना आवश्यक होना चाहिए। शपथ-हनन पर नौकरी के निकालने का अधिकार होना चाहिए।

v सभी राजनैतिक पार्टियों को, जिनकी सरकारें केन्द्र अथवा राज्य में हैं, वे चुनाव से छः माह की अवधि में ऐसी कोई घोषणा नहीं करेंगे, जिसे सामान्य भाषा में 'लोक-लुभावना' समझा जाता है और न ऐसे कोई कानून बनायेंगे, जो उस कानून के अनुसार 'लोक-हितकारी' बताये गये हैं। घोषणा-पत्र के अनुसार चुनाव जीतकर सरकार बनाने के बाद घोषित कार्य नहीं करने पर अनुच्छेद 356 के तहत ऐसी सरकार को निलम्बित कर वहां गवर्नर-रूल लागू कर देना चाहिए।

v संसद व विधानसभा में हंगामा करने वालों को अपने कार्यकाल के बकाया समय का कोई भत्ता अथवा लाभ नहीं दिया जावे। इस विषय में स्पीकर का निर्णय अंतिम माना जाए।

v संविधान के अनुच्छेद 334 के अनुसार आरक्षण केवल 10वर्ष के लिए ही मान्य था; किन्तु वह विगत साठ वर्षों से चल रहा है। विधानसभा व संसद में अनुसूचित जाति व जनजाति का आरक्षण समाप्त होना चाहिए। आरक्षण जातिगत न होकर, आर्थिक आधार पर हो।

v लोकपाल और ऐसे ही अन्य कानूनों का अमल पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ होना चाहिए।

v सभी को सत्ता, सुलभ व त्वरित न्याय प्राप्त होना चाहए। विलम्ब के लिए दोषी व्यक्तियों को दुराचरण की गुरुता के अनुसार दण्ड दिया जाना चाहिए।

ये सुझाव लागू होना धीरे-धीरे ही संभव हो सकता है; किन्तु जनता को जागृत करना आवश्यक है और निष्ठा के साथ इस ओर कदम उठाना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। हमें मिलकर देश को सही अर्थों में एक धर्म-निरपेक्ष सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाना है और प्रत्येक नागरिक को चरित्रवान बनाने के लिए जी-जान से जुट जाना है।

25, मौजी कॉलोनी, मालवीय नगर,
जयपुर-302017

वर्तमान परिदृश्य पर एक बेबाक टिप्पणी

देशहित या सिर्फ स्वार्थ ?

प्रो. पुष्पेश पन्त

हम सब जानें क्यों यह मानकर चल रहे हैं कि अब हमें साझा गठबंधन सरकारों के युग में ही अपना जीवन व्यतीत करना है? वंशवादी स्वामिभक्ति हो या सजातीय अनुराग अथवा क्षेत्रीय कूपमंडूकों का 'अहोरूपम् अहो ध्वनि' मार्का जमावड़ा, जो संघीय व्यवस्था के नाम पर हर मतभेद को संवैधानिक संकट का रूप देने की साजिश रचते दिखलाई देता है, धूर्ततापूर्ण गठबंधनों की उपयोगिता पर सवालिया निशान खड़े कर चुका है।

हमारे प्रधानमंत्री ने जब से 'गठबंधन धर्म' की दुहाई दे अपनी सरकार की लाचारी से देश को शर्मसार किया, तभी से जागरूक नागरिक इस स्थापना को पचाने में अपने आप को असमर्थ पा रहे हैं कि अगली सरकार कोई अकेला दल नहीं वरन एक या दूसरा गठबंधन ही बना सकता है।

'भानुमति के कुनबों' के सदस्यों के भ्रष्टाचारी आचरण से त्रस्त मतदाता कई ऐसे दिग्गजों की छुट्टी करने को आतुर-व्याकुल हैं जो दलबदल कानून पारित होने के बाद भी 'आया राम-गया राम' को मात करते थाली के बैंगन की तरह लुढ़कते रहते हैं। किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए यदि इस बार कोई एक दल अपने बलबूते पर ही केन्द्र में सरकार बना ले। (उत्तर प्रदेश तथा पंजाब विधान सभा चुनावों के नतीजे उदाहरण हैं। 'आप' का उदय भी तेजी से बदलते जनमत का उदाहरण है।)

'आदर्श' गठबंधन की बात करना नादानी

आज यह कहना बहुत कठिन है कि सरकार अपना काम दक्षता से कर सके, इसे सुनिश्चित करने के लिए किस आधार पर गठबंधन होना चाहिए। यह तभी संभव है जब कोई वैचारिक साम्य हो या विभिन्न दलों के नेताओं की ईमानदारी निर्विवाद हो। येन- केन- प्रकारेण बहुमत जुटाने के लिए मुंहमांगी कीमत चुकाने का सौदा जब हो चुका हो, तब दक्षता और ईमानदारी का 'संकल्प' कैसे पूरा हो सकता है?

ममता बनर्जी हों या करुणानिधि, साम्यवादी हों या बहुजन समाजवादी पार्टी की सर्वेसर्वा, सभी ने भयादोहन कर अपना हिस्सा वसूलने में असाधारण महारत दिखलाई है। हमारी समझ में चुनाव के पहले बने पारदर्शी गठबंधन नतीजे आने के बाद वाली खरीद-फरोख्त या जोड़-तोड़ की अपेक्षा अधिक वांछनीय समझे जाने चाहिएं।

> **जिस तरह का खंडित जनादेश बार-बार सामने आ रहा है, उसके मद्देनजर किसी 'आदर्श' गठबंधन की बात करना नादानी ही लगती है। ध्रुवीकरण, निर्णायक टकराव और कुछ काल के लिए अस्थिरता जनतंत्र के लिए घातक नहीं समझी जानी चाहिए।**

जिस तरह का खंडित जनादेश बार-बार सामने आ रहा है, उसके मद्देनजर किसी 'आदर्श' गठबंधन की बात करना नादानी ही लगती है। ध्रुवीकरण, निर्णायक टकराव और कुछ काल के लिए अस्थिरता जनतंत्र के लिए घातक नहीं समझी जानी चाहिए। समुद्रमंथन वाले रूपक का इस्तेमाल करें तो विष के बाद अमृत निकलने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

चुनावी घोषणापत्र रस्मअदायगी भर

राजनैतिक दलों द्वारा जो घोषणापत्र चुनाव के वक्त जारी किए जाते हैं, वे अपनी विश्वसनीयता कब की खो चुके हैं। घोषणापत्र महज रस्म-अदायगी भर रह गए हैं। इसमें बखान किए गए सिद्धांतों की तुलना करने में आम मतदाता की कोई दिलचस्पी नहीं रहती। बहुत हुआ तो दो- चार दिन यह चर्चा गरम रहती है कि कौन मुफ्त में या मिट्टी के मोल क्या देने का वादा कर रहा है? कितने दिनों में आसमान से तारे तोड़ लाने वाला है? हालात इतने खराब हो चुके हैं कि सुप्रीम कोर्ट को यह कहना पड़ा है कि ऐसे लोक-लुभावन वादे नहीं किए जाने चाहिए। जाहिर है कि चुनाव सुधार कानून लागू किए बिना इस हरकत को गैरकानूनी बनाना असंभव ही रहेगा। बिना गठबंधन के दबाव के या न्यूनतम साझा कार्यक्रम का बहाना बनाए भी घोषणापत्र सत्ता हासिल करने के बाद बहुत जल्दी रद्दी कागज में बदल जाते हैं।

आज की तुलना अतीत से नहीं

आज जो देखने को मिल रहा है, उसकी कोई तुलना अतीत के किसी अनुभव से नहीं की जा सकती। इंदिरा गांधी के कार्यकाल में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी उनकी कांग्रेस के साथ रही थी तो इसका आधार (कम से कम दिखावटी) साम्य था। आपातकाल के बाद जनता पार्टी की जो बेमेल खिचड़ी पकी, वह भी तानाशाही के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाने की जनतांत्रिक चेष्टा थी। विडम्बना यह है कि उस समय भगवा 'सांप्रदायिक तत्व' और अतिवादी उग्र वामपंथी एक साथ हो सके थे। चुनावी मैदान में एकजुट उतरने के पहले यह गठबंधन हो चुका था।

इसकी फूट ने ही इंदिरा गांधी के सत्ता में लौटने का रास्ता साफ किया था। इस समय चौतरफा घिरी कमजोर कांग्रेस हो या नाम लेने भर को बची माकपा, इनकी मजबूरी अपना अस्तित्व बचाए रखने की है। किसी का कंधा या लड़खड़ाते कदम संभालने को उधार की बैसाखी ही माना जाना चाहिए। यह सिर्फ खुदगर्ज मौका-परस्ती है, दूरदर्शी रणनीति नहीं।।

साभार

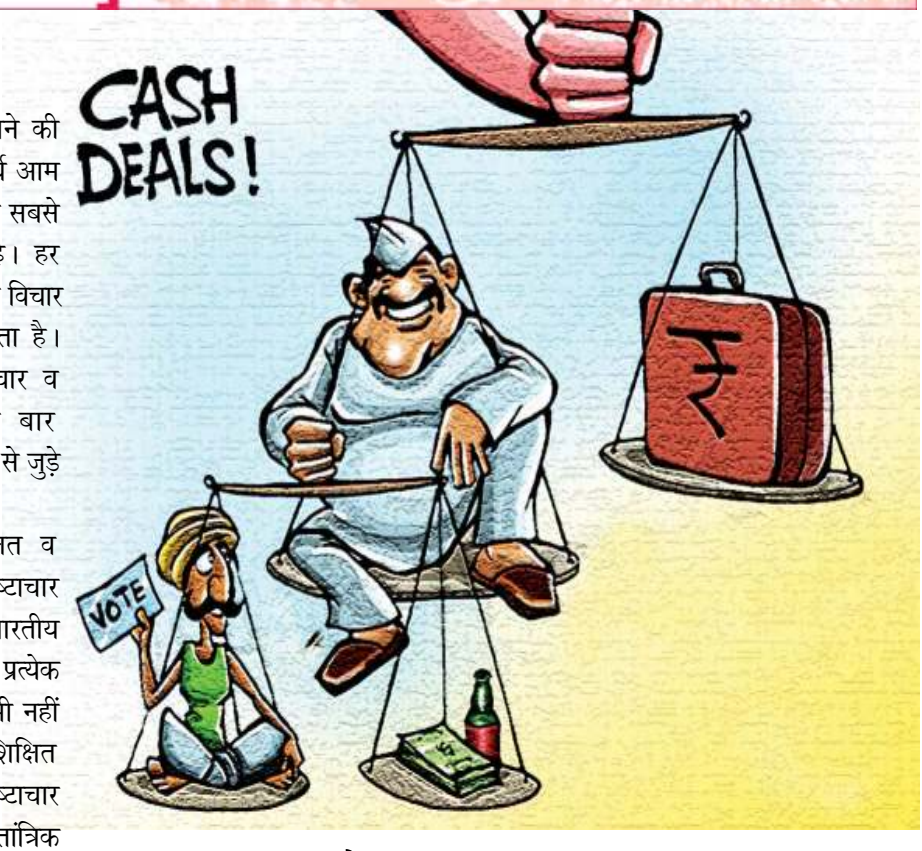

वोट-बैंक की राजनीति
भ्रष्टाचार का आधार

डॉ. हीरालाल छाजेड़ (जैन)

लोकसभा चुनाव की आहट के आने की खबर से हर जगह चुनाव से जुड़े चर्चे आम हो गये हैं। इन चर्चों में दो मसलों पर सबसे ज्यादा विमर्श सुनने को मिलता है। हर आदमी सियासी पंडित की तरह अपना विचार प्रकट करने के लिए उतावला मिलता है। इन दो मसलों में प्रमुख है–भ्रष्टाचार व दूसरा है–क्या नरेन्द्र मोदी इस बार प्रधानमंत्री बनेंगे? हम यहां भ्रष्टाचार से जुड़े राजनीतिक बिन्दु पर विचार करेंगे।

निश्चित रूप से सभी शिक्षित व बुद्धिजीवी लोगों सहित हर कोई भ्रष्टाचार को दूर करना चाहता है। प्रत्येक भारतीय साफ-सुथरा समाज चाहता है, लेकिन प्रत्येक भारतीय इसको पहली प्राथमिकता भी नहीं समझता है। यही एक सवाल शिक्षित मध्यम वर्ग को हैरान करता है कि भ्रष्टाचार खत्म क्यों नहीं हो रहा है? एक लोकतांत्रिक देश में ईमानदार समाज के निर्माण की उचित और पवित्र मांग को पूरा करना इतना कठिन क्यों है? कर्नाटक के चुनाव के बाद तो हताशा और बढ़ गयी है। वहां भारतीय जनता पार्टी के भ्रष्टाचार के खिलाफ वोट गया है। यह तो ठीक है, पर कांग्रेस को क्यों वोट दिया गया, वहां दूसरे विकल्प भी तो खुले थे? तब, फिर वही प्रश्न उपस्थित होता है। लोगों का मोह भ्रष्टाचार करने वालों के प्रति क्यों नहीं बदलता? अगर जनता भ्रष्ट लोगों को चुनती है और उन लोगों को दंडित करती है जो भ्रष्ट व्यक्ति को हटाती है, तब भ्रष्टाचार के लिए दोषी किसको मानें?

भारतीय मतदाताओं के जनसांख्यिकी और सामाजिक ढांचे को समझना महत्वपूर्ण है। जैसा कि उल्लेख किया गया, सभी शिक्षित लोगों सहित हर कोई भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाना चाहता है, लेकिन यह उसकी प्राथमिकता नहीं है; क्योंकि विभिन्न विरोधाभासी एजेंसियों के बीच भ्रष्टाचार का मुद्दा धुंधला पड़ जाता है। भ्रष्ट राजनीतिक पार्टी घोटाले पर घोटालों की शृंखला करती रहे, लेकिन जब तक शोषित, पीड़ित व गरीब वर्ग को खुश रखेगी और उनके लिए मुफ्त के रोटी-मकान आदि बांटती रहेगी और उनके लिए रॉबिन हुड की भूमिका निभाएगी तब तक सत्ता में बनी रहेगी। हर पार्टी कम-ज्यादा भ्रष्ट है। हर आदमी उस व्यक्ति को पसन्द तो नहीं करते किन्तु वोट उसी की पार्टी को देंगे जो उनके लिए घर-बैठे खाने की व्यवस्था करेगी। देश की आर्थिक स्थिति बिगड़ती है, उससे बेखबर होकर वे अपनी प्राथमिकता, यानी वोट-बैंक की लूट को ज्यादा महत्व देते हैं।

चुनाव के समय वोट पाने के लिए थोथे दावे कर प्रत्येक पार्टी व सरकार के दिलों में जन-प्रेम की बाढ़ उमड़ जाती है। झूठे वायदों और उद्घाटन-समारोहों की झड़ी लगा दी जाती है। किन्तु, वोट-बैंक की यह राजनीति वास्तविकता से कोसों दूर होती है। वर्तमान सरकारें चुनाव की आहट महसूस कर अपनी उपलब्धियों का जो ढिंढ़ोरा पीट रही हैं वह भ्रष्टाचार और महंगाई से परेशान जनता के जख्मों पर नमक छिड़कना जैसा है।

जहां तक आम आदमी का संबंध है, खाद्य-पदार्थों, रसोई-गैस, पेट्रोल और डीजल की कीमतों में वृद्धि ने आम आदमी की

कमर तोड़ दी है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार सन् 2005 से सन् 2013 की अवधि में मूंग-दाल की कीमत में 160 प्रतिशत, अरहर में 132 प्रतिशत, चाय में 130 प्रतिशत, सब्जियों में 127 प्रतिशत, गेहूं में 113 प्रतिशत, दूध में 109 प्रतिशत, चावल में 102 प्रतिशत, साबुन में 74 प्रतिशत, आलू में 70 प्रतिशत, बिजली में 31 प्रतिशत और दवाई के दामों में 85 प्रतिशत वृद्धि हुई है। इसके बावजूद सरकार बड़ी बेशर्मी से झूठे दावे कर रही है कि गत तीन वर्षों में खाद्य-पदार्थों के मूल्य में सबसे कम वृद्धि हुई है। सरकार को जनता के दुःख-दर्द से कोई सरोकार नहीं है, उसका लक्ष्य मात्र कॉर्पोरेट जगत को लाभ पहुंचाना है। जिनसे चुनाव लड़ने के लिए उसको विपुल धनराशि प्राप्त होती है। यही कारण है कि सरकार ने बड़े-बड़े पूंजीपतियों व घरानों को आम लोगों को लूटने की खुली छूट दे रखी है व भ्रष्ट मंत्रियों का उन्हें सहयोग प्राप्त होता है।

सरकार व राजनीतिक पार्टियों का लक्ष्य केवलमात्र चुनाव रूपी मछली की आंख छेदने के सिवाय और कुछ भी नहीं है। येन-केन-प्रकारेण चुनाव की बेतरणी पार करने का लक्ष्य है, ताकि उन्हें चुनाव के बाद सत्ता हासिल हो जाए और पांच वर्ष तक जनता को लूटने का सर्टिफिकेट मिल जाए और अपने व अपने प्रिय कमाकर फिर से चुनाव जीतने में सक्षम बनते रहें और यही क्रम चलता रहे। जनता पिसती-कराहती रहे, उसकी चिंता कौन करे? मुट्ठी भर आन्दोलनकारी व सदाचारी नेता प्रयत्न करने पर भी उस भ्रष्ट राजनैतिक प्रक्रिया पर अंकुश नहीं लगा पा रहे हैं। क्योंकि; शोषित पीड़ित, गरीब वर्ग सरकार का साथ देने को मजबूर है। सरकार उनको खुश रखने के लिए मुफ्त की रोटियां व टी.वी., रसोई गैस, बिजली, लैपटॉप, साड़ियां, मकान, पेंशन आदि बांट रही है।

नन्दीशाही, कटक (उड़ीसा)

बाल-वाटिका

चुनावी चुस्कियां

डॉ. जगदीश चन्द्र शर्मा

हवा चुनाव की

आई हवा चुनाव की
एक नवीन बहाव की,
बढ़ते हुए प्रभाव की
चढ़ते हुए दबाव की।
चली जीत की कामना
जाग रही संभावना,
हो न हार से सामना
यही सभी की भावना।।

अनूठी रेल

शुरू हो गया खो-खो-जैसा
चारों और चुनावी खेल,
धुआंधार व्यापक प्रचार की
चलने लगी अनूठी रेल।
रंग-बिरंगे अंदाजों की
झलक दिखाते हैं ये दृश्य,
हर स्टेशन पर धक्का-मुक्की
हर डिब्बे में धक्कमपैल।।

वह पाएगा वोट

जो भी शुभचिंतक है सबका
वह पाएगा अपना वोट,
सबके हित में काम करेगा
वह पाएगा अपना वोट।
कथनी-करनी में समान हो
वह पाएगा अपना वोट,
सबसे नित संपर्क रखेगा
वह पाएगा अपना वोट।।

रंग जमाते

गिरगिट दादा के चुनाव का
देख निराला ढंग,
भांति-भांति की चर्चा करते
मतदाता थे दंग।
भरी सभा में रंग बदलते
दादा बारंबार,
बदल-बदल कर रंग, सभी पर
खूब जमाते रंग।।

चुनाव-घोषणा

जबसे हुई चुनाव-घोषणा
बढ़ा अचानक ठाठ यहां का,
चहल-पहल ने बना दिया है
वातावरण विराट यहां का।
ऐसी हवा बनी तेजी से
मतदाताओं की बस्ती में,
हर प्रत्याशी मान रहा है
खुद को ही सम्राट यहां का।।

भाषण झाड़ा

गधेलाल माइक पर पहुंचे
भाषण ऐसा झाड़ा,
इस चुनाव के वन में जैसे
बब्बर शेर दहाड़ा।
सुनने वाले सन्न रह गए
मानी धाक सभी ने,
लगता था सारे विरोधियों
का कर दिया कबाड़ा।।

पो. गिलूंड, जिला-राजसमंद (राज.)-313207

निर्वाचन-व्यवस्था समस्या और समाधान

प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

न्यायालय के आदेश और जन भावनाओं से विवश होकर सरकार को निर्वाचन व्यवस्था में जो दो संशोधन करने पड़े, वे अपने आप में महत्वपूर्ण हैं। प्रथम यह कि जिन व्यक्तियों को न्यायालय दो वर्ष की सजा सुना चुका हो, वे उस समय तक संसद या विधानसभा के सदस्य नहीं बन सकते जब तक कि उच्च अदालत उस निर्णय को स्थगित न कर दे। दूसरा यह कि अगर किसी मतदाता को चुनाव में खड़ा कोई भी उम्मीदवार पसंद नहीं आये तो वह 'नापसंदगी' का मत दे सकता है। स्पष्ट ही 'नापसंदगी' वाले मत अगर सर्वाधिक हुए तो वहां पर पुनर्निवाचन किया जाना चाहिये; परन्तु अभी तक यह स्पष्ट नहीं किया गया है, इसके लिए स्पष्ट कानूनी व्यवस्था होनी चाहिए।

सर्वप्रथम चुनाव में खड़े होने वाले उम्मीदवारों की संख्या को ही लें। हमारे यहां यह संख्या काफी अधिक होती है, जो कभी कभी एक सौ के आंकड़े को भी पार कर जाती है। अवश्य ही सभी निर्वाचन क्षेत्रों में उम्मीदवारों की संख्या इतनी अधिक नहीं होती। फिर भी औसतन वह 7-8 के आसपास तो होती ही है। इनमें से अधिकांश उम्मीदवार या तो शौकिया निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में खड़े हो जाते हैं या राजनीतिक दल अपने विरोधी उम्मीदवारों के मतों को काटने के लिए स्वयं उन्हें निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में खड़ा कर देते हैं। स्वभावतः ये उमीदवार काफी अधिक मतों को व्यर्थ कर देते हैं, जिससे केवल चालीस

राजनीतिक दलों को पूंजीपतियों द्वारा दिया गया यह धन अधिकाशंतः काला धन होता है। सफेद धन को तो पूंजीपति अपने व्यापार में ही लगाना पसंद करेगा, राजनीतिक दलों को क्यों देगा ? चूंकि चुनावी चंदे का कहीं कोई कानूनी हिसाब नहीं रहता और राजनीतिक दलों को उस पर आयकर भी नहीं देना पड़ता, इसलिए उसमें काले धन को खपाने में कोई कठिनाई नहीं होती। इस चंदे के बदले परमिट, लाइसेंस तथा मूल्य वृद्धि के माध्यम से पूंजीपतियों को जो अतिरिक्त आमदनी होती है, उससे उनका वह काला धन सरलता से सफेद धन में बदल जाता है।

प्रतिशत के आसपास या कभी कभी उससे भी कम मत प्राप्त करने वाला उम्मीदवार प्रायः चुनाव जीत जाता है। हमारे यहां मतदान का औसत सामान्यतः साठ के आसपास रहता है। यदि इस दृष्टि से हम हिसाब लगायें तो पता चलेगा कि विजेता उम्मीदवार को क्षेत्र के कुल मतदाताओं के लगभग 24 प्रतिशत का ही और कभी कभी उससे भी कम का समर्थन प्राप्त हुआ। ऐसी स्थिति में उसे सही अर्थों में जनप्रतिनिधि कहना मुश्किल है।

जनतंत्र में राजनीतिक दलों की संख्या की दृष्टि से आदर्श स्थिति यह समझी जाती है कि वहां केवल दो या अधिक से अधिक तीन राजनीतिक दल हों, ताकि चुनावों में जनता के बहुमत के समर्थन की जानकारी आसानी से और निश्चिततः प्राप्त हो सके। दुर्भाग्यवश हमारे यहां राजनीतिक दलों की संख्या काफी अधिक है तथा चुनाव के समय जिन व्यक्तियों को अपने दल की तरफ से टिकट नहीं मिलता तथा अन्य दलों में भी उनके लिए अच्छी संभावनाएं नहीं होतीं, वे जोड़तोड़ करके अपना नया राजनीतिक दल बना लेते हैं। अपने जिन सदस्यों के विरुद्ध दल अनुशासनात्मक कार्यवाही करता है, वे भी अक्सर अपना अलग राजनीतिक दल बना लेते हैं। महत्त्वाकांक्षाएं पूरी न होने पर भी पृथक् राजनीतिक दल संगठित होते रहते हैं। इन सब बातों से हमारे यहां राजनीतिक दलों की संख्या निरंतर बढ़ती रहती है। बाद में चुनाव जीतने के लिए जब विरोधी दलों में चुनावी समझौते की चर्चा चलने लगती है तो उससे भी अधिसंख्यक दलीय नेता इस उम्मीद में कतराते हैं कि चुनाव में उन्हीं का दल बहुमत प्राप्त कर लेगा अथवा इतने स्थान अवश्य प्राप्त कर लेगा, जिससे वे दलीय गठबन्धन की सरकार में शामिल होने के लिए भावताव करने की बेहतर स्थिति में होंगे।

स्पष्ट ही जनतंत्रीय व्यवस्था में नये राजनीतिक दलों के बनने पर रोक नहीं लगायी जा सकती; किन्तु यह व्यवस्था तो की ही जा सकती है और की जानी चाहिए कि राजनीतिक दलों को मान्यता प्रदान करने के लिए नियमों को अधिक कठोर बनाया जाए तथा राष्ट्रीय चुनावों में भाग लेने का अधिकार केवल उन्हीं मान्यता प्राप्त दलों को प्राप्त हो, जिनके सदस्य पर्याप्त मात्र में कम से कम चार या पांच राज्यों की व्यवस्थापिकाओं में हों। नये राजनीतिक दल अपना कार्य राज्यों से ही प्रारम्भ करें और उसके बाद ही वे राष्ट्रीय आधार पर चुनाव लड़ने के लिए अधिकृत हों। राज्यों में भी नये राजनीतिक दलों की मान्यता के नियम अधिक कठोर हों। केवल

चुनावों के समय उभरने वाले मौसमी दलों के विरुद्ध जनमत को जागरूक बनाना भी आवश्यक है।

उम्मीदवारों की अत्यधिक संख्या में विशेष योगदान निर्दलीय उम्मीदवारों का होता है। अवश्य ही जनतंत्रीय व्यवस्था में किसी भी नागरिक के उम्मीदवार बनने पर रोक लगाना उचित नहीं। बात ठीक है। किन्तु, दूसरी ओर प्रश्न यह भी उठता है कि क्या शौकिया रूप में उम्मीदवार बनने वाले किसी व्यक्ति को यह अधिकार देना उचित है कि वह अनावश्यक रूप से बहुमूल्य मतों को व्यर्थ करके देश की जनतंत्रीय व्यवस्था की खिल्ली उड़ाए? यह आशंका सच है कि यदि निर्दलीय उम्मीदवारों पर पूरी तरह रोक लगा दी जाएगी तो कुछ ऐसे योग्य व्यक्ति संसद और विधानसभाओं में जाने से वंचित रह जाएंगे, जो दलीय प्रपंच से दूर रहना चाहते हैं। समस्या के समाधान के लिए यह व्यवस्था की जानी चाहिए कि निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने की छूट केवल उन्हीं लोगों को मिले, जो किसी विशेष क्षेत्र में अपनी प्रमाणित विशिष्टता रखते हों। उदाहरणार्थ साहित्यकार, पत्रकार, कलाकार, वैज्ञानिक, समाजसेवी और उद्योगपति आदि। निर्दलीय उम्मीदवारों के लिए जमानत राशि भी सामान्य से चार गुना अधिक हो तथा चुनाव जीतने के बाद उन्हें किसी भी दल या सरकार में शामिल होने का अधिकार न हो। मतपत्र में भी निर्दलीय उम्मीदवारों के नाम, दलीय उम्मीदवारों के बाद अलग से हों।

चुनावों में धर्म और जातीयता की घुसपैठ की बात भी विचारणीय है। हमारे यहां धर्मनिरपेक्ष शासन की व्यवस्था के बावजूद चुनावों के समय साम्प्रदायिकता और जातीयता का ही बोलबाला रहता है और अधिकांशतः इन्हीं आधारों पर मत बटोरे जाते हैं। अपने निहित स्वार्थों के लिए राजनीतिक दल धर्माधिकारियों को अपनी ओर मिलाकर उनके माध्यम से अपना प्रचार करवाते हैं। अल्पसंख्यकों या बहुसंख्यकों को धर्म के आधार पर यह कहकर आतंकित करते हैं कि उनकी उपेक्षा की जा रही है वे अपने को ही उनका एकमात्र रहनुमा सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। आरक्षण की जो अस्थायी व्यवस्था पिछड़े वर्गों की प्रगति और उन्हें अन्य वर्गों के समकक्ष लाने के लिए की गयी थी, अब वह भी चुनावी हथकंडे के रूप में एक स्थायी व्यवस्था बनती जा रही है, इससे जनता में साम्प्रदायिकता, जातीयता, असमानता, कुंठा, हीनता तथा ईर्ष्या के भाव तीव्रता से उभर रहे हैं और उनसे उत्पन्न आपसी झगड़े भी सहज स्वाभाविक रूप में तेजी से बढ़ रहे हैं। इस बुराई को समाप्त करने के लिए **सर्वप्रथम** तो ऐसे राजनीतिक दलों की मान्यता समाप्त की जाए, जिनका संगठन केवल साम्प्रदायिक या जातीय आधार पर हुआ हो। **दूसरे,** साम्प्रदायिक और जातीय आधार पर किये जाने वाले चुनावी प्रचार को कठोरता से प्रतिबंधित किया जाए और जो भी व्यक्ति इस प्रकार के प्रचार में संलग्न पाया जाए, उसके विरुद्ध तत्काल कठोर कार्यवाही हो। **तीसरे,** इस प्रकार के व्यक्तियों के चुनावी उम्मीदवार बनने पर प्रतिबंध हो, जो किसी भी धर्म या जाति से संबंधित किसी संस्था के पदाधिकारी हों। **चौथे,** प्रशासनिक अधिकारियों तथा मंत्रियों पर ऐसे साम्प्रदायिक और जातीय सम्मेलनों में भाग लेने पर प्रतिबंध हो, जिनसे जातीय भेदभाव बढ़ने की आशंका हो। इस संबंध में **अंतिम** आवश्यकता इस बात की है कि सभी राजनीतिक दल एक साथ मिलकर यह निर्णय ले लें कि वे आरक्षण की व्यवस्था को कितने समय तक चालू रखना चाहते हैं। इस निर्णय को कानूनी वैधता प्रदान करके उस पर कठोरता से अमल भी किया जाए।

किसी भी जनतंत्रीय देश के लिए मतदाताओं का शिक्षित होना अनिवार्य है। इसीसे वे नागरिक तथा मतदाता के रूप में अपने अधिकार, कर्त्तव्य और उत्तरदायित्वों को भलीभांति समझ कर उसके अनुरूप आचरण कर सकते हैं। इस दृष्टि से भी हमारी स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। अवश्य ही आंकड़ों की दृष्टि से हमने इस दिशा में काफी प्रगति की है, मगर उसे सन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता। हमारे यहां इन दिनों शिक्षा का अर्थ केवल साक्षर बनाना मान लिया गया है और उसी आधार पर शिक्षितों के आंकड़े बढ़ा दिये जाते हैं, मगर यह

गलत है। तद्नुसार इस समय हमारे यहां साक्षरता का प्रतिशत अवश्य ही 65 से भी अधिक है, मगर वास्तविक शिक्षित व्यक्तियों की संख्या इससे आधी भी नहीं है। जनतंत्र तथा उसके आधार–चुनावों की दृष्टि से हम किसी मतदाता को सही रूप में शिक्षित केवल तब कह सकते हैं, जब उसे अपने देश की शासन व्यवस्था के बारे में पर्याप्त ज्ञान हो तथा उसके निर्माण में मतपत्र के महत्व का और अपने उत्तरदायित्व का भलीभांति अहसास हो।

हमारी निर्वाचन-व्यवस्था में सर्वाधिक प्रमुख समस्या उसके आर्थिक पहलू की है। चुनाव लड़ने के लिए उम्मीदवारों तथा उनके दलों को काफी अधिक धन की आवश्यकता होती है, जिससे वे अपने मतदाताओं तक पहुंच कर अपनी बात कह सकें और अपना चुनावी प्रचार कर सकें। हमारे यहां औसतन चुनावी व्यय लोकसभा के लिए प्रति उम्मीदवार 50-60 लाख रूपए से लेकर एक करोड़ रुपए तक का होता है। विशिष्ट व्यक्तियों के निर्वाचन क्षेत्रों में यह व्यय 15-20 करोड़ रुपए तक का हो जाता है। यद्यपि कानून द्वारा चुनावी व्यय की सीमा प्रति उम्मीदवार अलग अलग राज्यों में अलग अलग निर्धारित है, मगर व्यवहार में उस सीमा का पालन कम ही होता है। अवश्य ही चुनावी उम्मीदवार, आयोग को दिये जाने वाले हिसाब में अपने व्यय को उसी सीमा के अन्दर रखता है और शेष व्यय को वह पार्टी की ओर से किया हुआ व्यय बतला देता है या उसकी कोई चर्चा ही नहीं करता। चुनावी प्रचार की ज्यों ज्यों नयी नयी तकनीक और विधियां विकसित होरही हैं और उसकी चकाचौंध बढ़ रही है, त्यों त्यों चुनाव पर किये जाना वाला यह व्यय भी बढ़ता जारहा है। यदि हम लोकसभा के प्रति उम्मीदवार का औसत व्यय एक करोड़ रुपए भी मानें तो राष्ट्रीय स्तर के प्रत्येक राजनीतिक दल को लोकसभा चुनावों में लगभग 500 करोड़ रुपए व्यय करने होते हैं। राज्यों की विधान सभाओं के चुनावों में भी यह व्यय अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग लेकिन काफी भारी-भरकम होता है।

स्पष्ट ही इतना अधिक व्यय कोई भी राजनीतिक दल केवल अपने बलबूते पर नहीं कर सकता। इसके लिए उसे बड़े बड़े उद्योगपतियों और पूजीपतियों पर निर्भर रहना पड़ता है। निश्चित ही ये पूंजीपति, राजनीतिक दलों को अपना यह धन यों ही नहीं दे देते। उसके बदले में वे उनसे परमिट, लाइसेंस तथा अन्य अनेक प्रकार की सुविधाएं प्राप्त कर लेते हैं। चुनावों के बाद कुछ अन्य सुविधाओं को प्राप्त करने का वायदा भी ले लिया जाता है। इस प्रकार हमारे जन प्रतिनिधि चुनाव से पहले ही अपने को पूंजीपतियों के पास गिरवी रख देते हैं। इसी धन के माध्यम से पूंजीपति, सरकार और जनप्रतिनिधियों पर सतत नियंत्रण रखते हैं। और इसीलिए चाहते हुए भी सरकार उनके अन्याय और शोषण के विरुद्ध कोई कठोर कार्यवाही नहीं कर पाती। आये दिन बाजार में अकारण ही वस्तुओं में मूल्य वृद्धि होती रहती है। निरीह जनता आश्चर्य से देखती रहती है और राजनेता यह हिसाब लगाता रहता है कि इस मूल्य-वृद्धि से उसे कितना लाभ मिलने वाला है।

राजनीतिक दलों को पूंजीपतियों द्वारा दिया गया यह धन अधिकाशंतः काला धन होता है। सफेद धन को तो पूंजीपति अपने व्यापार में ही लगाना पसंद करेगा, राजनीतिक दलों को क्यों देगा ? चूंकि चुनावी चंदे का कहीं कोई कानूनी हिसाब नहीं रहता और राजनीतिक दलों को उस पर आयकर भी नहीं देना पड़ता, इसलिए उसमें काले धन को खपाने में कोई कठिनाई नहीं होती। इस चंदे के बदले परमिट, लाइसेंस तथा मूल्य वृद्धि के माध्यम से पूंजीपतियों को जो अतिरिक्त आमदनी होती है, उससे उनका वह काला धन सरलता से सफेद धन में बदल जाता है। हमारे यहां चुनावों में विदेशों से भी काफी धन आता रहता है जिसे नियंत्रित और सार्वजनिक किया जाना आवश्यक है।

प्रश्न उठता है कि समस्या का समाधान क्या हो ? निश्चित ही जनतंत्रेय व्यवस्था को बनाये रखने के लिए चुनाव आवश्यक हैं और चुनावों के लिए धन भी आवश्यक है। यह धन अगर पूंजीपतियों से और विदेशियों से नहीं लें तो कहां से लें ? इस प्रश्न का एक ही उत्तर संभव है और वह है कि सरकार इसकी व्यवस्था स्वयं करे। विश्व के कुछ देशों (उदाहरणार्थ जर्मनी) में इस प्रकार की व्यवस्था पहले से ही है। इसलिए इसमें कोई असामान्य बात नहीं होगी। हमारे यहां भी इस पर अनेक बार विचार किया गया, लेकिन दृढ़ राजनीतिक इच्छा-शक्ति के अभाव के कारण कोई निर्णय नहीं लिया जा सका। 26 सितंबर, 1980 को तत्कालीन मुख्य चुनाव आयुक्त श्री एस.एल. शकधर, 1978-79 में श्री जयप्रकाश नारायण के निर्देश पर बनी सी. एफ.डी. पार्टी की समिति तथा 1990 में सर्वदलीय समिति भी सरकार द्वारा आर्थिक सहायता का समर्थन कर चुकी है। अन्य अनेक अवसरों पर भी विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं ने इसका समर्थन किया है। मगर इनका कोई व्यावहारिक परिणाम नहीं निकला।

वित्तीय सहायता के विरोध में प्रायः यह तर्क दिया जाता है कि सरकार के पास वित्तीय संसाधनों की कमी है। मगर सरकार द्वारा आये दिन राजनीतिक आधार पर जो खर्च किये जाते हैं, उन्हें देखते हुए यह तर्क वजनदार नहीं लगता। इस समय प्रति वर्ष केन्द्र सरकार और राज्य सरकारें भी अपने सांसदों तथा विधायकों को काफी बड़ी धनराशि क्षेत्र के विकास के नाम पर प्रदान करती है, जिसे वे अपनी तथा अपने दल की लोकप्रियता बनाने की दृष्टि से राजनीतिक आधार पर खर्च करते हैं। यदि इस धनराशि का केवल आधा भाग लेकर

एक चुनाव-फंड़ स्थापित कर दिया जाए तो हमेशा के लिए समस्या का समाधान हो सकता है। अन्य फजूल खर्चों को रोककर भी धन बचाया जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर जनता के आर्थिक स्तर के अनुरूप एक रुपये से लेकर एक हजार रुपये तक का चुनाव-टैक्स भी वसूला जा सकता है। इन सब राशियों से चुनाव-फंड की स्थिति सुदृढ़ हो सकती है।

हमारे यहां इस समय देश में जिस भ्रष्टाचार की चर्चा जोरशोर से होरही है और जिसने हमारी राजनीति को कलंकित किया हुआ है, उसकी जड़ में यह चुनावी चंदा ही है। इसलिए यदि हमें अपने राजनीतिक वातावरण को सुधार कर देश के सम्मान को पुनः प्राप्त करना है तो चुनाव-फंड के लिए धन की व्यवस्था करनी ही होगी। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि चुनाव-व्यवस्था सामूहिक रूप से संचालित होने से निश्चित ही चुनाव-व्यय में भी कमी आयेगी।

निर्वाचन व्यवस्था में सुधार के लिए नालायक विजेता उम्मीदवारों को वापिस बुलाने के अधिकार पर भी विचार किया जाना चाहिए। इस समय चुनाव के बाद जनप्रतिनिधियों का जनहित और मतदाताओं के प्रति जो उपेक्षा का व्यवहार रहता है, उसे देखते हुए इस व्यवस्था को सम्भवतः देर सवेर हमें लागू करना ही पड़ेगा, लेकिन फिलहाल इसे लागू करने से अनेक नयी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। **सर्वप्रथम** तो जनप्रतिनिधि की वापसी के लिए जनता की सही राय जानना ही उलझन पूर्ण है। इसमें भी राजनीतिक दल अपने उल्टे सीधे प्रचार के द्वारा जनता को भ्रमित करने की कोशिश करेंगे। **दूसरे,** इससे देश में हमेशा ही चुनाव का वातावरण बन रहेगा और जनप्रतिनिधि को सही ढंग से काम करने का अवसर ही नहीं मिलेगा। इसलिए जनप्रतिनिधियों को वापिस बुलाने के स्थान पर उनके व्यवहार और कार्यप्रणाली पर नियंत्रण लगाना आवश्यक है। उन्हें कानूनी रूप से और नियमित रूप से जनता से सम्पर्क में रहना और मर्यादित आचरण बनाये रखने की व्यवस्था अधिक सफल और सार्थक सिद्ध हो सकती है। यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि नापसंदगी के मत सर्वाधिक होने पर उस क्षेत्र में पुनः निर्वाचन होंगे।

देश की राजनीति और चुनावों को सभी प्रकार के आरोपों से मुक्त रखने के लिए यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक राजनीतिक दल अपने आय-व्यय का पूरा हिसाब रखे, बड़ी धनराशि के सभी लेनदेन बैंक से किये जाएं तथा अपने हिसाब की नियमित जांच करवाकर उसे अपने मतदाताओं के सामने रखे।

हमारी वर्तमान राजनीति जिस रास्ते पर जा रही है, उसे देखते हुए चुनावी व्यवस्था में सुधार का काम सरल नहीं लगता। किन्तु; इस दिशा में अगर जनमत को जागरूक किया जाए तो सब कुछ सम्भव है।

10/611, मानसरोवर, जयपुर - 302020 (राज.)

राष्ट्र-चिंतन

महिला आरक्षण में बाधा पुरुष

राजस्थान की राज्यपाल मार्गेट आल्वा का मानना है कि राजनीति में महिलाओं के आरक्षण में रुकावट के लिए राजनीतिक दल नहीं, बल्कि पुरुष नेता सबसे ज्यादा जिम्मेदार हैं। राजनीति पूरी तरह से पुरुषों की दुनिया है औरा ये अपनी सीट छोड़ना ही नहीं चाहते। फिर भी चूंकि राज्यसभा में बिल आ गया है, इसलिए लैप्स नहीं होगा। उम्मीद की जानी चाहिए कि इस बार ज्यादा महिलाएं जीत कर आएंगी और इस दिशा में ज्यादा कमिटमेंट के साथ काम होगा।

संसद की साख गिराते सांसद

यह घोर चिन्ताजनक है कि संसदीय आचरण के स्थापित मानकों का धीरे-धीरे अवमूल्यन हो रहा है। एक के बाद एक संसदीय सत्र बिना किसी ठोस कामकाज के हंगामे और शोर-शराबे का शिकार होते रहे हैं। जरूरी है कि देश का राजनीतिक नेतृत्व स्थिति की गंभीरता को समझे। संसदीय गरिमा और उसके शिष्ट स्वरूप को बचाना, किसी एक पक्ष का दायित्व नहीं है, बल्कि सर्व-समावेशी, साझी जिम्मेदारी है। सदन में धीरे-धीरे चर्चा, बहस और मंथन नगण्य होता जा रहा है और विचार-विमर्श का स्थान शोर ने ले लिया है। वक्त का तकाजा है कि सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों अपने फौरी नफा-नुकसान से ऊपर उठकर इस नाजुक मसले को हल करने में अपनी-अपनी भूमिका निभाएं।

डॉ. ज्ञानप्रकाश पिलानिया, राज्यसभा सदस्य

दागियों के केस सालभर में निपटाएं

सुप्रीम कोर्ट ने देश की निचली अदालतों को आदेश दिया है कि वे आपराधिक मामलों में संलिप्त मौजूदा सांसद-विधायकों की सुनवाई में तेजी लाएं। कोर्ट ने पिछले दिनों ऐसे मामलों में फैसला सुनाने के लिए निचली अदालतों के लिए एक साल की समयसीमा निर्धारित की है। न्यायाधीश आरएम लोढ़ा की अध्यक्षता वाली पीठ ने अपने आदेश में कहा, 'मौजूदा सांसदों-विधायकों से जुड़े मामलों को प्रतिदिन सुनवाई के आधार पर खत्म किया जाए। यदि सुनवाई एक साल के भीतर पूरी नहीं होती है तो निचली अदालत को इसका कारण अपने प्रदेश की हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस को बताना होगा। अगर इस कारण से चीफ जस्टिस संतुष्ट होते हैं तो वह फैसला सुनाए जाने की निर्धारित समयसीमा बढ़ा सकते हैं।

***निचली** अदालतों में ऐसे कई मामलों की सुनवाई सालों तक लंबित रहती है। अदालती कार्यवाही में देरी के चलते जघन्य अपराधों में आरोपित होने के बावजूद कई सांसद और विधायक विधायी संस्थाओं की सदस्यता हासिल किए रहते हैं।*

- सुप्रीम कोर्ट

यज्ञ सद्बुद्धि का
प्रयत्न चुनाव शुद्धि का

इकराम राजस्थानी

'ज़िन्दाबाद-ज़िन्दाबाद! 'जीतेगा भाई जीतेगा!'

'हम तुम्हारे साथ हैं!'

(नारे गूंज रहे हैं। कुछ चेहरे उभरते हैं और उन्हीं के मुंह से नारों की ये आवाजें आ रही हैं।)

समूह स्वर :- चुनाव आ गए हैं, शोर ही शोर है–

चमचे इठलाते फिरें, नेता करें प्रपंच
देश हमारा हो गया नौटंकी का मंच।

हम किसी को चुनते नहीं है, बस कुछ छंटे-छंटाए लोगों को आगे बढ़ने का अवसर देते हैं। हमारे देश में छत्तीस कौमें हैं, सैंतीसवी कौम नेताओं की है। और नेताओं की चांदी का मौसम है–चुनाव.....चुनाव.....चुनाव!

(कुछ गीतों के स्वर वातावरण में गूंजते हैं–चेहरे ही चेहरे मिलकर गा रहे हैं–)

समूह स्वरः

लो, चुनावों के ज़माने आ गए, याद कुछ वादे पुराने आ गए।
देश की जनता के भोले बैंक में, झूठ को ये फिर भुनाने आ गए।
लीडरों के दिन सुहाने, आ गए, लोग कितने दुम हिलाने आ गए,
इन चुनावों के अनोखे चक्र में, होश जनता के ठिकाने आ गए।

जीतकर लीडर ने चमचों से कहा–

लूट लो, अपने ज़माने आ गए।

(गीत समाप्त होता है, चेहरे अपने आप ही गुम हो जाते हैं, रह जाता है केवल अंधकार)

जुलूस सड़क पर जा रहा है, भीड़ ही भीड़ दिखाई दे रही है। यह नेताजी का काफिला है। वे सबका अभिवादन करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। लोग पूछते हैंः ये कौन हैं?

कविः

गधे-सड़कों पे दौड़े जा रहे हैं, झुकाए सर को घोड़े जा रहे हैं।
कल जो गुन्डे थे, अब नेता बने हैं, वो अपने हाथ जोड़े जा रहे हैं।
जो कचरा रोड़ के लायक नहीं है, उसे संसद में छोड़े जा रहे हैं।
कहीं पर दूर कुर्सी दिख रही है, उसी के पीछे, दौड़े जा रहे हैं।
कहीं दंगा, कहीं चोरी, कहीं डाकाज़नी है, मगर मूंछें मरोड़े जा रहे हैं।
मुसंबी हो गया है मुल्क सारा, इसे नेता निचोड़े जा रहे हैं।
(कवि बस गाता ही, रह जाता है, नेता जी मुस्कुराते हुए आगे निकल जाते हैं। जनता उनके पीछे-पीछे बस मुंह लटकाए चल रही है।)

सूत्रधार : देश की खराब हालत देखकर अचानक किसी चौराहे पर खड़े राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी विचलित हो गए... उनकी मूर्ति से आवाजें, आने लगीं.....(नेपथ्य से–बापू की आवाज)

चौराहे पर चीखते, बापू नित हे-राम!
नेता लूटे देश को, लेकर तेरा नाम।
बापू के सपने सभी, हो गए चकनाचूर!
खीर पिये कुत्ते यहां, गधे चरें अंगूर।

(वातावरण में बापू की दुःख भरी आह। अंधेरे में डूबा हुआ चेहरा...)

जनता त्रस्त है, नेता मस्त है–वो चुनाव में व्यस्त हैं। सारे दल बस अपनी-अपनी सफलता का हल ढूंढ़ने में लगे हैं।

सूत्रधार

लोग मुझसे पूछते हैं, यार, तू किस दल में है।
मैं उन्हें कहता हूं, सारा देश ही दलदल में है।

कोई भी जीते, हारेगी तो जनता ही, चुनावों में नेताओं से हमेशा जनता ही हार रही है।

जनता रो रही है, सरकारें सो रही है–क्या दुर्गति हो रही है? जनता इकट्ठी होकर फरियाद कर रही है, भगवान से प्रार्थना कर रही है। गूंज रहा है जनता का गीत :

समूह स्वर :

सबसे पिटती बारी-बारी, जनता रोती है बेचारी!
गुंडो तक को वोट दे रही, ये कैसी लाचारी!
जनता रोती है बेचारी।
जिसको गाली देती है, फिर उस को ही चुनती है,
पांच साल तक बैठे-बैठे, अपना ही सर धुनती है,
दर-दर फिरती मारी-मारी, जनता रोती है बेचारी!
तुम तो उंगली पर परबत को, रखते सदा अधर में,
इन सारे भ्रष्टों को फेंको, हिन्द महासागर में,
इतना कर दो, हे गिरधारी! जनता रोती है बेचारी।

(नारे गूंजते हैं, नेता मुस्कुराते हैं, जनता परेशान है। धीरे-धीरे सब चेहरे ओझल हो जाते हैं। रह जाता है अंधकार और केवल अंधकार और प्रकाश का इंतज़ार!)

अक्स, 1 ख-10, हाउसिंग बोर्ड-
शास्त्री नगर, जयपुर (राज.)

भारतीय वर्ष का नया दिन

द्वारकेश भारद्वाज

नए विक्रम संवत् का पहला दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, जिस दिन नवरात्र स्थापना की जाती है, भारतीय पंचाग के अनुसार वर्ष का नया दिन होता है, जिस प्रकार अंग्रेजी कलेण्डर के अनुसार 1 जनवरी को नया दिन होता है। इस वर्ष 30 मार्च, 2014 को संवत् 2070 समाप्त होकर 31 मार्च, 2014 को संवत् 2071 प्रारंभ होगा।

जो वर्ष कल तक था, वह आज नहीं रहा। रात्रि के साथ ही अंधेरा रहते-रहते वह किसी ऐसे देश की यात्रा पर प्रस्थान कर गया जहां से कभी और कभी नहीं लौट सकता। नये वर्ष के आगमन के कुछ क्षण ही निकल जाने पर द्रुतगति के वाहन द्वारा भी गत वर्ष का पीछा कर उसे पकड़ पाना नितान्त असंभव है। किसी भी प्रकार उसके लौटने की संभावनाएं सदा-सर्वदा के लिए दफन हो गई। जिस प्रकार समुद्र से जाकर मिली जलधारा, भले ही तट के निकट ही हो, तब भी वह थल की नहीं रहती है, जैसे उसका कुल, गोत्र, नाम सबकुछ परिवर्तित हो गया हो।

थल को तो संतोष रहता है कि उसका जल समुद्र से जा मिला है, तब भी उसका भंडार अक्षय है—रीत नहीं गया है। वह उसी भांति बह रहा है, उसी तरह लहरा रहा है। क्षण

हम आश्वस्त होकर मानते हैं कि इस अंधेरे के आगे ही प्रकाश प्रकट हो पड़ेगा। इसी श्रद्धा व मान्यता को लेकर हमने इस मधु-मास का खंडीकरण किया है। नववर्ष का प्रथम दिन अखंड को, अनन्त को, अपरिमित को मुट्ठी में लेकर देखने-परखने का होता है। स्वयं को तटस्थ करके कल से नववर्ष को यह कहना है—ठहरो, रुको तो, हथेली पर उठा आज हम तुम्हें तौलना चाहते हैं।

भर के जिए भी थल कुंठित नहीं दिखाई देता। उसमें पूर्ववत् ही गति-नृत्य है। उसकी निरंतरता अटूट है। उसकी धारा कल्पधारा है, लेने वाले को वह निराश नहीं करेगी, वह तो बराबर आनन्द दान करती जा रही है।

जल-धारा जैसी ही समय की धारा है। दिन गए, रातें गईं, बात गई, सप्ताह व पखवाड़े बीते और बारह मास हुए, यानी पूरा का पूरा एक वर्ष ही चला गया, लेकिन फिर भी जान नहीं पड़ता कि कुछ रुक गया हो। पता ही नहीं चला कि गत व आगत के बीच में विच्छेद का स्वर कहां व कब खनक उठा

था। रात व दिन की धूप-छांव के एक ही अखंड वस्त्र में कहीं गांठ, जोड़ या सीवन आ पड़ने का प्रसंग तक नहीं उठा।

समय जाता है और समय आता है, बीच में रुकावट नहीं पड़ती। यह क्रम न जाने कब से चल रहा है। आगे ओर पीछे की ओर जितना देखते हैं, इसके सिवा और कुछ देखा और समझा नहीं जाता। रात व दिन छोटे-बड़े तो होते रहते हैं। यह भी ऐसी ही बात है कि कभी माप का मीटर छोटा है और कभी बड़ा, लेकिन मापी जाने वाली वस्तु इससे छोटी या बड़ी नहीं होती। काल अनंत, अक्षय और अखंड है, फिर भी हमें उसके खंड-खंड करने पड़ते हैं और बांधनी पड़ती है उसकी सीमा।

वैज्ञानिक और विज्ञान कहते हैं कि पदार्थ के अणु और परमाणु विच्छिन्न कर दो तो उसमें से एक दुर्निवार शक्ति प्रकट हो पड़ेगी। काल के ये अणु-परमाणु विच्छिन्न यानी अलग-अलग करकें हम अपने जीवन में नई गति, नई स्फूर्ति, नया बल पाना चाहते हैं। संभवतः इसी के लिए यह वर्ष की कल्पना है।

एक ही चैत्रमास को हम कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष में विभाजित कर देते हैं। शुक्लपक्ष से ही हमारा नववर्ष यानी नवसंवत् प्रारंभ होता है। जिस चैत्र के पूर्वार्द्ध में अंधकार था (कृष्णपक्ष) उसे छोड़ दिया है—वह 'गत' हो गया। छोड़ते हुए हमारे मन-मानस में विषाद का मोह उदित नहीं हुआ। अब जिस आगत में प्रकाश है, मधुर व शीतल चांदनी है, उसे हम नए साल में लेकर आगे बढ़ते हैं।

हम आश्वस्त होते हैं कि इस अंधेरे के आगे ही प्रकाश प्रकट होगा। इसी श्रद्धा व मान्यता को लेकर हमने इस मधु-मास का खंडीकरण किया है। नववर्ष का प्रथम दिन अखंड को, अनन्त को, अपरिमित को मुट्ठी में लेकर देखने-परखने का होता है। स्वयं को तटस्थ करके कल से नववर्ष को यह कहना है—**ठहरो, रुको तो, हथेली पर उठे आज! हम तुम्हें तौलना चाहते हैं।**

बी-68, हवेली ज्ञान द्वार, अर्जुन लाल सेठी नगर, जयपुर-302004

विश्व स्वास्थ्य दिवस (7 अप्रेल) पर

आहार संयम आरोग्य का प्रबल आधार

साध्वी जयमाला

जीवन के सात सुखों में पहला सुख 'निरोगी काया' है। सतत साथ देने वाला, सुबह से सायंकाल तक हर कार्य में सहयोग देने वाला यह पौद्गलिक शरीर यानि 'औदारिक शरीर' स्वस्थ रहेगा तो प्रत्येक कठिन से कठिन कार्य हम आसानी से कर पाएंगे। शरीर को निरामय रखने के लिए जहां सामान्य स्वास्थ्य-जानकारियां जरूरी हैं, वहीं खान-पान पर नियंत्रण रखना भी आवश्यक है। आधुनिकता की तथाकथित दौड़ में अस्त-व्यस्त जीवन-शैली के कारण व्यक्ति का दैनंदिन अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। एक ओर तनावपूर्ण जिंदगी और दूसरों तरफ अनेक प्रकार की व्याधियों से हर कोई आक्रांत है। अनेक तरह की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक बीमारियां पैदा हो रही हैं। इन सबका कारण क्या है?

रोग उत्पन्न होने का मुख्य कारण है–भाव। भावनात्मक बीमारी से आक्रांत व्यक्ति मानसिक बीमारी को निमंत्रण देता है। फिर मानसिक बीमारी से शारीरिक बीमारी पैदा होती है। फिर धीरे-धीरे तनाव बढ़ता जाता है। जीवन में कभी भी तनाव न आए, ऐसा तो संभव नहीं है। जहां दो बर्तन होंगे, वहां खड़कन भी होगी, किंतु यदि व्यक्ति तनाव-विसर्जन की प्रक्रिया सीख ले तो संभवतः नुकसान से बचा जा सकता है। तनाव के कारण होने वाली मानसिक व्याधियों से व्यक्ति छुटकारा पा सकता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रेक्षाध्यान पद्धति के अंतर्गत आने वाला कायोत्सर्ग, दीर्घ-श्वास-प्रेक्षा तथा प्राणायाम के प्रयोग स्वास्थ्य प्रबंधन के सरल उपाय हैं।

अनियमित जीवन-शैली ही तनाव पैदा करती है। इसीसे मस्तिष्क में भारीपन पैदा होता है और दिमागी चिंता से मनुष्य अस्थिर बन जाता है। सही निर्णय लेने में अपने आपको अक्षम पाता है। कभी-कभी तो पागलों की तरह जीवन में उन्माद भी आ जाता है। व्यक्ति निराश, हताश, उदास होकर मंजिल से भटक जाता है। उसके चिंतन और निर्णय की सही क्रियान्विति में दूरी बढ़ जाती है। तब चित्त भी डांवाडोल बन जाता है। सही लक्ष्य के बिना जीवन रूपी गाड़ी पटरी पर नहीं चल सकती।

यदि मानसिक चिकित्सा सही रूप से हो गई तो शारीरिक स्वास्थ्य भी स्वतः ही प्राप्त हो जाएगा। महाकवि कालिदास ने कहा है–**शरीर माद्यं खलु धर्म साधनम्**–स्वस्थ शरीर धर्माराधना का प्रथम माध्यम है। शरीर स्वस्थ नहीं तो धर्माराधना भी संभव नहीं है। पर प्रश्न है–स्वस्थ कौन होता है? इसका समाधान निम्नोक्त पद में मिलता है :

नित्यं हिताहार विहार सेवी,
समीक्ष्यकारी विषयेष्ठा सक्तः।
दाता समः स्तयपरः क्षमावान,
आप्तोष सेवी स भवंत्य रोगः।।

जो व्यक्ति सदैव हितकर भोजन करता है, प्रातः भ्रमण करता है, दिनचर्या संयत रखता है, इंद्रियों के विषयों में आसक्त नहीं होता, उदार हृदय होता है, समभाव रखता है, सत्यनिष्ठ होता है, सहिष्णु होता है और आप्त पुरुषों के सान्निध्य में लाभान्वित होता है–इतनी बातें जिसकी चर्या में हों, वही व्यक्ति स्वस्थ होता है।

शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक–तीनों दृष्टियों से स्वस्थ होना ही स्वस्थ व्यक्ति की पहचान है, ऐसा ही व्यक्ति पूर्ण-रूपेण स्वस्थ है। स्वस्थता के मूलभूत आधार हैं–आहार, विहार, विचार और व्यवहार। हमारा शरीर आहार के आधार पर गतिशील रहता है। एकेंद्रिय से लेकर प्रत्येक देहधारी अपने को जीवित रखने के लिए भोजन करता है, पर आहार के गुण-दोष की तरफ ध्यान देने वाले बहुत कम लोग होते हैं। मनुष्य जाति के अधिकांश लोग एकमात्र जिह्वा के स्वाद के लिए समय-असमय नाना प्रकार के भोजन पथ्य-अपथ्य का ध्यान रखे बिना खाते ही रहते हैं। ऐसे व्यक्ति शरीर के प्रति लापरवाह होते हैं और वे विविध प्रकार के रोगों के शिकार हो जाते हैं। अपच, अजीर्ण, अम्लता और 'गैस' आदि विभिन्न कष्टकारी बीमारियां उनको घेर लेती हैं।

भोजन पर नियंत्रण नहीं होने भर से विचार और व्यवहार–सबकुछ बदल जाता है। इसीलिए भोजन की शुद्धता का वर्णन जगह-जगह मिलता है। एक बार एक अनुभवी वैद्यराज से एक मरीज ने प्रश्न किया–'शरीर स्वस्थ कैसे रह सकता है, कोई अचूक नुस्खा बतलाएं।' वैद्य ने कहा–'भाई, अच्छे स्वास्थ्य के लिए सर्वोत्तम औषधि है–'हरी', 'वरी' और 'करी' से दूर रहो।' मरीज ने कहा–'कृपया स्पष्ट करके बतलाएं।' वैद्यराज ने उत्तर दिया–'हरी'

(Hurry) यानि जल्दबाजी से दूर रहें, 'वरी' (Worry) यानि चिंता से दूर रहें, 'करी' (Curry) यानि मिर्च-मसाले का सेवन समझदारी से करने वाला सुखपूर्वक जिंदगी जी सकता है।' तभी 'पहला सुख निरोगी काया' का सिद्धांत पाया जा सकता है। 'निरोगी काया के पीछे सारे सुख सदा सुखदायक लगते हैं।

इसी के साथ भोजन करते समय यदि आवेश, उद्वेग, तनाव और अशांत स्थिति हो, तो उस समय भोजन नहीं करें। ऐसी स्थिति में किया गया भोजन एक तरह से विषतुल्य बन सकता है। अति क्रोध में भोजन का परिपाक सही-रूपेण नहीं होता, बल्कि क्रोध में सब कुछ भस्म हो जाता है। खाया न खाया—एक बराबर हो जाता है और साथ-ही-साथ विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाने का योग भी प्रबल हो जाता है।

स्वाद-लोलुपता भी स्वास्थ्य को बिगाड़ती है। रसासक्त भोजन मात्रा से अधिक खाया जाने के कारण अजीर्ण, अपच, पेचिश होने की संभावना बन सकती है। कहा भी है—

कई जीभ रा बड़ा लोलुपी
अणहुंतो ही खावै है,
माल मुफ्त का मिल जावै तो
पूरी डाड लगावै है।
पेट आफरो चढ़ जाणे स्यूं,
नींद न लैणे पावै है।
खाटी-खाटी आवे डकारां,
जी बहुत मचलावै है।
पड़े राखणो हरदम लोटो,
गड़बड़ घणी मचावै है।
उदर रोग स्यूं पीड़ित होकर,
नयणा नीर बहावै है।
डाक्टर आय इंजेक्शन लगावै,
मानो लाल मिर्च बुरकावै है।
परिजन हालत देख यह बुरी,
आंसूड़ा टपकावै है।

विविध और सुस्वादु खाद्य-सामग्री देखकर जिह्वा का संयम नहीं रखने वालों का यही हाल होता है। इसी से शरीर रोगाक्रांत होता

सतत स्मृति सतत जागरूकता

आचार्य महाप्रज्ञ

आयुर्वेद-विज्ञान की भाषा में जिसे आरोग्य कहा जाता है, अध्यात्म-विज्ञान की भाषा में उसे समता कहा जाता है। दोनों एक ही हैं। आयुर्वेद के आचार्यों ने आरोग्य की बहुत सुंदर परिभाषा दी है—'दोषाणा साम्यं आरोग्यम्'—दोषों का समीकरण आरोग्य है। परंतु प्रश्न है कि समीकरण का उपाय क्या हो? इसका एक उपाय है—सतत स्मृति, सतत जागरूकता। मनुष्य का ऐसा निर्माण हो जाए कि विधायक भावों की स्मृति निरंतर बनी रहे। विधायक भावों के सूत्र हैं—सत्य, क्षमा, मृदुता और ऋजुता। ये सूत्र हैं, शब्द मात्र नहीं हैं। अतः इन शब्दों को रटने मात्र से कोई ऋजु या मृदु हो जाएगा, क्रूरता या माया मिट जाएगी—ऐसा घटित नहीं होगा।

विधायक भावों का प्रतिनिधित्व करने वाले ये शब्द हैं, अतः ये केवल शब्द-भर नहीं, अपितु विधायक भावों के प्रतिनिधि हैं। जो विधायक भाव अंतराल में छिपे हुए हैं, जिन्हें देखा नहीं जा सकता, जाना नहीं जा सकता—उसके साथ संपर्क स्थापित करने के लिए ये शब्द 'संपर्क-सूत्र' हैं।

आचार्यों का यह प्रतिपादित यथार्थ है कि सत्य शब्द की भावना में उतरने पर विधायक भाव जाग सकता है। इसी तरह मृदुता और ऋजुता शब्द की गहराई में डुबकियां लेने से मृदुता और ऋजुता के विधायक भाव जाग्रत हो जाएंगे। पर, एक महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि आचार्य कोई भी बात बतलाते हैं, तो वह 'मंत्र' रूप होती है। आचार्य का अर्थ है—मंत्रदाता। वे मंत्रदान करते हैं। मंत्र का अर्थ होता है—रहस्य, गूढ बात। जो छिपा रहता है, उसका कुछ-थोड़ा रूप सामने आ जाता है और कुछ छुपा का छुपा ही रह जाता है। पूरी बात न समझ में आती है और न सामने आती है। पूरी बात आचार्य ही समझा सकते हैं।

कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि सारी बातें समझ ली गई हैं और जब भेद खुलता है, तो प्रतीत होता है कि कुछ भी नहीं समझा जा सका। स्पष्ट है कि उस रहस्य की 'चाबी' आचार्य के हाथ में ही रहती है।

भावों को हम जान गए, उनका प्रतिनिधित्वकरने वाला 'शब्द' भी हम जान गए, पर दोनों के बीच संपर्क-सूत्र हो यह हम नहीं जान पाए। प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करने वाला साधक उस संपर्क-सूत्र को भी जान जाता है। वह है—जागरूकता, भाव-क्रिया। इसका एक अर्थ है—सतत स्मृति। जिस गुण या दोष को प्रकट करना चाहते हैं, उसके प्रति सतत उपयोग, सतत स्मृति होगी तो वह अवश्य ही प्रकट होगा। कभी उस स्मृति को दीर्घकाल तक भुला दिया तो वह प्रकट नहीं होगा। अतः सतत-धारा या अखंड-धारा बहुत महत्वपूर्ण है। बूंद-बूंद से वह काम नहीं हो सकता, जो काम धारा से होता है। कभी कुछ किया और कभी नहीं किया, मन हुआ तब ध्यान करने बैठ गए और मन नहीं हुआ तो दो महीने भी ध्यान नहीं किया—यह बूंद-बूंद की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया अधिक लाभप्रद नहीं होती।

सफलता के लिए निरंतरता चाहिए। जिस भाव को हमें विकसित करना है, प्रकट करना है—उसकी सतत स्मृति करनी चाहिए। उसका निरंतर अभ्यास करने से वह अवश्य ही प्रकट हो जाता है। अतः 'सतत स्मृति, सतत जागरूकता'—यह 'संपर्क-सूत्र' है, जो हमें भीतरी भावों से जोड़ता है।

है। डाक्टरों की शरण में जाना पड़ता है। बीमारी के कारण शरीर में तनाव, मौत का भय, चिंता, दुख आदि से जिंदगी कष्टकारी बन जाती है और ऐसे रोगों से छुटकारा पाना दूभर हो जाता है। आखिर में ऐसा व्यक्ति यमराज का मेहमान बन जाता है।

अनियमित जीवन-शैली ही तनाव पैदा करती है। इसीसे मस्तिष्क में भारीपन पैदा होता है और दिमागी चिंता से मनुष्य अस्थिर बन जाता है। सही निर्णय लेने में अपने आपको अक्षम पाता है। कभी-कभी तो पागलों की तरह जीवन में उन्माद भी आ जाता है। व्यक्ति निराश, हताश, उदास होकर मंजिल से भटक जाता है। उसके चिंतन और निर्णय की सही क्रियान्विति में दूरी बढ़ जाती है। तब चित्त भी डांवाडोल बन जाता है। सही लक्ष्य के बिना जीवन रूपी गाड़ी पटरी पर नहीं चल सकती।

जो जानलेवा बीमारियां हम वर्तमान में देख-सुन रहे हैं, वे सभी अनुचित भोजन, फास्ट-फूड और खान-पान की अशुद्धता आदि से पैदा होती हैं। मांसाहार और मदिरा तथा अन्य नशीले पदार्थों का सेवन आधुनिक युवापीढ़ी में दिन-प्रतिदिन फैशन की तरह बढ़ता जा रहा है। स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ हो रहा है। नित नई व्याधियों से गिरते स्वास्थ्य के साथ-साथ आपसी रिश्तों में दरारें और जीवन-मूल्यों में बिखराव आदि ऐसी विकट समस्याएं हैं जो जीवन के वास्तविक मूल्यों को धुंधला रही हैं। खान-पान शुद्ध नहीं होगा तो आदमी की विचारधारा भी पवित्र कैसे रहेगी? वस्तुतः खान-पान का प्रभाव पूरी जीवन-शैली पर पड़ता है।

आयुर्वेद में वैद्यों ने आहार-संयम को परम औषधि माना है। कहा भी है—लंघनं परमौषधम्। भगवान महावीर ने भी बारह प्रकार का तप बतलाया है। उसमें सर्वप्रथम लंघन यानी उपवास है। अगर उपवास न हो सके तो—'ऊनोदरी' तप को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बतलाया है। इसका आध्यात्मिक महत्त्व तो है ही, साथ ही साथ स्वास्थ्य भी अपने आप प्राप्त हो जाता है। इससे वात, पित्त एवं कफ—तीनों दोष सम हो जाते हैं। इससे हमारा आमाशय, पाचनतंत्र और पित्ताशय रोगाक्रांत नहीं होते।

इसलिए व्यक्ति अपने भोजन का स्वयं निर्णय करे कि मुझे कौन-सा भोजन अनुकूल है। डाक्टर, वैद्य या हकीम अच्छे स्वास्थ्य के बारे में बता तो सकते हैं, मगर खान-पान का ध्यान तो व्यक्ति को स्वयं ही रखना होगा। एक व्यक्ति मधुमेह का मरीज है। 'डायबिटीज' वालों को मिठाई नहीं खाने को कहा जाता है, मगर रोगी मिठाई खाए बिना रह नहीं सकता। इस हालत में बीमारी के बढ़ने के साथ अंततः मौत को ही आमंत्रण मिलता है। इसी प्रकार हृदय रोगी या दमा के रोगी अगर खान-पान का ध्यान न रखें तो बीमारी बढ़ने की संभावना अत्यधिक बढ़ जाती है और व्यक्ति अकाल मृत्यु को प्राप्त होता है। एक संस्कृत कवि ने लिखा है—**अति भुक्ति रति वोक्ति, सद्यः प्राणाप हारिणी।** भूख से अधिक खाना शरीर को ताकतवान बनाने की बजाए उसके बल को क्षीण करता है।

आहार का संयम नहीं रखने वाले समय से पहले ही वृद्ध हो जाते हैं। इसलिए मनुष्य को आहार संयम का मूल्यांकन करना चाहिए। आहार संतुलित हो, साथ ही हित, मित और कृत हो। शरीर की आवश्यकता के अनुसार ही उसे ग्रहण करना चाहिए। सात्त्विक आहार से व्यक्ति का आचार-विचार और व्यवहार सुव्यवस्थित रहता है तथा मानसिक और भावनात्मक संतुलन भी बना रहता है।

उत्तेजना के अल्पीकरण में सात्त्विक आहार सहयोगी बनता है। इसलिए कहा है कि तामसिक पदार्थ मत खाओ। तामसिक भोजन आलस्य, मानसिक दुर्बलता, 'कोलेस्ट्रोल' तथा मोटापे को बढ़ाता है। आहार का असंयम मोटापा बढ़ाने में निमित्त बनता है। अधिक चर्बी नुकसानदायक होती है, अनेक रोगों की जननी होती है। हृदय रोग, श्वास-फूलना, उच्च रक्तचाप, स्मरण-शक्ति का क्षीण होना आदि स्थितियां आहार के असंयम का ही प्रतिफल है। यह असंयम हमारी तेजस्विता को भी निगल जाता है। श्लथगति, बुझे-बुझे निस्तेज चेहरे, स्वार्थीपन, आक्रामक मुद्राएं—इन सबका मुख्य कारण आहार का असंतुलित होना ही है। वैज्ञानिकों का भी मानना है कि व्यक्ति जैसा आहार करता है, वैसे ही 'न्यूरोट्रांसमीटर' बनते हैं और जैसे 'न्यूरोट्रांसमीटर' होते हैं, वैसा ही व्यक्ति का आचार और व्यवहार हो जाता है।

शरीर शास्त्र के अनुसार मनुष्य की रचना बहुत ही सुंदर तरीके से हुई है। माना जाता है कि व्यक्ति की जीवन-शैली अगर सुचारू रूप से संचालित हो तो मनुष्य के फेफड़े, हृदय, और किडनी में तीन सौ वर्ष काम करने की क्षमता है। मगर, आज 'फास्ट-फूड' और खान-पान की असंयमित शैली ने मनुष्य के पेट को कूड़ादान बना दिया है और उसकी शारीरिक ऊर्जा का ह्रास हो रहा है। आहार के जरिए शरीर में ऊर्जा और विष दोनों बनते हैं। ऊर्जा से शक्ति प्राप्त होती है और विष से बीमारियां। इस विष के निष्कासन का उपाय है—अनाहार रहना, ऊनोदरी तप करना। भूख से कम खाना और 'संयम ही जीवन है'—इस सूक्त को सदैव ध्यान में रखना।

यह शरीर धर्माराधना का साधन है। अगर शरीर स्वस्थ नहीं है तो साधना नहीं हो सकती। तप, जप, स्वाध्याय और ध्यान निरोगी काया से ही सुचारुरूपेण हो सकता है। अतः धर्माराधना के लिए व्यक्ति खाने का संयम करे। प्राण ही जीवन है। स्वास्थ्य का मूल हेतु भी प्राण है। हमारे शरीर का संचालक प्राण है। उसे दीर्घायु बनाने के लिए पथ्य, आहार के साथ प्राणायाम, आसन आवश्यक हैं। आचार्य श्री महाप्रज्ञ स्वास्थ्य की तीन शर्तें बताते हैं—1. मस्तिष्क की आर्द्रता, यानी मस्तिष्कीय मज्जा में रूखापन न आए। 2. सुषुम्ना और मेरुदंड लचीला रहे। 3. अंतः स्रावी ग्रंथियों के स्राव संतुलित रहें। यदि हम इन्हें स्वस्थ रखेंगे तो स्वयं भी स्वस्थता पाएंगे।

समीक्षा

``अणुव्रत का दीवट: नैतिकता की बाती''

एक अनुशीलन

जतनलाल रामपुरिया

फूलों में पंखुड़ियों का सौन्दर्य होता है, पराग (पुष्पासव) की सुवास होती है और इसलिए उनमें मन को हरा-भरा करने की क्षमता होती है। साहित्य में शब्दों का सौन्दर्य होता है, विचारों की सुवास होती है और वह फूलों के सौन्दर्य व सुवास से भी बढ़कर होती है, इसलिए उसकी क्षमता भी अपरिमित होती है। साहित्य ही है जो मन का कायाकल्प कर सकता है, जो जीवन को संपूर्ण नई दिशा दे सकता है।

अन्य सब कलाओं से मिलने वाला तोष अपेक्षाकृत अस्थायी होता है, बहुधा उतने ही समय के लिए, जितने समय हम उनके समीप होते हैं। साहित्य जो तृप्ति प्रदान करता है वह स्थायी होती है, या यों कहूं कि आजीवन बनी रहती है। साहित्य कभी हमें अकेला नहीं छोड़ता।

मनुष्य जीवन की सार्थकता है—श्रेय के सृजन में, प्रेय की प्राप्ति में। उस लक्ष्य तक पहुंचने में साहित्य ही केवल सहायक बनता है। गांधी जी पहले सिर्फ गांधी जी थे। उन्हें बापू और महात्मा बनाया, रस्किन की एक छोटी सी पुस्तक ***अनटू दिस लास्ट*** ने। ज्ञान का अजस्र स्रोत, साहित्य जिसका वाहक है, महात्माओं की प्रज्ञा से प्रवाहित होता है और अपनी बारी में, जेनेटिक क्रिया की तरह, नए प्रज्ञापुरुषों का सर्जन करता है।

मुनि राकेशकुमार जी ने मुनि-चर्या की, साधना के साथ जीने की सर्वोत्कृष्ट कला साहित्य की भी उपासना और आराधना की है। वे एक नैसर्गिक मेधा-संपन्न शब्द-शिल्पी हैं, शोधधर्मी लेखक हैं और कल्पनाधर्मी निरूपक और व्याख्याकार हैं। हिन्दी, राजस्थानी, संस्कृत और प्राकृत - चार भाषाओं का पुष्ट ज्ञान और उनके द्वारा अध्यात्म, धर्म, संस्कृति और विविध सामाजिक विषयों पर विद्वत्तापूर्ण लिखी अनेक पुस्तकें उनके पुरुषार्थधर्मी होने की साक्षी हैं। उनकी कृतियां विचारपक्ष एवं भावपक्ष की दृष्टि से जितनी सबल हैं, शब्द-सौष्ठव, भाषा, शैली, प्रवाह और संप्रेषणीयता की दृष्टि से भी उतनी ही सशक्त हैं। जीवन से सीधे सरोकार रखने वाले और समाज को व्यापक स्तर पर प्रभावित करने वाले विषयों पर वे जिस सहजता से लिखते हैं, गूढ़, गंभीर, तात्विक विषयों पर भी उनकी लेखनी उसी निर्बाध गति से चलती है।

कल्पना को आकार देने के लिए एवं वर्तमान अर्थकेन्द्रित और स्वार्थपरक परिवेश को परिष्कृत और परिमार्जित करने की कामना के साथ अणुव्रत आचार संहिता बनी। इस संहिता के संकल्प रूप में धारे जाने वाले, छोटे-छोटे व्रतों का उद्देश्य नीतिनिष्ठ जीवन शैली की पुनर्स्थापना करना है। इस काम को आगे बढ़ाने का दायित्व मुनिश्री को भी सौंपा गया और वे लगातार कई वर्षों तक इस अभियान का संचालन करते रहे।

मुनि राकेशकुमार जी की सद्य प्रकाशित कृति 'अणुव्रत का दीवट : नैतिकता की बाती' अभी मेरे हाथों में आई। मैंने उसे आद्योपांत पढ़ा। अणुव्रत प्राध्यापक के रूप में समय-समय पर लिखे मुनिश्री के लेख, भाषण और संवाद इस पुस्तक में विषयानुकूल शीर्षकों के साथ संकलित हैं और अणुव्रत को जन-जन तक पंहुचाने के उसके अभिप्सित उद्देश्य को आगे बढ़ाने में सक्षम हैं।

जिस भारतीय संस्कृति और सभ्यता के बारे में देशवासियों के मन में गौरवबोध रहा है, वह द्रुतगति से अस्ताचल की ओर अग्रसर है। उसकी जगह ही द्रुतगति से हिंसा, क्रूरता, जुगुप्सा, भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता, रूढ़िवादिता, विलासिता और आडम्बर जैसी अनिष्टकारी प्रवृत्तियाँ पनप रही हैं। राजनैतिक, सामाजिक और वैयक्तिक—इन तीनों क्षेत्रों में आयी इन वक्रताओं, विसंगतियों और विकृतियों के उन्मूलन और जनमानस में नैतिक मूल्यों का संचरण—इस दोहरे लक्ष्य के साथ गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत की कल्पना की थी।

उस कल्पना को आकार देने के लिए एवं वर्तमान अर्थकेन्द्रित और स्वार्थपरक परिवेश को परिष्कृत और परिमार्जित करने की कामना के साथ अणुव्रत आचार संहिता बनी। इस संहिता के संकल्प रूप में धारे जाने वाले, छोटे-छोटे व्रतों का उद्देश्य नीतिनिष्ठ जीवन शैली की पुनर्स्थापना करना है। इस काम को आगे बढ़ाने का दायित्व मुनिश्री को भी सौंपा गया और वे लगातार कई वर्षों तक इस अभियान का संचालन करते रहे। प्रस्तुत पुस्तक उनके उन्हीं प्रयासों की एक कड़ी है।

इस पुस्तक में अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन की पृष्ठभूमि, जीवन मूल्यों के लोप और अनैतिकता के वातावरण से उपजी आज की समस्याएं व साथ ही साथ उनके समाधान पर विशद विवेचन है। लेखक की विवेचना की परिधि में विषय से संबंधित सभी प्रश्न और उत्तर अन्तर्भुक्त हो जाते हैं। पुस्तक में यत्र तत्र मुनिश्री के कुछ विचार नीचे उद्धृत हैं—

- असंयम, आग्रह, आवेश, आकांक्षा, अहंकार और असन्तुलन—ये छह अ-वर्णवाचक शब्द हिंसा के प्रमुख कारण हैं। इनके प्रभाव से हिंसा की आग को हवा मिलती है। इस आग का शमन करने के लिए संयम, समन्वय, शांति, सापेक्ष-दृष्टि, सह-अस्तित्व और संतुलन, इन छः स-वर्णवाचक आदर्शों का विकास होना जरूरी है। (पृष्ठ 6)
- मनुष्य का समूह 'समाज' और पशुओं का समूह 'समज' कहलाता है। दोनों शब्दों में मात्र एक मात्रा का अंतर है। इस मात्रा को हम अहिंसा और करुणा का प्रतीक मान सकते हैं। (पृष्ठ 10)
- अहिंसा की लड़ाई आत्मबल के सहारे लड़ी जाती है, उसमें बाह्य सामग्रियों की अपेक्षा नहीं होती। अतः अहिंसक के कार्य प्रभावहीन मालूम पड़ते हैं और इससे उसका बाहरी वातावरण नहीं बन पाता। हिंसक के हथियारों का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। उसका वातावरण बनने में कोई कठिनाई नहीं होती। (पृष्ठ 14)
- सत्याग्रह अहिंसक साधनों द्वारा सच्चे साध्य की साधना है। (पृष्ठ 15)
- मैत्री भावना अनेकता में एकता तथा भेद में अभेद से जीने की प्रेरणा प्रदान करती है। मनुष्य चिंतनशील और विवेकशील प्राणी है। उसमें मतभेद और रुचिभेद स्वाभाविक है, पर मतभेद होने पर भी मन का भेद नहीं होना चाहिए। (पृष्ठ 19)
- समाज में जाति के आधार पर विषमता के जो भी रूप हैं, वे सब कृत्रिम हैं। मानव- निर्मित हैं। (पृष्ठ 25)
- इस बांसुरी में तीन गुण हैं—पहला गुण तो यह है कि यह बिना बुलाए नहीं बोलती। दूसरा गुण यह है कि यह सदा मधुर बोलती है तथा तीसरा गुण यह है कि यह बिलकुल सरल है, इसमें कोई गांठ नहीं है। (पृष्ठ 27)
- जिस प्रकार आधुनिक मानव ने भौतिक अनुसंधानशाला में अणु का आविष्कार किया है, उसी प्रकार ऋषि-महर्षियों ने आत्मा की अनुसंधानशाला में अहिंसा का आविष्कार किया है। (पृष्ठ 31)
- अणुबम में हिंसा है, प्रतिशोध की भावना है और भय है तथा अणुव्रत में अहिंसा है, मैत्री है और अभय है। (पृष्ठ 33)
- संपन्न परिवारों के प्रति जो हिंसा और घृणा का भाव पैदा हुआ हैं, उसमें समृद्धि का भोंडा प्रदर्शन भी कारण बना है। संपन्नता में यश-प्रतिष्ठा के अन्य अनेक सात्विक मार्ग भी हैं। यह समाज के चिंतन का विषय है। (पृष्ठ 59)
- अपराध वृद्धि का एक प्रमुख कारण नशाखोरी है। (पृष्ठ 75)
- समाज को अपराध-मुक्त बनाने के लिए शिक्षा केन्द्रों में नशे के दुष्परिणामों का ज्ञान कराना जरूरी है। (पृष्ठ 76)
- व्रत का तात्पर्य मानसिक अनुशासन, आध्यात्मिक सौन्दर्य और सदाचारमय जीवन-निष्ठा से है। (पृष्ठ 93)
- साम्प्रदायिकता और पूर्वाग्रह धर्म की दो व्याधियां हैं, जिनके कारण वह आज समाधान नहीं बनकर समस्या बन गया है। (पृष्ठ 102)
- हाथ का पात्र—दान, सिर का विनय, मुख का सत्य वचन, कान का ज्ञान-श्रवण, हृदय का पवित्रता तथा भुजाओं का पौरुष सच्चा शृंगार है। (पृष्ठ 106)
- वस्तु के उपभोग से मिलने वाला सुख स्वाभाविक नहीं होता। उसके लिए तो वस्तु के अनिवार्य संयोग की शर्त है; अतः वह सुख कभी स्थायी नहीं हो सकता। (पृष्ठ 128)

पुस्तक में जगह-जगह उद्धृत पौराणिक दृष्टांत तथा सूक्तियां, महापुरुषों के उद्‌गार और छोटे-छोटे कथानक, पठन को रोचक बनाने के साथ कथ्य को स्पष्ट भी करते हैं।

चार्ल्स विलियम इलियट ने लिखा है—Books are the quitest and most constant of friends. They are the most accessible and wisest of counselors and the most patient of teachers. इसका भावार्थ है—पुस्तकें सर्वाधिक शांत और चिरसाथी मित्र हैं। वे सहज सुलभ हैं और सलाहकारों में सबसे अधिक विवेकसंपन्न और समझदार हैं तथा शिक्षकों में सबसे अधिक धैर्यवान हैं।

मुनिश्री राकेशकुमार की पुस्तकें 'भारतीय दर्शन के प्रमुख वाद' से लेकर इस पुस्तक 'अणुव्रत का दीवट : नैतिकता की बाती' तक सभी में पाठक निश्चित ही एक चिरसाथी मित्र, एक विवेकशील सलाहकार और एक धैर्यवान अध्यापक को सन्निकट अनुभव करेगा।

15 नूरमल लोहिया लेन, कोलकाता-7

आज उस धर्म की आवश्यकता नहीं है जिससे वैयक्तिक मोक्ष की प्राप्ति होती है। वैयक्तिक साधना में रत अनेक संत आज भी खोह-कन्दराओं में मिलेंगे, पर जिससे समस्त मानव समाज की उन्नति और मुक्ति नहीं होती, वह धर्म मानव-धर्म नहीं हो सकता। आज के युग में महात्मा गांधी और शताब्दियों पूर्व भगवान महावीर और बुद्ध ने इसी प्रकार मानव समाज को उन्नत करने के लिए अध्यात्म-पथ का प्रदर्शन किया था। आचार्य तुलसी का अणुव्रत आन्दोलन तथा विनोबा का सर्वोदय भी वैयक्तिक-शांति के साथ-साथ कोलाहलपूर्ण मानव समाज को उन्नत करने के आध्यात्मिक आन्दोलन हैं।

जयप्रकाश नारायण, 15 मार्च, 1960

अपनी बारी का इन्तजार करें

जसविंदर शर्मा

तुलसीदास कहते हैं कि वर्षा ऋतु आते ही कोयल चुप हो गई। उसे पता है कि अब मेंढ़कों के टर्राने का समय हो रहा है, अब उसकी मीठी बोली कौन सुन पाएगा? इस चुनावी साल में स्वार्थी करतबों को कामयाब बनाने के लिए भाड़े के लोगों की कमी कभी नहीं रही। ये बेमौसम के मेंढ़क और फसली बटेर अपने स्वार्थ के लिए नामी-गिरामी नायकों की पांयलागी करके पांच सालों के लिए अपने खर्चे-पानी का जुगाड़ बिठा लेते हैं।

तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में कहा है—'रावण रथी निरथ रघुबीरा' अर्थात् रावण तो रथ पर सवार है, मगर राम जैसे शूरवीर को रथ की क्या आवश्यकता? कुछ वैसा ही संग्राम, अब 'आप', भाजपा और कांग्रेस के बीच होने वाला है। किसी की रथयात्रा, किसी का रोड-शो और किसी का रामलीला व जन्तर-मन्तर पर अनशन; अपने-अपने तिलिस्मी अंदाज से वोटरों को लुभाने की नई मंजिलें तय की जा रही हैं। वे बता रहे थे कि चुनावों के ठीक पहले की यह एक अलग किस्म की यात्रा है, जिसके रास्ते में जो भी मिलता है, उसे ये लोग अपने साथ बटोरते चले जा रहे हैं।

भाजपा राम मंदिर जैसे ही किसी मुद्दे को लेकर कायाकल्प की तैयारी में है। कई हजार मील लम्बी रथयात्रा शुरू होने वाली है। इसी के ठीक सामने कांग्रेस का रोड-शो भी खूब हिट जा रहा है। ये नेता अचानक किसी छोटे से ग्रामीण समुदाय के पास रुकते हैं, उनका हालचाल पूछते हैं और फिर आगे बढ़ जाते हैं। चुनाव आते ही इन यात्राओं व रोड-शो की गहमागहमी बढ़ जाती है।

अपने नेता को एक स्थान पर सभा में जाना था। दो सौ किलोमीटर लम्बे सड़क मार्ग पर लगे होर्डिंग पर छपी उनकी लोकलुभावन तस्वीरों को चुनाव आयोग के निर्देश के कारण सफेद मलमल के कपड़े से ढकने में ही आठ लाख का खर्चा हो गया। अभी तो चुनाव अभियान की शुरूआत हुई है। सरकारी खजाने से करोड़ों रुपयों की सेंधमारी होगी। जनता पेट काटकर टैक्स भरती है तब जाकर खजाने में चार पैसे जमा होते हैं और चुनावों के धूल-धक्कड़ में एक बार में करोड़ों रुपयों की बलि चढ़ जाती है। 'अंधी पीसे, कुत्ता खाए!'

लगता तो यही है कि नेता को अपने कामों पर भरोसा नहीं रहा, अतः बॉलीवुड के चर्चित चेहरों का सहारा लेना पड़ रहा है। इधर, जिसे देखो राजनैतिक दलों की ओर खिंचा चला आ रहा है। जैसे ढीले गुड़ पर मक्खियों का रेला टूट कर पड़ता है कुछ वैसा ही कमाल आम आदमी पार्टी ने कर दिखाया है। खिलाड़ी, अभिनेता, संगीतकार और विश्व-सुन्दरियां सब पैसा लेकर दलों में घुसेड़े जा रहे हैं।

ये पालाबदल और गठबंधन इसलिए हो रहे हैं कि नेताजी हमेशा बैटिंग साइड में रहें, फील्डिंग न करनी पड़े उन्हें। नेता कल किस घाट पर खड़ा था या हत्या व गिरहकटी के कितने केस उसके खिलाफ हैं, इन पिछलग्गू मौकापरस्तों को इन बातों से कोई सरोकार नहीं है। इन भाड़े के सैनिकों के बिना राजनीति का इतिहास नहीं लिखा जा सकता। अब तो चुनाव के बाद दल बदलने में दिक्कत हो सकती है, इसलिए चुनाव से पहले ही मौका बचता है कि तभी अपने मुनाफे का सारा हिसाब-किताब ठीक किया जा सकता है।

दरअसल, बहुत से लोगों का धंधा ही चुनावों पर टिका हुआ है। जाति, धर्म, बाहुबल और धनबल की पूंजी सबको लुभाती है, जिसके बिना इस विशाल देश की चंचला राजनीति को साधा नहीं जा सकता। पार्टी रूपी महासागर में हर पल नए-नए गणदेवता शामिल कर आने वाले अवसरों का फायदा उठाने की फिराक में हर सेलेब्रिटी है। दलों की दलदल में हर मौका-परस्त कूद रहा है। पार्टी मुख्यालय के बाहर ये तख्तियां भी टंगी हुई हैं, 'धक्का-मुक्की न करें, अपनी बारी की प्रतीक्षा करें।' 'खोए व्यक्तियों का काउंटर', 'नो रिटर्न', 'नो एक्सचेंज', 'रसीद लेना न भूलें आदि-आदि.....' ।

5/2डी, रेलविहार, मंसादेवी,
पंचकुला-134109 (हरियाणा)

मेरा मोबाइलकुमार

पूरन सरमा

मैं इकलौते पुत्र का पिता हूँ। इस दृष्टि से मेरा और उसका महात्म्य है। उसके पास तीन मोबाइल फोन हैं। दो उसकी जेबों में भरे रहते हैं और एक गले में लटका रहता है। पता नहीं कब किस दिशा से कॉल या मैसेज आ जाये, हमेशा चौकस रहता है। मेरा मोबाइल कुमार एक जगह ज्यादा देर बैठ या ठहर भी नहीं सकता है। वह हर दस-पांच मिनट में स्थान बदल लेता है।

उसने एक मोबाइल फोन मुझे भी जबरन सौंप दिया है। उसका तर्क यह है कि आपसी सम्पर्क के लिए मेरे पास भी मोबाइल अनिवार्य है। मैं विवशता में मोबाइल जेब में रखे सोचता रहता हूँ कि ठीक है कम से कम मैं बच्चे के टच में तो हूँ। कई बार मैं वहम की वजह से जेब से मोबाइल निकालकर देखता रहता हूँ कि कहीं कोई कॉल या मैसेज तो नहीं है।

लेकिन, वह मात्र मेरा वहम ही होता है, जो मुझे अनचाहे रूप से चौकस रखता है। पांच सात दिन में एक-दो बार ही घण्टी बज पाती है मेरे मोबाइल की। उसका एक कारण यह भी है कि मैंने अपने नम्बर किसी मित्र या जान-पहचान वाले को दिये ही नहीं हैं। दफ्तर में तो अभी यह पता ही नहीं है कि मेरी जेब में मोबाइल भी रखा हुआ है।

दफ्तर में नम्बर देने का मतलब उड़ता तीर लेने के समान है। कब अफसर को काम आ पड़े और वह कार्यालय समय बाद भी मेरा उपयोग करने की स्थिति में आ जाये। हालांकि दफ्तर में मेरा महत्त्व नगण्य है, परन्तु मैं अपने आपको महत्त्वपूर्ण मानता रहा हूँ।

जहाँ तक मोबाइलकुमार के मोबाइलों का प्रश्न है, वे सब सदैव सक्रिय रहते हैं। वह खाना खाते समय, सोते समय, यहाँ तक कि टॉयलेट में भी इस सेवा का भरपूर लाभ उठा रहा है।

कई बार उसे असमंजस होता है कि वह तीनों मोबाइल की घण्टियों में से पहले किसे सुनें। लेकिन उसने पता नहीं कैसे तालमेल को मेनटेन कर रखा है कि 'एक ही साधे सब सधे' की तर्ज पर हर कॉल-कर्ता को संतुष्ट कर देता है। उसकी स्टाइल को मैं अनेक बार नमस्कार कर चुका हूँ। जब वह मोबाइलों से लैस होकर मोटर साइकिल पर सवार होता है तो हो सकता है पड़ोसी दांतों तले अंगुली दबाते हों।

मैंने उन्हें दांतों तले अंगुली दबाते नहीं देखा, इसलिए श्योर नहीं हूँ; लेकिन वह है हैरतअंगेज। अद्भुत श्रवण शक्ति है उसमें। फोन करने में भी वह मुक्त मन को कभी नहीं दबाता। तब ही तो उसका बिल अकेले ढ़ाई हजार से चार हजार के बीच जाता है।

यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि मोबाइलकुमार ऐसा कितना कमाता है कि चार हजार तक का पेमेंट बिना हिचकिचाहट के कर देता है। दरअसल वह एक मोबाइल फोन कम्पनी में काम करता है, जिसकी ओर से उसे आठ हजार मेहनताना प्रतिमाह मिलता है।

इस मेहनताने के परखचे उड़ाने में उसे कोई संकोच, दर्द या पछतावा नहीं है। बची हुयी धनराशि से वह पेट्रोल फूंकता है, हर माह कपड़े खरीदता है और यार-दोस्तों के साथ पिज्जा और बर्गर जैसे खाद्य खाकर दवाओं के इस्तेमाल को बढ़ावा देता है। अब चूंकि वह मेरा इकलौता पुत्र है तो उसकी हारी-बीमारी में मुझे ही चिंतित होकर उसके उपचार की ओर बढ़ना पड़ता है।

दवा लेने का अंदाज भी उसका एकदम मौलिक व निराला है। दवा की खुराक में कौन-कौन सी गोलियाँ देनी हैं, उन्हें निकालकर पानी का गिलास भरकर देने पर ही वह दवा गटक पाता है।

यदि दवा नाश्ता करने के बाद लेनी है तो नाश्ते का प्रबंध भी मुझे ही करना पड़ता

है। इस तरह मैं अपने इकलौते को नाजों के साथ पाल रहा हूँ, इसमें शक की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

अभी उसने एक मोबाइल फोन मात्र साढ़े ग्यारह रूपये में खरीदकर मुझे सकते में ला दिया है। उस मोबाइल में बकौल उसके इतने सिस्टम बताये कि उन्हें गिनाना मेरे वश में तो है नहीं। कैमरा तो उसमें है ही। बाकी उपयोगितायें उसकी निजी हैं। जिसका वह भरपूर लाभ उठा रहा है। वास्तविकता तो यह भी है कि उसके तीनों मोबाइल फोनों के नम्बर न मुझे याद हैं और न मेरे पास उपलब्ध हैं।

मैंने सिर्फ उसका एक नम्बर याद किया है, जो सदैव बिजी आता है। उसकी व्यवस्तताओं में खलल डालने का मतलब अपने बुरे दिनों को आमंत्रित करना है। वह जोरों से बोलता है और जबरन अपनी बात मनवाता है।

हम विवश है। क्या कर सकते हैं? चुपचाप उसकी बकवास को आप्त वचन मानकर ग्रहण करने की मुद्रा में स्वीकारोक्ति में सिर हिलाते रहते हैं।

उसके पास समय भी बहुत कम है। अब आप स्वयं अंदाजा लगा लीजिये, मोबाइलों को सुनना, मोबाइल कम्पनी की नौकरी तथा नौकरी से आने के बाद टीवी पर रात डेढ़-दो बजे तक अंग्रेजी फिल्में देखने के बाद कितना समय बचता है।

जो समय बचता है उसमें वह सोता है और सुबह नो बजे उठकर अपनी वही, यानि उसी व्यस्त दिनचर्या में सम्मिलित हो जाता है।

मोबाइलकुमार कुछ देर हमारे साथ बैठे तो हम उससे घर की समस्याओं पर विमर्श कर सकते हैं, लेकिन घर उसके लिए लगभग एक समस्या है। परन्तु, अभी वह घर का विकल्प नहीं ढूंढ पाया है, इसलिए इस रैन-बसेरे में कुछ घण्टे सोकर हवाई जहाज पर सवार रहता है। खाना उसके लिए कोई महत्त्व नहीं रखता।

कभी एक रोटी तो कभी दो रोटी खाकर वह मोबाइलों के तकनीकी संसार में खो जाता है। जब वह खाने के प्रति इतना बेपरवाह है तो अंदाजा लगाया जा सकता है कि मोबाइल कुमार की फिजीक कैसी होगी।

कई बार पड़ोसी भी मुझसे कहते हैं कि इसे थोड़ा च्यवनप्राश खिलाओ ताकि यह हर मौसम से, दुश्मन से और बीमारियों से लड़ सके। लेकिन स्वास्थ्य पर जो रोजाना मेरा भाषण होता है, उसे वह सदैव अनसुना करके स्वास्थ्य की अनदेखी ही करता है।

अब जो भी है, खरा या खोटा, मेरा ही है। वही मेरे बुढ़ापे का सहारा बनेगा, ऐसा कहना है मेरी धर्मपत्नी का। आपके घर में भी ऐसा ही मोबाइलकुमार पल रहा हो तो उस पर ज्यादा ध्यान न दें; क्योंकि उससे कुछ भी होना-जाना नहीं है, यह अनुभवसिद्ध बात है। ।

124/61-62, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर-302 020

अणुव्रत और लोकतंत्र

छोटे-छोटे संकल्पों को, मानव फिर अपनाएगा,
सच्चा लोकतंत्र धरती पर, अणुव्रत से ही आएगा।

जीओ और जीने दो, सबका हक है, सबकी धरती है,
हवा-अन्न-जल दे हम सबका पालन वह करती है,
निरपराध को क्यों कर मारें, और न ही स्वयं मरें हम,
जुल्म के आगे झुकें नहीं, और ना आक्रमण करें हम।
बूंद-बूंद कर जब जोड़ेंगे, तब ही घट भर पाएगा,
सच्चा लोकतंत्र धरती पर, अणुव्रत से ही आयेगा।।

सुन्दर धरा वृक्ष सुन्दर, अपना भी कुछ सुन्दर जोड़ें,
धरती के मानव समान सब, नहीं कभी कुछ तोड़ें,
एक पिता की सब संतानें, सारे भगिनी-भ्राता,
धर्म जाति मज़हब से बढ़कर, मानवता का नाता।
सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ कर ही, रास्ता मंजिल तक जाएगा,
सच्चा लोकतंत्र धरती पर, अणुव्रत से ही आएगा।।

अपने हित के लिए, किसी को हानि नहीं पहुंचाएंगे,
करें न छल ना वर्ग-द्वेष की अफवाहें फैलाएंगे,
नशा नशा है, संयम रखकर इस पर काबू पाएंगे,
पर्यावरण-मित्र बन जग को, हरित वसन पहनाएंगे।
ईंट-ईंट जुड़कर, चरित्र का महल खड़ा हो जाएगा,
सच्चा लोकतंत्र धरती पर, अणुव्रत से ही आएगा।।

एक एक से मिले, तो बूंदों से सागर लहराए,
एक एक से जुड़े, तो सीढ़ी मंजिल तक पहुंचाए,
एक एक कर चलें अगर, कदमों में आए मंजिल,
एक एक कर मिलें व्यक्ति तो, करें सफलता हासिल।
मिलकर सभी प्रयत्न करें, तो कार्य सफल हो जाएगा,
सच्चा लोकतंत्र धरती पर, अणुव्रत से ही आएगा।।

। रजनीकांत शुक्ल ।

के.ए.363, सेक्टर-12, प्रतापविहार,
गाजियाबाद-201009 (उ.प्र.)

पर्तों का शून्य

भगवान अटलानी

आज वे कुर्सी पर आ गये हैं। जनता के दिलों में आशायें लहरा रही हैं। वर्षों से चली आ रही गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, अन्याय और अनाचार अब नहीं रहेगा। अभी न सही साल-छह महीनों में सही, लेकिन सब तरफ खुशहाली होगी। हर सताये हुए को सान्त्वना मिलेगी। सब की जायज मांगें पूरी की जायेंगी। जरूरतमंदों की जरूरतें पूरी होंगी। दुःख-दर्द मिट जायेंगे। इस तरह की अनेक उम्मीदें लोगों के दिलों में जाग उठी हैं।

मेरे भी कुछ दुःख-दर्द हैं। मेरी भी कुछ तकलीफें हैं। मेरी भी कुछ जरूरतें हैं, कुछ मांगें हैं। हिसाब से मुझे भी इन दिनों उन लोगों में होना चाहिये जो आशान्वित हो उठे हैं, लेकिन ऐसा हो नहीं पा रहा है। हर कोशिश के बावजूद मैं अपने आपको समझा नहीं पा रहा हूं। पिटा हुआ आदमी था और पिटा हुआ आदमी महसूस कर रहा हूं, खुद को।

आप कहेंगे, मैं इतना अधिक निराश हो गया हूं कि प्रबलतम आशा भी मुझे उत्साहित नहीं कर सकती। मगर नहीं, ऐसा नहीं है। अकारण ही मेरी मनःस्थिति तटविहीन नदी जैसी नहीं बनी है। इजाजत दें तो कुछ खुलासा करूं।

सिलसिलेवार कहने को मेरे पास बहुत कुछ हो, ऐसा नहीं है। केवल मात्र एक घटना है। काफी पुरानी, लेकिन वह एक घटना ही मेरी आज की मानसिकता को स्पष्ट करने के लिये पर्याप्त है।

तब मैं बी.ए. के दूसरे साल में पढ़ता था। पढ़ाई का खर्च खुद जुटाना होता था। इसलिये साल के शुरू में ही दो ट्यूशनें पकड़ लेता था। पढ़ाई का खर्च घर से क्यों नहीं मिलता था या मैं ट्यूशनें क्यों करता था या मेरा घर, मां-बाप कहां थे, वे सब बातें जानने में आपकी रुचि हो नहीं सकती। मैं भी उस अतीत को दोहराने में कतई रुचि नहीं रखता। आपकी अरुचि का कारण, जाहिर है, आपके लिये मेरा होना किसी गैर का होना है। जबकि मेरी अरुचि का कारण मेरा स्वार्थ है। मैं उस युग की कहानी दोहराकर अपना जी खराब नहीं करना चाहता। यदि किसी कारण यह तफसील जानने में आपकी रुचि है तो मैं गुजारिश करूंगा कि मुझे बाध्य न किया जाये।

तो, मैं आपनी बात बढ़ाऊं? मन लगाकर पढ़ना, कॉलेज जाना और नियमित ट्यूशन करना—मेरी दिनचर्या, मेरा आमोद-प्रमोद, मेरा हाकी-फुटबाल सब कुछ यही तीन काम थे। नाटक, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं या सांस्कृतिक कार्यक्रम जब-जब कॉलेज में होते, मैं देखने-सुनने जरूर जाता। भाग इनमें भी कभी नहीं लिया।

अक्टूबर का महीना चल रहा था। परीक्षा के लिये फार्म भरना था। फार्म भरने में कोई कठिनाई नहीं थी। बस, फीस का प्रश्न था। फीस के लिये उनतीस रुपये की जरूरत थी। मेरी ट्यूशन से मुझे ग्यारह और तेरह, चौबीस रुपये मिलते थे। उसमें से अपना काम चलाना और फीस देना, बहुत टेढ़ा काम था। वह टेढ़ा काम भी किसी तरह हो जाता, लेकिन ट्यूशन वाले दोनों ही घरों से पैसा लेना संभव नहीं था। एक सज्जन शहर से बाहर थे और दूसरे टाल गये थे, पहली तारीख के लिये। फीस जुटाना सख्त जरूरी था। बिना उसके फार्म नहीं भरा जा सकता था और बिना फार्म के परीक्षा नहीं दी जा सकती थी। फीस जमा न हो और साल खराब हो जाये, वह मुझे बिल्कुल स्वीकार नहीं था। हाथ-पांव मारे। कुछ सहपाठियों से कहा। पांच-सात रुपये मिले भी। लेकिन समस्या

ज्यों की त्यों बनी रही। अन्तिम तारीख निकट आती जा रही थी और मेरी परेशानी बढ़ती जा रही थी। चिन्ता के मारे नींद उड़ गई थी। खाना-पीना बन्द हो गया था। अब क्या होगा? वह प्रश्न मुझे घेर-घेर कर बर्छियां फेंकता रहता और मैं पल-पल ज्यादा सुराखदार, ज्यादा छलनी होता जाता। आत्म-विश्वास, आत्म-संतुलन सब खोता और टूटता जा रहा था। लगता था, जिन्दगी ने मौत के मुहाने पर फेंक दिया है, बचना मुश्किल है।

तभी एक दिन कॉलेज के नोटिस बोर्ड पर एक सूचना देखी। तीन दिन बाद नगर के सभी कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिये एक खुली भाषण प्रतियोगिता थी। विषय प्रतियोगिता से तुरन्त पहले मिलने वाला था। पिचहत्तर, पचास और तीस रुपये के तीन नकद पुरस्कार घोषित किये गये थे।

मुझमें एक आशा का संचार हुआ। प्रतियोगिता हमारे कॉलेज में होने वाली थी। मेरे सामने एक चुनौती थी जिसे स्वीकार करके मैं फीस के पैसे जुटा सकता था। सच था कि मैंने कभी कोई भाषण नहीं दिया था उससे पहले। लेकिन इस सूचना ने मेरे अन्दर दबती जा रही जिजीविषा को जगा दिया था। मैंने फैसला किया कि मैं प्रतियोगिता में भाग लूंगा।

इस फैसले के बाद मैं तैयारी में जुट गया। भाषण-योग्य ताजा विषयों की सूची बनाई। लाइब्रेरी जाकर पुस्तकों, पत्रिकाओं और अखबारों की मदद से हर विषय पर धुआंधार बोलने की कोशिश की। इस डर के बावजूद कि सचमुच बोलने के समय घबरा न जाऊं, मैं हिम्मत और जिद के साथ लगा रहा। नतीजे के तौर पर जिस दिन प्रतियोगिता थी, उस सुबह मुझमें आत्मविश्वास पैदा हो चुका था। अपने श्रम के बूते पर यह विश्वास भी होने लगा था कि एक न एक पुरस्कार जरूर ले जाऊंगा। अगर तीसरा पुरस्कार भी मिलता है तो तीस रुपये मिलेंगे। फीस उनतीस रुपये ही है। मेरे लिये तीसरा पुरस्कार भी काफी है।

खाने-पीने, पढ़ने-लिखने या किसी और काम में मन लगने का सिलसिला पहले की तरह अब भी बन्द था। अंतर इतना था कि प्रतियोगिता की जानकारी से पहले चिंता के कारण कुछ अच्छा नहीं लग रहा था और प्रतियोगिता की जानकारी के बाद मस्तिष्क में लगातार बने हुए तनाव के कारण। कहीं आते-जाते भी कोई-न-कोई सम्भावित विषय दिमाग में घूम रहा होता। भाषण की शुरूआत कैसे की जाए, अन्त में क्या बोला जाए, आदि-आदि प्रश्न तैरते रहते। और, कुछ नहीं सूझता तो किसी विषय पर राह चलते ही बड़बड़ाना आरंभ हो जाता।

दो बजे प्रतियोगिता आरम्भ होने का समय था। मैंने अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहनी। जो पोशाक मैंने पहनी थी, मेरे लिये सबसे अच्छी थी, मगर मैं जानता था कि वैसे वह सामान्य से अधिक किसी हालत में भी नहीं थी। मेरा कद-बुत, स्वास्थ्य, चेहरा-मोहरा अच्छा था। इसलिये व्यक्तित्व के प्रभाव के संदर्भ में अपनी कमतर पोशाक के बावजूद मैं आश्वस्त था। भाषण में कुछ बोल पाऊं, ना बोल पाऊं, पुरस्कार मिले न मिले, व्यक्तित्व के कारण नहीं पिटूंगा, यह भरोसा था।

कॉलेज पहुंचा तो डेढ़ बजा था। ऑडिटोरियम में कुर्सियां लग रही थीं। विद्यार्थी यूनियन के अध्यक्ष द्वारिकाजी की देखरेख में कुछ छात्र और चपरासी व्यवस्था में जुटे थे। मुझे आया देख द्वारिकाजी ने मुझे भी कुर्सियां लाने और लगाने के काम में लगा दिया। दो बजते-बजते वह सब पूरा हुआ। परिश्रम के कारण पसीना और पसीने के कारण चिपचिपापन महसूस हो रहा था। मैं कॉलेज के पीछे बने हॉस्टल में हाथ-मुंह धोकर ताजा होने के विचार से चला गया। विषय तब तक घोषित हो चुका था। लॉटरी डालकर वक्ताओं की सूची बना ली गई थी। उस सूची में अपना नाम और स्थान मैंने देख लिया था।

हॉस्टल जाते हुए मैं संभावनाओं के अतिरेक से दबा जा रहा था। दूसरे कॉलेजों से भाग लेने आये वक्ता छात्रों के बारे में मुझे अधिक जानकारी नहीं थी; किन्तु हमारे कॉलेज के ही दो-तीन नाम ऐसे थे जो मुझे निराश करने के लिये काफी थे। वाद-विवाद की अनेक अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत लड़कों के सामने में टिक सकूंगा क्या? अच्छा नहीं बोल सका तो पुरस्कार तो दूर रहा, खिल्ली और उड़ेगी। ऐसे अवसरों पर हूटिंग का कैसा दौर-दौरा चलता है, यह मैं जानता ही था।

पन्द्रह या बीस, जितने भी मिनट मुझे हॉस्टल में लगे होंगे, एक ऐसे तैराक की मनःस्थिति मुझ पर हावी रही जो तालाब में उतर गया हो और कुछ शरारती साथी उसे पानी के अन्दर दबाये हुए हों। ऊपर उठकर फेफड़ों में हवा भरने का अवसर भी गोया नहीं पा रहा था मैं। आत्महीनता का भाव जो डेढ़ बजे ऑडीटोरियम जाने तक बिल्कुल नहीं था अब पूरी तरह मुझ पर सवार हो गया था। एक बार तो मैं ऑडीटोरियम न जाने की बात भी सोच गया था। लेकिन फिर परीक्षा, फीस और खाली जेब का अहसास हथौड़े की तरह मेरे दिमाग में बजने लगा था। धीरे-धीरे लड़ाकूपन मुझ में सिर उठाने लगा था। आत्म-संघर्ष के उस छोटे-से कालखण्ड पर विजयी होकर मैं नये उत्साह से भर उठा था। कुछ भी कर गुजरने का अदम्य जुझारू भाव लेकर मैं भाषण के विभिन्न बिन्दुओं और पहलुओं को मस्तिष्क में सजाता-संवारता वापस ऑडीटोरियम पहुंचा।

द्वारिकाजी छात्र संघ की ओर से आगन्तुकों का स्वागत कर रहे थे। कॉलेज की ओर से भाषण प्रतियोगिता के संयोजक प्रो0 मंगलसिंह ने इसके बाद प्रतियोगिता के नियम सुनाये। ये औपचारिकताएं मुझे बेहद उबाऊ और नीरस लग रही थीं। आगत को दूर धकेलने की कोशिश....।

पहला छात्र बोलने के लिये उठा। हमारे कॉलेज का छात्र न होने का खामियाजा उसे भुगतना पड़ा। विभिन्न प्रकार की आवाजें, फब्तियां, फिकरे और शोर। दूसरा छात्र आया।

पूर्व स्थिति का दोहराव। तीसरा छात्र हमारे कॉलेज का छात्र, सम्पूर्ण शान्ति बीच-बीच में अनायास बजती तालियां और प्रशंसासूचक ध्वनियां। मेरा उत्साह, आत्मविश्वास और कुछ कर गुजरने की लालसा तीव्रतर होती जा रही थी।

और, फिर मंच से मेरे नाम की घोषणा हुई। पूर्व निश्चित ढंग से सधे कदम रखता। आत्मविश्वासपूर्वक, मैं मंच की ओर बढ़ा। दिल बल्लियों उछल रहा था। मंच पर जाने के लिये बनीं तीन सीढ़ियां चढ़कर मैंने मंच पर पांव रखा। थोड़ा मुड़कर छात्रों की ओर देखकर, हल्का-सा सिर झुकाकर मैं मुस्कराया। तालियों की गूंज। लगातार तालियों की गूंज। माइक के सामने पहुंचकर मैंने अपने आपमें बेहद विश्वास उमड़ता पाया। होठों पर लगातार तनी मुस्कराहट को थोड़ा और चौड़ा करके मैंने हाथ उठाकर लड़कों को चुप हो जाने का संकेत किया। यों मैंने ऐसी कोई योजना नहीं बनाई थीं। बस अवसर के अनुरूप अपने आप यह सब हो गया।

मैं बोला। अपनी अपेक्षा से बहुत-बहुत अच्छा बोला। बार-बार बजती तालियों ने मुझमें यह खुशफहमी पैदा नहीं की। वस्तुतः भाषण के बाद कुछ छात्रों, सहपाठियों और एक प्रोफेसर के प्रशंसा-वाक्यों ने मुझे आश्वस्त किया कि हो-न-हो एक पुरस्कार तो मैं ले ही लूंगा। सफलतापूर्वक बोल लेने और प्रशंसा अर्जित करने के कारण मैं अपने आपको विशिष्ट और नया अनुभव कर रहा था। ''मै भी कुछ हूं।'' यह दिखा देने का अभिमान मुझमें जाग उठा था। नवधनाढ्य वर्ग की मानसिकता के बारे में यदि आप थोड़ा भी जानते हैं तो मेरी उस समय की मनःस्थिति की कल्पना बखूबी कर सकते है।

लोग मेरे बाद में भी बोले। मगर मैंने सचमुच उनमें से किसी को नहीं सुना। आत्म-क्रीड़ा में मग्न मैं खामोशी से खुद को सुनता रहा और खुद को ही सुनाता रहा।

दो-ढाई घंटों के बाद भाषणों का सिलसिला खत्म हुआ। निर्णायक निर्णय तैयार करें इस बीच समय गुजारने के लिये कुछ भाषण होने लगे। तभी एक आश्चर्य मेरे सामने कौंधा। मैंने देखा, मंच पर एक मेज लाई जा रही है जिस पर तीन खूबसूरत ट्राफियां सजाकर रखी हुई हैं। नियमानुसार पुरस्कार तो नकद राशि के रूप में मिलने वाले थे। फिर ये ट्राफियां क्यों लाई जा रही हैं, मंच पर? मैं उठकर द्वारिकाजी के पास गया।

''द्वारिका जी, ये मंच पर ट्राफियां क्यों रखवा रहे हैं?''

''पुरस्कार बांटने के लिये।''

''पुरस्कार के रूप में तो नकद राशि देना तय हुआ था न?''

''हां, पहले सोचा था। बाद में सुझाव आया, पैसा तो खर्च हो जाएगा। यादगार के लिये ट्राफियां ज्यादा ठीक रहेंगी।''

मैं तैश में आ गया,''एक बार घोषणा करने के बाद पुरस्कार क्या देना है, यह आपकी मर्जी की बात नहीं रह जाती।''

''क्यों नहीं रह जाती?'' द्वारिकाजी ने मुझे घूरते हुए पूछा।

''क्योंकि प्रतियोगिता में भाग लेने वाले छात्रों में से हो सकता है कुछ ऐसे हों जो सिर्फ नकद पुरस्कार की घोषणा से आकर्षित हुए हों।''

''कोई नहीं हुआ नकद पुरस्कार की घोषणा से आकर्षित। यह जुआघर नहीं है कि हर चाल पर पैसों की उम्मीद रखोगे। हमारे इस फैसले से सबको खुशी हुई है।''

''मुझे नहीं हुई खुशी।''

''नहीं हुई तो कर ले जो तुझे करना है!'' कहकर द्वारिकाजी एक तरफ चले गये।

मैंने आव देखा न ताव। धम-धम करता मंच पर चढ़ गया। माइक पर कब्जा करके मैंने गुस्से में बोलना शुरू किया, '' हम प्रतियोगियों के साथ सरासर धोखा किया जा रहा है। हमें कहा गया था कि विजेताओं को नकद पुरस्कार दिये जायेंगे और मंच पर ट्राफियां सजाकर रख दी गई हैं। मैं पूछता हूं, किसकी अनुमति से हुआ है यह सब...?''

मैं आगे कुछ कहूं इससे पहले ही प्रोफेसर मंगलसिंह मुझे पकड़कर अपने साथ मंच से नीचे ले गये। मैं उत्तेजित था और वे मुझे समझाने की कोशिश कर रहे थे। तभी मैं अनायास पीछे की ओर खिंचता चला गया। मेरी कमीज का कालर किसी के हाथ में था। मुझे एक तरह से घसीट कर ऑडिटोरियम के पीछे ले जाया गया। वहां आठ-दस लड़के और द्वारिकाजी खड़े थे। मुझे धक्का देकर द्वारिकाजी के सामने फेंक दिया गया, गालियों के बीच।

कमीज पड़कर द्वारिकाजी ने मुझे ऊपर उठाया। फिर ठण्डी आवाज में कहा, ''अब बोल, क्या कहता है?''

''मैं...,'' इससे आगे मैं कुछ कह नहीं सका। एक चांटा मेरे गाल पर पड़ा। फिर दूसरा। फिर तीसरा। लड़के चारों तरफ घिर आये थे। वे सब खड़े तमाशा देखते रहे और मैं पिटता रहा, पिटता रहा।

मेरी आवश्यकताएं, मेरी जिजीविषा, सबने उसी क्षण दम तोड़ दिया था। हक और सच्चाई के लिये लड़ने की मेरी ताकत चुक गई थी। मैं आज समझौतापरक आदमी हूं। आदमी? हां, दोपाया होने के कारण आदमी कहता हूं अपने आपको। वरना कीड़ों से बदतर जिंदगी जीने वाले हम लोग आदमी कहां हैं?

सत्ता की कुर्सी आज उन्हीं द्वारिकाजी के पास है। जनता बड़ी उम्मीदों से उनकी तरफ देख रही है। उन्हें आशा है कि अब खेतों को पानी, मवैशियों को चारा, बेकारों को रोजगार, छतविहीनों को मकान, भूखों को रोटी और सताये हुओं को न्याय मिलेगा। हो सकता है द्वारिकाजी सबकी, सब आशायें पूरी कर दें। हो सकता है वे इस बीच बदल गये हों, जनसेवा की भावना उनमें प्रखर ज्वाला की तरह प्रज्ज्वलित हो उठी हो। लेकिन माफी चाहूंगा, मैं अपने आपको उस सब के लिये समझा नहीं पा रहा हूं। ।

-डी-183, मालवीय नगर, जयपुर-302017

इंश्योरंस की सभी सेवाएं एक ही जगह पर उपलब्ध!

ज्वेलरी दुकान इंश्योरंस

- सरकारी कंपनी द्वारा पॉलिसी
- पुरानी पॉलिसी में 30% छुट प्रिमियम पर
- मार्केट रेट पॉलिसी
- 100% दावे का भुगतान
- पोर्टेबिलिटी सुविधा उपलब्ध

मेडीक्लेम

- कोई रुम कैटेगिरी नहीं
- पोर्टेबिलिटी सुविधा उपलब्ध
- 80 वर्ष के उम्र के लिए मेडीक्लेम, बगैर मेडिकल जांच
- अधिकतम कैशलेस अस्पताल (24 घंटा सुविधा)
- जल्द दावे भुगतान की गारंटी

मोटर कार इंश्योरंस

- 0% डेप्रिसिएशन पॉलिसी
- कॅशलेस सुविधा
- पोर्टेबिलिटी सुविधा उपलब्ध
- कम से कम प्रिमियम की गारंटी

लाईफ इंश्योरंस

- रिस्ककवर प्लान
- बच्चों की शिक्षा एवं शादी प्लान
- रिटायरमेंट प्लान
- बचत योजना

NICE™
INSURANCE LANDMARK

गणपत डागलिया (गोल्डमेडलिस्ट, इंश्योरंस रत्न, C.M.D. क्लब सदस्य)
चिराग डागलिया (M.B.A, कॉर्पोरेट क्लब सदस्य, C.O.T- U.S.A, M.D.R.T - U.S.A)

26/A, Behind Mumbadevi, Between Shop No. (54-55) 1st Floor, Shop No. 17, Mumbai-2
(Toll Free) 1800-3070-1188, Phone: 022-22428883, Direct: 9869050031/9869230444
E-mail: gmdagliya@yahoo.com,cgdagliya@gmail.com

www.niceinsurancelandmark.com

fdlh dh lsok dj mlds fxukuk

lsok ds egÙo o Qy dks de djuk gSA

&vkpk;Z Jh egkJe.k

c<s lq;e iFk ij

yksdekU; xksysNk

अध्यक्ष

गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन

एवं

समस्त गोल्छा परिवार

gljkt gykIpUn ,.M d- ik- fy-

xksyNk gkml] dkBekMk ¼usiky½

Qksu % 4250001] 4249939

QSDl % 977&01&4249723

अणुव्रत महासमिति द्वारा अणुव्रत कार्यशाला का आयोजन

23 फरवरी 2014 : अणुव्रत भवन, दिल्ली। अणुव्रत महासमिति के तत्वावधान में अणुव्रत प्राध्यापक मुनि सुखलालजी एवं अणुव्रत प्राध्यापक मुनि राकेशकुमारजी के सान्निध्य में 'अणुव्रत कार्यशाला' का आयोजन किया गया। बैठक में 85 पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित थे। मुनि श्री के मंगल महामंत्र जाप के साथ कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। मुनि श्री दीप कुमार ने अणुव्रत गीत की प्रस्तुति दी। महासमिति - सरंक्षक डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने उपस्थित सदस्यों को अणुव्रत-आचार संहिता का संकल्प कराया। महासमिति - अध्यक्ष श्री डालचंद कोठारी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

मुनिश्री सुधाकर व मुनि श्री मोहजीतकुमार ने वक्तव्य व मुहावरों के माध्यम से अणुव्रत को जीवन-व्यवहार में उतारने की प्रेरणा प्रदान की। शासनश्री मुनि राकेशकुमार ने कैसे बढ़ें अणुव्रत के चरण?

विषय पर प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा – आचार्य तुलसी ने अणुव्रत का प्रवर्तन कर गांधी जी के सपनों को जन-जन में आगे बढ़ाया। आप ने अणुव्रत के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए अणुव्रत को विश्वव्यापी बनाने पर जोर दिया।

शासनश्री मुनि सुखलाल ने अणुव्रत आचार संहिता पर उद्‌बोधन प्रदान करते हुए कहा कि अणुव्रत की आचार-संहिता के निदेशक तत्वों पर विचार करते समय सबसे पहले हमें अणुव्रत के महत्त्वपूर्ण तत्वों पर विचार करना होगा। आपने नौ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर पाथेय प्रदान किया। कार्यशाला के इस सत्र में समाजभूषण श्री मांगीलाल सेठिया, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति-दिल्ली के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल पटावरी, अणुव्रत न्यास के प्रबन्ध न्यासी श्री सम्पत नाहटा, तेरापंथी सभा-दिल्ली के महामंत्री श्री सुखराज सेठिया, ते.यु.प. अध्यक्ष श्री मनोज नाहर, महिला मंडल अध्यक्षा श्रीमती तारा बैंगाणी, 'अणुव्रत पत्रिका' के संपादक श्री महेन्द्र जैन व तेरापंथ टाइम्स के अध्यक्ष श्री इन्द्र बैंगानी सहित समाज के कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आभार ज्ञापन दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री राकेश नाहटा एवं सत्र का संचालन अणुव्रत महासमिति के महामंत्री श्री मर्यादा कुमार कोठारी ने किया।

द्वितीय सत्र :

अणुव्रत कार्यशाला का द्वितीय सत्र जवाहरलाल नेहरु केन्द्र के सभागार में मुनिश्री मोहजीतकुमार के सान्निध्य में आयोजित हुआ। सर्वप्रथम उपस्थित सभी सदस्यों का आपसी परिचय हुआ। मुख्य वक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अणुव्रत आंदोलन के छह दशक पर प्रस्तुति देते हुए अणुव्रत की प्रारंभिक पृष्ठभूमि पर रोचक प्रकाश डाला। अणुव्रत आंदोलन में प्रारंभ में जुड़े कार्यकर्त्ताओं एवं उनके कार्यों की जानकारी रोचक तरीके से प्रस्तुत की। अणुव्रत महासमिति के शिक्षा मंत्री श्री गौतम डागा ने स्थानीय अणुव्रत समितियों के लिए निर्धारित संविधान एवं उनके कार्य संचालन की महत्त्वपूर्ण जानकारी सरल भाषा में सबको बताई। अणुव्रत की तेजस्विता कैसे बढ़े? विषय पर मुनिश्री मोहजीत कुमार ने पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि वे दिन इतिहास के पन्नों पर सुनहरे अक्षरों में अंकित हैं जिन कदमों पर चलकर अणुव्रत आज जन-जन का आंदोलन बन चुका है। आज अपेक्षा है इस मिशन के प्रति स्वयं की जागरूकता एवं सक्रियता की जिससे यह आन्दोलन जन मानस तक एक नये परिवेश के साथ वर्तमान युग की समस्याओं के समाधान में योगभूत बन सके।

अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष श्री प्रताप दुगड़ ने आभार ज्ञापन किया तथा अणुव्रत महासमिति कार्यकारिणी सदस्य श्री प्रदीप संचेती ने सत्र का संचालन किया। कार्यशाला की बैठक के पश्चात् अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री डालचंद कोठारी के नेतृत्व में कार्यकारिणी की बैठक का आयोजन किया गया, जिसका संचालन अणुव्रत महासमिति के महामंत्री श्री मर्यादा कुमार कोठारी ने किया।

शिक्षक संगोष्ठी

दिल्ली : 22 फरवरी। राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान, दिल्ली (एन.सी.एल) के तत्वावधान में शासन श्री मुनि सुखलाल एवं मुनि मोहजीत कुमार की सन्निधि में "शिक्षक संगोष्ठी" का आयोजन अणुव्रत भवन-दिल्ली में किया गया। इस संगोष्ठी में प्रिंसिपल एस.पी. जैन, प्रिंसिपल यशपाल पहुजा, प्रिंसिपल मैडम सरोज दुआ, प्रो0 नवीन कुमार जैन, कंवर सेन जैन, राकेश त्रिपाठी (पत्रकार), प्रो. एम.एल. जैन, एस.के. सिंह, डॉ0 विनय कुमार एवं संजय भाई (अहिंसा प्रशिक्षक) एवं मिलाप बोथरा (उपाध्यक्ष) उपस्थित हुए।

अणुव्रत प्रभारी शासन श्री मुनि सुखलाल ने संगोष्ठी में उपस्थित अध्यापक वर्ग को संबोधित करते हुए बताया कि राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान के द्वारा नैतिक मूल्यों के सर्वांगीण विकास एवं संस्कार निर्माण की दिशा में निरंतर कार्य चल रहा है। आचार्यश्री तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर दिल्ली में शिक्षक संसद का एक व्यापक संगठन तैयार करने के लिए आप सबका योगदान चाहिए। उन्होंने अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र गतिविधियों की विस्तार से जानकारी दी। सभी लोगों ने अपने-अपने अनुभव संगोष्ठी में रखे। अहिंसा प्रशिक्षक संजय भाई ने दिल्ली में "अणुव्रत परीक्षा" के आयोजन में सक्रिय सहयोग के लिए शिक्षकों से निवेदन किया। उन्होंने सभी लोगों के प्रति आभार प्रकट किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान के उपाध्यक्ष मिलाप बोथरा ने की।

रोगोपचार कार्यशाला

दिल्ली 24.2.2014। अणुव्रत महिला प्रकोष्ठ रोगोपचार कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ विकास भवन, कृष्णा नगर में हुआ। इस कार्यशाला के विषय थे - थायरॉइड व सरवाइकल पेन। कार्यशाला का शुभारंभ बहिनों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। तत्पश्चात् राज गुनेचा ने यौगिक क्रियाएं सिखाईं। ललिता पुगलिया ने यौगिक क्रियाओं व आसनों के प्रयोग कराये।

राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अणुव्रत

शाहदरा, दिल्ली। आचार्यश्री महाश्रमण की विदुषी शिष्या साध्वीश्री यशोमती के सान्निध्य में ओसवाल भवन-विवेक विहार के प्रांगण में अणुव्रत समिति, दिल्ली एवं शाहदरा तेरापंथ सभा के संयुक्त तत्वाधान में ''राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अणुव्रत'' विषय पर भव्य कार्यक्रम हुआ। साध्वी श्री ने कहा – 20वीं सदी के एक विशिष्टतम महापुरुष आचार्यश्री तुलसी थे जिन्होंने देश के नैतिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्त्तन किया। यह आन्दोलन जीवन निर्माण का महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। साध्वी रचनाश्री ने कहा–अणुव्रत का ध्येय है–ईमानदारी, नैतिकता, प्रामाणिकता जैसे मानवीय मूल्यों का विकास। साध्वी किरणमाला, साध्वी जयन्तयशा ने क्रमशः गीत एवं कविता प्रस्तुत की। पूर्वी दिल्ली के उपमहापौर महेन्द्र आहूजा ने कहा–सत्संग से हमें जो पावर मिलती है वह हमें तनाव-मुक्ति में मदद करती है। अणुव्रत को जीने का संकल्प हो। कार्यक्रम में अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा, दिल्ली अणुव्रत समिति के अध्यक्ष राकेश नाहटा, शाहदरा सभा के अध्यक्ष भानूप्रकाश बरड़िया, प्रेक्षा वाहिनी के संयोजक विमल गुनेचा, ते.यु.पं. अध्यक्ष मनोज नाहर, महिला मण्डल अध्यक्षा तारा बैंगानी, मदन लाल, सुमन भंडारी आदि ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन अणुव्रत महासमिति के सहमंत्री बाबूलाल दुगड़ ने किया।

अणुवत समिति-सायरा द्वारा विद्यालय में स्थापित अणुव्रत आचार संहितापट्ट

आचार्य तुलसी जन्म-शताब्दी द्वितीय चरण

नवगांव। अणुव्रत प्रवर्तक राष्ट्रसंत आचार्यश्री तुलसी जन्म-शताब्दी के द्वितीय चरण में अणुव्रत समिति नगांव द्वारा अणुव्रत के प्रचार प्रसार हेतु अणुव्रत साहित्य के वितरण का कार्य अपने हाथों में लिया गया। सर्वप्रथम नगांव जिला उपायुक्त, एस डी ओ (सिविल) शंकरदेव नागर, जिला पुलिस अधीक्षक, जिला न्यायाधीश, मुख्य न्यायिक दण्डाधीश, केन्द्रीय रिजर्व पुसिलबल कमाण्डेण्ट आदि की उपस्थिति से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। जिला उपायुक्त ने इसे सम-सामायिक बताते हुए इस कार्य की भूरि भूरि प्रशंसा की। 34 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कमाण्डेण्ट श्री यू.एम. वैश्य ने अपनी बटालियन के जवानों के लिए अणुव्रत कार्यशाला तथा प्रेक्षा ध्यान शिविर लगाने की इच्छा जाहिर की। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता भी उपस्थित हुए।

'पर्यावरण शुद्धि' प्रतियोगिता

बैंगलोर 18.2.2014। अणुव्रत समिति बैंगलोर द्वारा आचार्य श्री तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में 'पर्यावरण शुद्धि' विषय पर ड्राइंग एवं पेन्टिग प्रतियोगिता का आयोजन चामराजपेट स्थित जनता विद्यालय में किया गया। मुख्य अतिथि चितगंगा महास्वामीजी, प्रिन्सिपल इन्दुमती, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश लोढ़ा उपस्थित थे। स्कूल की छात्राओं ने कन्नड़ भाषा में अणुव्रत गीत द्वारा मंगलाचरण किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष ने सभी का स्वागत करते हुए विद्यार्थियों को अणुव्रत नियमावली तथा भारत में चल रही अणुव्रत-संकल्प-यात्रा की जानकारी दी। प्रचार-प्रसार मंत्री चन्द्रशेखरय्या ने नियमावली का कन्नड़ भाषा में अनुवाद किया। कार्यक्रम का संचालन प्राधानाचार्य इन्दुमती ने किया। इस प्रतियोगिता में 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया जिसमें प्रथम स्थान पर धनुष्य, द्वितीय पवन, तृतीय वीणा रही। अणुव्रत समिति द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा सभी विद्यार्थियों को कन्नड़ भाषा में अंकित विद्यार्थी अणुव्रत नियमाववाली नोट बुकें भेंट की गयीं। विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। धन्यवाद ज्ञापन रूपचंद देसरला ने किया।

'अणुव्रत उद्यान' नामांकन समारोह

अहमदाबाद 26.2.2014। अहमदाबाद म्युनिसिपल कोर्पोरेशन द्वारा अणुव्रत समिति, अहमदाबाद के प्रयास से तेरापंथ भवन, शाहीबाग के सामने बनने वाला सीनियर सिटीजन उद्यान के **'अणुव्रत उद्यान'** नामकरण का उद्घाटन मेयर मीनाक्षी बहन पटेल के द्वारा हुआ। मेयरश्री ने कहा कि अणुव्रत नैतिकता एवं देश सेवा का महान आंदोलन है। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल सकलेचा ने स्वागत भाषण में कहा कि देश की आजादी के साथ ही गुरुदेव तुलसी ने राष्ट्रपति भवन से लेकर गरीब की झोंपड़ी तक पैदल यात्रा द्वारा जन-जन में नैतिक चेतना जगाने हेतु अणुव्रत आंदोलन का शंखवाद किया। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण अपने श्रम सिंचन द्वारा अणुव्रत को गति प्रदान कर रहे है। आमंत्रित अतिथियों का परिचय महेन्द्र पोरवाल ने दिया। सभा के अध्यक्ष महेन्द्र चौपड़ा, तेयुप अध्यक्ष अनिल कोठारी, महिला मंडल अध्यक्षा लीला सुराणा, मंत्री मीना कोठारी, संसद सदस्य डॉ. किरीटभाई, प्रवक्ता उपासक महालचंद पींचा आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण के संदेश से मिलेगी देश को नई दिशा - शीला दीक्षित

नई दिल्ली 7 मार्च। आचार्यश्री महाश्रमण के शिष्य मुनि सुधाकर के सान्निध्य में केरल की राज्यपाल श्रीमती शीला दीक्षित के निवास-स्थल पर आचार्यश्री तुलसी जन्म-शताब्दी के अंतर्गत अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

मुनि सुधाकर ने आचार्य श्री तुलसी जन्म शताब्दी की चर्चा करते हुए कहा - राष्ट्र में व्यक्ति और व्यवस्था दोनों का महत्व है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत की आचार-संहिता में दोनों की शुद्धि और व्यवस्था पर बल दिया है। **संयम ही जीवन है** अणुव्रत का मुख्य घोष है। संयम से ही समस्याओं का समाधान संभव है। आचार्य श्री महाश्रमण के कुशल नेतृत्व में अणुव्रत का सघन कार्य हो रहा है।

केरल की मनोनीत राज्यपाल श्रीमती शीला दीक्षित ने कहा - जिस समाज और राष्ट्र में नैतिकता, अहिंसा और भाईचारे की भावना का साम्राज्य है वह महान है। हमें संकीर्ण घेरों से ऊपर उठकर सब के प्रति जीवन में करुणा और मैत्री की भावना का विकास करना चाहिए। महावीर, बुद्ध, महात्मा गांधी, आचार्य तुलसी आदि अनेक महापुरूषों ने विश्व को शांति और प्रेम का संदेश दिया है। वर्तमान युग में आचार्यश्री महाश्रमण जी मानव मात्र के कल्याण का संदेश दे रहे हैं। उनके संदेश से देश को नई दशा और दिशा मिलेगी। राज्यपाल दीक्षित ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी की चर्चा करते हुए कहा - तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम से अहिंसा, नैतिकता व राष्ट्रीय एकता का आधार मजबूत बनेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

समाज के विशिष्ट जनों ने राज्यपाल को आचार्य श्री के जीवन पर आधारित 'जय जय ज्योति चरण' ग्रंथ भेंट किया। ग्रंथ के आकार, प्रकार व सजावट को देखकर राज्यपाल ने विशेष प्रसन्नता प्रकट की। इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था के महामंत्री शांति जैन, अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी संपतमल नाहटा, तेरापंथ सभा के कार्यकारी अध्यक्ष गोविन्द बाफणा, शाहदरा सभा के मंत्री सुभाष सेठिया, हीरालाल गेलडा, रमेश काण्डपाल व रामनिवास राजपूत आदि विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे।

राजनेताओं के लिए आध्यात्मिक प्रशिक्षण जरूरी

नई दिल्ली। अणुव्रत प्राध्यापक मुनि राकेश कुमार के सान्निध्य में अणुव्रत भवन में "अणुव्रत स्थापना दिवस" पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें अणुव्रत के शीर्षस्थ कार्यकताओं के साथ भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता व राज्यसभा सदस्य प्रकाश जावड़ेकर ने भी भाग लिया।

मुनि राकेश कुमार जी ने कहा - राजनीति लोकतंत्र की रीढ़ है। कुछ राजनेताओं की स्वार्थ परायणता और सिद्धान्तहीनता के कारण राजनीति के स्तर में बहुत गिरावट आयी है। चुनाव के समय कुछ छिछले राजनेता देश की नसों में साम्प्रदायिकता और जातिवाद का ज़हर घोलते हैं तथा हिंसा और अराजकता फैलाते हैं। इससे राष्ट्रीय एकता और अनुशासन का आधार कमजोर बन रहा है। राष्ट्र की एकता और पवित्रता की रक्षा के लिए राजनेताओं के लिए आध्यात्मिक प्रशिक्षण जरूरी है।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रकाश जावड़ेकर ने कहा - प्रजातंत्र प्रणाली में चुनाव जरूरी है, किन्तु येन-केन प्रकारेण चुनाव जीतने के मनोभाव विकृतियां पैदा कर रहे हैं। आज धर्म पर भी साम्प्रदायवाद हावी हो रहा है, जो राष्ट्र के लिए घातक है। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत के रूप में असाम्प्रदायिक धर्म चलाकर एक मिसाल प्रस्तुत थी। अणुव्रत के सिद्धांत अपनाकर भारत पुनः विश्वगुरु बन सकता है।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर

उदयपुर 3 फरवरी। अणुव्रत समिति उदयपुर, तुलसी साधना शिखर, जिला राजसमंद एवं भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, उदयपुर, मेवाड़ तेरापंथ कान्फ्रेंस लावासरदारगढ़ एवं जिला प्रशासन सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग राजसमंद के संयुक्त तत्वावधान में निशक्तजन विशाल निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया।

समिति के कार्यकारी महामंत्री राजेन्द्र सेन ने बताया कि आचार्यश्री तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित इस शिविर में महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय उदयपुर के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. डी.पी. सिंह, डॉ. अरुण गुप्ता, डॉ. आसीत मितल, डॉ. लाखन पोसवाल, डॉ. अनुराग तलेसरा, डॉ. राजेश राठौड़ आदि विशेषज्ञों से आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के विभिन्न बीमारियों से ग्रसित 1013 पुरुषों, महिलाओं व बच्चों ने चिकित्सा लाभ उठाया।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर में डॉ. सुखलाल वागरेचा, डॉ. नरेन्द्र पालीवाल, डॉ. कैलाश मीणा, डॉ. योगेन्द्र वर्मा, डॉ. प्रेरणा, डॉ. आसिफ हुसैन ने भी चिकित्सा सेवाएं दीं।

समारोह में अतिथि एस.डी.ओ आमेट, तरुण सुराणा, सीएमएचओ, डॉ. तरुण चौधरी तहसीलदार रामकिशोर वर्मा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष गणेश डागलिया, उपाध्यक्ष सवाईलाल पोखरना, महामंत्री अरुण कोठारी, का. महामंत्री राजेन्द्र सेन, भंवरलाल वागरेचा, समाज कल्याण अधिकारी हेमंत कुमार खटीक, सरपंच नारायण लाल, अशोक राठौड़, पूर्व न्यायाधीश बसन्तीलाल बाबेल, समाजसेवी डॉ. बंशीलाल मेवाड़ा, राजकुमार दक, वर्धमान मेहता आदि उपस्थित थे।

विकलांग सहायता शिविर में 12 ट्राईसाईकिलें, 24 बैसाखियां, कृत्रिम पैर आदि प्रदान किये गये। वहीं विकलांग प्रमाण पत्र बनाये गये तथा पेंशन के फार्म भरवाये गये। शिविर को सफल बनाने में डॉ. शंकरलाल इन्टोदिया, अर्जुन सोनी, जमनालाल दशोरा, जयकिशन चौबे, राकेश चित्तौड़ा आदि ने अपनी सेवाएं दीं।

भाषण-प्रतियोगिता

गुवाहाटी 4 मार्च। अणुव्रत समिति गुवाहाटी द्वारा अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय था - **वर्तमान परिदृश्य में अणुव्रत।**

कार्यक्रम का शुभारंभ अर्हम् भजन मंडली द्वारा अणुव्रत गीत से किया गया। अध्यक्ष सुबोध कोठारी ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया। भाषण प्रतियोगिता में कुल 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें ज्ञानशाला के बच्चे, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल एवं समाज के अन्य लोग सम्मिलित थे। भाषण प्रतियोगिता के निर्णायक निर्मल कोटेचा एवं मंजू मेहता के निर्णयानुसार प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर क्रमशः मनोज नाहटा, पापोरी मेहता, संध्या कोठारी का चयन हुआ। अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष निर्मल शामसुखा ने जानकारी दी कि अणुव्रत के प्रचार-प्रसार हेतु अणुव्रत आचार-संहिता के 10 बोर्ड शहर के विभिन्न स्थानों पर लगवाए गए हैं।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली से पधारीं डॉ. कुसुम लुणिया ने प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में समिति के सभी सदस्यों का पूरा सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री नवरतनमल गधैया एवं कोषाध्यक्ष प्रकाश बरड़िया ने किया।

अणुव्रत श्रेष्ठता का आन्दोलन

लाडनूं 3 मार्च। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी के अन्तर्गत चल रहे लाडनूं तहसील ''नशामुक्ति अभियान'' के अंतर्गत स्थानीय सुभाष बोस उ.मा. विद्यालय में अणुव्रत आंदोलन का स्थापना दिवस समारोह मनाया गया। अणुव्रत समिति के महामंत्री आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने मूल्यों की स्थापना के लिए अणुव्रत आंदोलन का उद्भव कर मानव जाति को नैतिक-सोपान दिया है। अनुशासन को जीवन का प्राण तत्व बताते हुए डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि बिना अनुशासन को धारण किये व्यक्ति के जीवन का निर्माण अधूरा ही प्रतीत होता है। समाज, राष्ट्र एवं स्वयं के जीवन के लिए अनुशासन धारण करना बहुत जरूरी है। अनुशासन सत्य की शोध है। अनुशासन से ही जीवन के प्रत्येक पक्ष का संतुलित विकास संभव है। मुख्यवक्ता साहित्यकार डॉ वीरेन्द्र भाटी मंगल ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन व्यक्ति में नैतिक अनुशासन लागू करने का आंदोलन है। इस अवसर पर विद्यार्थियों को अणुव्रत आचार संहिता का संकल्प दिलाया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अब्दुल हमीद मोयल एवं शिवशंकर बोहरा ने भी अपने विचार रखे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षाविद् भंवरलाल मील ने तथा कार्यक्रम का संयोजन दिगेश्वर मालावत ने किया। आभार ज्ञापन रामगोपाल चौधरी ने किया।

गणतंत्र दिवस पर साम्प्रदायिक सौहार्द कार्यक्रम

जयपुर 19 फरवरी। पिंक सिटी प्रेस क्लब, जयपुर में गणतंत्र दिवस पर अणुव्रत समिति, जयपुर व गाँधी दर्शन समिति के संयुक्त तत्वाधान में 'संकल्प दिवस' का आयोजन किया गया जिसमें अनेक विशिष्ट व्यक्तियों के विचारों, देशभक्ति गीत व कविताओं के आयोजन के साथ ही शहर के सामाजिक क्षेत्र से जुड़े हुए समाजसेवियों व कार्यकर्ताओं का प्रशस्ति-पत्र भेंट कर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि साम्प्रदायिक सौहार्द समन्वयक डॉ. सुरेश खैरनार थे। इस अवसर पर अणुव्रत समिति, जयपुर अध्यक्ष अजय नागौरी, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख सत्यव्रत सामवेदी, गांधीवादी सवाईसिंह, साहित्यकार नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', राजस्थान विश्वविद्यालय छात्रसंघ के पूर्व अध्यक्ष नगेन्द्र शेखावत, मसीही संस्थान के अध्यक्ष फादर विजय पॉल एवं अनेक विशिष्ट लोगों ने अपने विचार व्यक्त कर जन समुदाय, विशेषकर युवा पीढ़ी को व्यक्तिगत शुचिता आधारित राष्ट्र कल्याण का संदेश दिया।

डॉ. सुरेश खैरनार ने सभी आगंतुकों को सदैव ईमानदार एवं सेवाभावी राजनेताओं का समर्थन व सहयोग करने और भ्रष्ट, बेईमान व आपराधिक छवि वाले राजनेताओं का बहिष्कार करने हेतु संकल्प दिलाया।

स्कूल में अणुव्रत व्याख्यान-माला

जयपुर 20.2.14। अणुव्रत समिति, जयपुर द्वारा आचार्य तुलसी जन्म-शताब्दी वर्ष पर आयोजित 'स्कूलों में व्याख्यान माला कार्यक्रम' के अंतर्गत प्रेम निकेतन विद्यालय में अणुव्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। स्कूल के विशाल प्रांगण में स्कूली छात्राओं एवं अध्यापक-अध्यापिकाओं के बीच अणुव्रत गीत से प्रारम्भ हुए इस कार्यक्रम में अणुव्रत आचार सहिंता व विद्यार्थी अणुव्रत के नियमों के बारे में बताया गया। अणुव्रत समिति, जयपुर की परामर्शक आशा नीलू टाक ने बताया कि प्रेम निकेतन निद्यालय एक ऐसा विद्यालय है जहाँ प्रतिदिन प्रार्थना में अणुव्रत के ग्यारह नियमों का सामूहिक संकल्प करवाया जाता है। स्कूली छात्राओं के मध्य अणुव्रत प्रवक्ता जी.एल. नाहर ने अणुव्रत के विषय में बताया कि अणुव्रत से जीवन में व्रत की चेतना जाग्रत होती है, जिससे हमारी संकल्प-शक्ति बढ़ती है।

अणुव्रत समिति, जयुपर अध्यक्ष अजय नागौरी ने कहा—अणुव्रत हर प्राणी के लिए प्राण तत्व के समान है। अणुव्रत हमें संयममय जीवन जीने की प्रेरणा देता है। छात्र-छात्राओं के मध्य पर्यावरण संरक्षण पर चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित हुई जिसमें तीन ग्रुप बनाये गये। प्रत्येक ग्रुप के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय विजेता को विशेष पुरस्कार व अन्य सभी को सांत्वना पुरस्कार कार्यक्रम की मुख्य अतिथि, श्रीमती विमला दुगड़ द्वारा वितरित किये गये।

अणुव्रत समिति द्वारा जनसेवा कार्य

जयपुर 20.2.14। 'जन सेवा कार्यक्रमों के अंतर्गत' प्रेम निकेतन हॉस्पिटल, दुर्गापुरा (जयपुर) में मरीजों के बैठने के लिये 80,000 रुपये मूल्य की 24 स्टील चैयर्स लगवायी गयी। समिति जयपुर की पूर्व अध्यक्षा आशा नीलू टाक के अर्थ सहयोग से कुर्सियाँ हॉस्पिटल की निर्देशिका चंद्रबाला परनामी की उपस्थिति में हॉस्पिटल को समर्पित की गयीं। श्रीमती परनामी ने अणुव्रत समिति, जयपुर का आभार ज्ञापित किया तथा कहा कि समाज में जब कोई महानुभाव विसर्जन करता है तभी सामाजिक संस्थाओं का काम चल पाता है।

अणुव्रत विश्व भारती की अनूठी पहल 'वयम्'

बालकों के अन्तस् में झांककर उनकी रचनात्मक खूबियों को नितान्त सहज सरल माध्यमों से व्यक्त करने और इस हेतु शिक्षा को उसकी मूल आवधारणा—भावात्मक विकास से जोड़ने सहित शिक्षा व सम्बद्ध सामाजिक, सांस्कृतिक प्रश्नों पर सार्थक चर्चा, विमर्श क्रियान्वयन व फीडबेक ले, समाज की सार्थक प्रगति में प्रभावी उत्प्रेरक बनने की दिशा में विश्व शान्ति निलयम् (अणुव्रत विश्व भारती) की अनूठी पहल 'वयम्' की प्रथम संगोष्ठी राजसमंद नगर के सामयिक दृष्टिसम्पन्न शिक्षा व समाजसेवियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई।

'वयम्' शैक्षिक मंच के संयोजक डॉ. राकेश तैलंग ने बताया कि अणुविभा के संचालक श्री संचय जैन की अध्यक्षता एवं डॉ. विजय खिलनानी, भंवरलाल वागरेचा, चतुर कोठारी, फतहलाल गुर्जर 'अनोखा', दुर्गाशंकर मधु, डॉ. हरिलाल श्रीमाली, दिनेश श्रीमाली, श्रीमती पुष्पा कर्णावट, श्रीमती लाड़ मेहता, गणेश कच्छारा, भगवानलाल बंशीवाल की सन्निधि में आयोजित इस उपनिषद् संगोष्ठी में 'वयम्' में चर्चा व क्रियान्विति के बहुपक्षीय विषय क्षेत्रों को चिन्हित किय गया एवं क्रमबद्ध चिंतन के लिए भविष्य में लिए जाने हेतु निर्णय लिया गया।

उल्लेखनीय है कि भील बस्ती अमलोई में किए जा रहे इस सार्थक प्रयास की व्याख्याकार व समीक्षक बी.एन. गर्ल्स कॉलेज की प्रबुद्ध प्रवक्ता सुश्री विनीता पालीवाल रहीं। 'वयम्' संगोष्ठी में ग्राहम पीबल्स की बालोदय की संकल्पना को इन्होंने अणुविभा के संवेदना शिल्पी मोहनभाई के बाल कल्याण के प्रयासों के संदर्भ प्रस्तुत किया। अणुव्रत विश्व भारती के बालोदय प्रकल्प से सम्बद्ध श्री देवेन्द्र आचार्य ने आभार व्यक्त किया।

मर्यादा-अनुशासन ही हमको बचाने वाले हैं।

सांताक्रूज (मुंबई)। आचार्य श्री महाश्रमण के आज्ञानुवर्ती शतावधानी मुनि संजय कुमार ने मुम्बई स्तरीय मर्यादा महोत्सव एवं तुलसी-शताब्दी-समारोह के संयुक्त आयोजन में समागत हजारों की जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा—तेरापंथ धर्म संघ की जो महिमा नजर आती है, इसका श्रेय आचार्य श्री भिक्षु को जाता है। सही सिद्धान्त और मर्यादा के प्रताप से आज संघ फल-फूल रहा है। मर्यादा-अनुशासन हमारे जीवन की तिजोरी है जो हमारे मौलिक गुणों का विकास करता है। मर्यादा-अनुशासन एवं जीवन-मृत्यु ही हमको बचाने वाले हैं। आचार्य तुलसी ने समाज सुधार, व्यक्ति सुधार, राष्ट्र-सुधार में जीवन खपाया है। जो-जो बातें गुरुदेव ने कहीं आज हम उसका अनुभव कर रहे हैं।

आज के कार्यक्रम का आकर्षण सम्पूर्ण मुम्बई से समागत महिला-मण्डलों व युवक-परिषदों के आस्थांजली गीतों की प्रभावी प्रस्तुति रही। सांताक्रुज सभा, युवक परिषद अध्यक्ष द्वारा स्वागत व पूर्व अध्यक्ष अर्जुन जी बाफना, राजकुमार जी चपलोत, रथयात्रा प्रभारी रमेश जी सुतरिया, 'अरुण जी हिरण, तेयुप की पूरी टीम का पूर्ण सहयोग रहा। केशुलाल जी धाकड़ व आ. महाप्रज्ञ वेलफेयर के अर्जुन जी लोढ़ा, प्रकाश जी गन्ना आदि पांचों ट्रस्टीगण का प्रायोजन में सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन मुनि प्रकाश कुमार ने किया।

तुलसी जन्म-शताब्दी पर विविध कार्यक्रम

सिकन्दराबादः गुरुदेव तुलसी जन्म-शताब्दी—द्वितीय चरण के उपलक्ष में साध्वी श्री संगीतश्री के सान्निध्य में यहां अनेक कार्यक्रम आयोजित हुएः

- एस.एस. जैन हाई स्कूल-ताड़बन्ध में 'अणुव्रत और भावात्मक विकास' विषय पर संगोष्ठी हुयी। स्थानीय सभाध्यक्ष राजकुमार सुरणा ने महासभा से प्राप्त अणुव्रत-आचार-संहिता के बोर्ड स्कूल में लगाने हेतु प्रदान किये। अणुव्रत परीक्षाओं में उत्तीर्ण प्रथम-द्वितीय छात्रों को हनुमान जिनेन्द्र बैद द्वारा पुरस्कृत किया गया।
- डी.वी. कॉलेज कॉलोनी में विकलांगों को कृत्रिम पैर लगवाए गये।
- 7 फरवरी मारेडपल्ली गर्वनमेंट गर्ल्स स्कूल में छात्राओं को अणुव्रत नियम बताए, नशा-मुक्ति, आत्म-हत्या, भ्रूण-हत्या नहीं करने के संकल्प कराये।
- 3 फरवरी : डी.वी. कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में बैद परिवार की ओर से विकलांगों के पैर लगवाए गये। विकलांग भाइयों को नशा-मुक्त रहने, प्रलोभन से वोट नहीं देने, साम्प्रदायिक सौहार्द रखने आदि के संकल्प कराये। महिला मण्डल का पूरा सहयोग रहा।
- 13 फरवरीः गवर्नमेंट कॉलेज, एस.पी. रोड, सिकन्दराबाद में अणुव्रत के नियमों पर चर्चा की गयी, प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराये तथा आचार-संहिता के तेलुगु में अनूदित फोल्डर, पुस्तकें, गुरुदेव की जीवनी आदि प्रिंसिपल जी. माणिक्य शास्त्री को भेंट की गयीं।
- 8 मार्च : सिकन्दराबाद कोर्ट की महिला बार एसोसिएशन में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला सशक्तीकरण पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। महिलाओं में सुसंस्कार, पारिवारिक सुख, क्रोध, नशा, भ्रूण हत्या आदि नहीं करने के संकल्प आदि पर चर्चा हुयी। प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराये गये। एसोसिएशन की पदाधिकारियों ने अणुव्रत में रुचि दिखायी तथा पुनःपुनः कार्यक्रम करने की मांग की।

सभी कार्यक्रमों का संयोजन स्थानीय अणुव्रत समिति की मंत्री श्रीमती निर्मला बैद की प्रेरणा व प्रयत्न से सम्पन्न हुए। श्री हनुमानमल बैद व उनके परिवार ने आयोजन, साहित्य वितरण व अन्य कार्यों में सक्रिय सहभागिता की।

मारेडपल्ली स्थित गवर्नमेन्ट गर्ल्स हाईस्कूल में ध्यान के प्रयोग

v.kqozr if=dk ;kx{kseh ;kstuk

idk'ku ,o iz lkj vfHk;ku dks rhoz xfr iznku djus gsrq fo'ks"k ;kstuk ikjaHk dh x;h gSA blds vraxZr ,dek'r jkf'k 5100 #- ndj lnL; cuus okys dks v.kqozr if=dk vkxkeh 15 o"kksZa rd fujarj Hkstk tk;sxkA blds vykok v.kqozr if=dk esa lnL; dk uke ,oa irk QksVks lfgr izdkf'kr fd;k tk;sxkA jkf'k v.kqozr egklfefr ubZ fnYyh ds uke ls Hkstk tkok; vFkok dujk cSad dh LFkkuh; 'kk[kk esa v.kqozr egklfefr ds [kkrk la- 0158101010750 esa tek djokdj fyf[kr lwpuk Hkstk tko,A

gekjs u;s if=dk ;kx{kse& lg;ksxh

uja'k dqekj Hkjey tSu
3@305] xxk lkxj fcfYMax mej [kkMh] Mxjh] eqEcbZ&400009
eks- 9892523369

fnus'k dqekj f[kekor
86@Mh] ikjl fcfYMax] rhljk ekyk] Cykd u0 15] cksy okMh] phpikdyh] eqEcbZ&400012 eks- 9820373294

nojkt ikj[k
e0 lnx# vkblØhe
1] xkxjh fuokl] Mk- vEcsMdj jksM] nknj fgUnekrk] eqEcbZ&400014

dq'kjhey exuyky tSu
240] ch-Mh- pkyh ndku u0 2] ,l-,e-ekxZ] rdh;k okMZ] dyk ¼oLV½] eqEcbZ&400070
Qksu 022&26501085

/kepUn eksMhyky dksBkjh
240@3] ch-Mh- fcfYMax] ,l-,e- ekxZ] rdh;k okMZ] dyk ¼oLV½] eqEcbZ&400070
eks- 9702785700

nojkt ,e- yks<k
eyjkt Hkou] f}rh; ekyk] :e u0 36] f'koMh ukdk] eqEcbZ&400015
eks- 9987407702

iUukyky dksfVQksMk
176] Tojh cktkj f}rh; ekyk] 'k[k eeu LVhV] cd vkQ bf.M;k ds lkeus] eqEcbZ&400002
eks- 9820046782

Ranjeetmal Akshay Chhallani
M/s. J. Ranjeet Jewellers
64, M.S.C Bose Road, 1st Floor,
Sowcarpet, Chennai-700079 (T.N.)
Ph.: 044-25356516

Suraj Kumar Dhoka (C.A.)
3/1A, Babu Medali Street,
North T. Nagar, Chennai-600047 (T.N.)
M: 9381001574

Babulal Anand Kumar Marlecha
47, Bazar Road, Pallavaram,
Chennai-600043 (T.N.)

Mukesh Arvind Munoth
M/s. Paras Pawan Jewellers
29, Annai Sivakami Nagar
Enhore, Chennai-600057 (T.N.)
M: 9840244468

Sampathmal Bothra
M/s. Shri Maruti Industries
Subha Complex, 54 A.P. Road,
Choolai, Chennai (T.N.)
M: 9840055116

gekj u; if=dk ;kx{ke& lg;kxh

Ganpatraj Babel
M/s. Sonal Jewellers
165, Mint Street, Opp. Dena Bank,
Chennai-600079 (T.N.) Ph.: 044-25366750

Khayli Lal Kothari
M/s. Ranka Jewellers
5, Ajgar Manjil, G.K. Road,
Parel, Bhoiwada, Mumbai-400012

Shantilal Baid
c/o Champalal Shantilal Baid
Near Jain Jawahar Vidyapith
Main Road, Bhinasar,
Bikaner (Raj.) M: 09413388811

Rajesh Gadiya
M/s. Chetan Sarees
9/10, China Naicken Street, Sowcarpet,
Chennai-600079 M: 9381037394

Shri Mulchand Maloo
12, Pusa Road, Near Metro Pillar No. 88,
New Delhi-110005
¼ij.kk lkr % uFkey lfB;k vgenkckn½

Shri Kishan Mehta (C.A.)
6, Premchand House, 6th Floor
Near Popular House , Asharam Road,
Ahemdabad
¼ij.kk lkr % uFkey lfB;k vgenkckn½

अणुव्रत महासमिति

अणुव्रत महासमिति द्वारा पर्यावरण शुद्धि अभियान में सहभागिता की दृष्टि से राष्ट्रीय स्तर की निबन्ध प्रतियोगिता निम्नानुसार आयोज्य है। इस प्रतियोगिता में आप सभी अधिकाधिक निबन्ध निचे लिखें पते पर हिन्दी/अंग्रेजी भाषा में टाईप/हस्तलिखित/ईमेल कर सकते हैं। प्रतियोगिता दो वर्गो में आयोजित होगी।

1.	विद्यार्थी वर्ग (आयु सीमा 25 वर्ष)	शब्द सीमा :	500 शब्द
2.	25 वर्ष से ऊपर आयु	शब्द सीमा :	1000 शब्द

विषय : ''पर्यावरण शुद्धि में जैन धर्म का योगदान''

दोनों वर्गो में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को उपहार स्वरूप 2 वर्ष तक ''अणुव्रत पत्रिका'' प्रेषित की जाएगी एवं उन निबन्धों को ''अणुव्रत पत्रिका'' में प्रकाशित किया जाएगा।

डालचंद कोठारी
अध्यक्ष

मर्यादा कुमार कोठारी
महामंत्री

सुबोध कुमार दुगड़
पर्यावरण शुद्धि अभियान प्रभारी

उक्त विषय पर निबन्ध 31 मई 2014 तक निम्नलिखित पते पर भिजवायें :-

सुबोध दुगड़ मैसर्स जयश्री मार्बल्स 16, अहिंसापुरी, फतहपुरा, उदयपुर - 313004
मो.: 09414263586, ईमेल : subodhduagar@gmail.com

अणुव्रत को व्यापक बनाने का उपयुक्त अवसर

मैं अपने मन की खुशी आपके साथ बांटना चाहता हूँ। 23 फरवरी को दिल्ली में आयोजित महासमिति की कार्यकारिणी मीटिंग में जो उत्साहवर्धक उपस्थिति और सदस्यगण की प्रेरक सक्रियता मैंने देखी, उसको निःसंकोच अणुव्रत अभियान के लिए शुभसंकेत माना जा सकता है। भारतभर से ही नहीं, पड़ोसी देश नेपाल के साथियों ने भी इसमें सौल्लास भाग लिया। दोपहर 2.30 से 6 बजे सायं तक चले चर्चा-वार्ता, निर्णय-निष्पत्ति के दौर एक सामूहिक इच्छाशक्ति के रूप में उभर कर सामने आये, यह सचमुच हम सबके लिए हर्ष का विषय है।

तुलसी जन्म-शताब्दी वर्ष की महत्त्वाकांक्षी कार्ययोजना की क्रियान्विति, अणुव्रत कार्यशालाओं के देशभर में आयोजन, अणुव्रत (मासिक पत्र) की प्रसार संख्या में अभिवृद्धि, अहिंसा समवाय, अणुव्रत लेखक मंच, साहित्य प्रकाशन, संगठन यात्राएं, 65वाँ वार्षिक अधिवेशन तथा वर्तमान आर्थिक आकलन एवं भावी आर्थिक सुदृढ़ता पर भी गहराई से विचार-विमर्श हुआ। कार्ययोजना के अन्तर्गत वर्गीय अणुव्रत संगोष्ठियाँ की रूपरेखा बनाने के लिए श्री अजय नागौरी- जयपुर (उद्योगपति-व्यापारी), श्री जंवरीलाल सकलेचा- अहमदाबाद (शिक्षक-विद्यार्थी), श्री गणपत डागलिया- मुम्बई (राज्यसेवी), श्री प्रकाश लोढ़ा- बैंगलोर (कृषक) तथा श्री सुरेन्द्र जैन- भिवानी (प्रोफेशनल्स) को प्रभारी मनोनीत किया गया।

साथ ही अणुव्रत लेखक सम्मेलन एवं अणुव्रत पुरस्कार, चुनावशुद्धि, पर्यावरण शुद्धि, नशामुक्ति चेतना आदि अभियानों पर विस्तृत चर्चा कर समुचित निर्णय लिये गये। आर्थिक सुदृढ़ता की दृष्टि से अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना एवं अणुव्रत पत्रिका योगक्षेमी योजना की गति को बढ़ाने के साथ-साथ 'अणुव्रत संपोषक' नाम से नयी योजना का शुभारम्भ किया गया, जिसके अन्तर्गत पाँच-पाँच लाख रुपयों का योगदान करने वाले एक सौ महानुभावों को जोड़कर एक स्थायी कोष बनाया जायेगा। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि चर्चा के दौरान ही योजना में आठ संपोषक जुड़ गये। ये हैं- डालचन्द आर. कोठारी (मुम्बई), श्री मक्खनलालजी (सिरसा), श्री प्रतापजी दुगड़ (कोलकाता), श्री धनराज जी बैद (दिल्ली), श्री नानकराम जी तरनेजा (धूलिया), श्री महेन्द्रजी मरलेचा (ओरंगाबाद), श्री सम्पतजी नाहटा (दिल्ली) तथा श्री मर्यादा कुमार कोठारी (जोधपुर)। सभी बधाई के पात्र हैं।

लोकसभा के चुनावों का बिगुल बज चुका है। आज देश को एक सघन चुनाव-शुद्धि अभियान की दरकार है। अणुव्रत समितियों, अणुव्रत-कार्यकर्ताओं और समर्थकों से मेरा निवेदन है वे पूरी तत्परता के साथ चुनाव-शुद्धि अभियान में जुट जाएं। अभियान के प्रभारी श्री राजेश सुराणा (सूरत) द्वारा प्रस्तुत कार्ययोजना पर अविलम्ब कार्य प्रारम्भ कर दें। हमें विश्वास होना चाहिए कि अगर चुनावों में अणुव्रत आचार संहिता का पालन होगा तो चुनाव अवश्य शुद्ध होंगे। मतदाता बहकावे में नहीं आयेगा, अच्छे और चरित्रवान प्रत्याशी को चुनेगा। हमारा लोकतन्त्र सुदृढ़ बनेगा तो देश उन्नत बनेगा। वर्तमान संदर्भ में अणुव्रत की उपयोगिता पर हमें गर्व होना चाहिए।

अणुव्रत अनुशास्ता पूज्य आचार्य प्रवर का कथन है—जनता प्रशिक्षित हो, शिक्षित हो और यदि अणुव्रत की भावना को समझकर वोट देती है तो अच्छी सरकार बनने की सम्भावना बनती है।..... अणुव्रत के प्रति जन-जन में विश्वास होगा तो राष्ट्र का विकास अवश्य होगा। जरूरत है, अणुव्रत की व्यापकता बढ़े।

मैंने बिन्दुरूप में महासमिति की भावी दिशा पर प्रकाश डालते हुए आशा प्रकट की है कि आपके सहयोग से अणुव्रत अभियान को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ने का मार्ग तैयार हो गया है। हमारे कर्मठ महामंत्री श्री मर्यादा कुमार कोठारी की सूझबूझ एवं प्रभावी संगठन व आयोजन क्षमता पर मुझे पूरा भरोसा है, साथ ही जो उत्साह और उल्लास मैंने अपने साथियों में देखा है वह भी अद्भुत है। मुझे पक्का विश्वास है, इस वर्ष में हम निश्चय ही कुछ विशेष कर पायेंगे।

कहने की आवश्यकता नहीं कि तत्काल हमें चुनाव-शुद्धि अभियान में जुट जाना है। आपके अनुभव हमें अवश्य लिखें।

जय अणुव्रत!

—डालचन्द कोठारी

RNI No. 7013/57
April 2014

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2012-14
Licence No. U(C)-215/2012-14
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25th Every Month
Date of Posting 28-29

:: अणुव्रत आचार संहिता ::

1. मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा।
   * आत्म-हत्या नहीं करूँगा।
   * भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।
2. मैं आक्रमण नहीं करूँगा।
   * आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा।
   * विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
3. मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
4. मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा।
   * जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को उच्च-निम्न नहीं मानूँगा।
   * अस्पृश्य नहीं मानूँगा।
5. मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा।
   * साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।
6. मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा।
   * अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुंचाऊँगा।
   * छलपूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।
7. मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
8. मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
9. मैं सामाजिक कुरुढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
10. मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा।
    * मादक तथा नशीले पदार्थों-शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि तथा मांस, अण्डा, मछली आदि मांसाहार का सेवन नहीं करूँगा।
11. मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।
    * हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा।
    * पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

अणुव्रत महासमिति की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक - **बाबूलाल गोलछा** द्वारा न्यू एज कम्यूनिकेशन्स प्रा.लि., बी-147, डी.डी.ए. शेड, ओखला, फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **महेन्द्र जैन**।